सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 232, नई दिल्ली, गुरुवार 30 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 पार्यावरण पाठशाला : नंगे पांव घास पर चलने के फायदे

06 स्मार्ट क्लासरूम में क्या खोया गया है

08 राजगांगपुर नगरपालिका में सफाई कार्यों में भ्रष्टाचार, ठेका कंपनी पर मजदूर शोषण के आरोप

आज की तारीख़ में दिल्ली का सबसे जाम वाला चौक फिर भी प्रवर्तन शाखा (दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस) की मेहरबानी बरकरार

संजय बाटला

नई दिल्ली। पीरागढ़ी चौक जो आज जाम के लिए विश्व प्रसिद्ध हो रहा हैं, इस से होकर बहादुरगढ़ की तरफ, पंजाबी बाग की तरफ, रोहिणी की तरफ या जनकपुरी की तरफ जाना हो तो कभी कभी तो 2 घंटे भी इस चौक की लाइट को पार करने में लग जाते है। ऐसे में आगे के सफर में कितना समय, कितना पेट्रोलियम पदार्थ बर्बाद होता हैं आप जो यहां से पिछले कुछ महीनों में निकले होगे वह जानते ही होगे और जो नहीं निकले वह अंदाजा लगा सकते हैं।

जब से मेट्रो का काम आउटर रिंग रोड पर शुरू हुआ है तब से यही हाल चल रहा है। इतना सब होने के बावजूद इस चौराहे पर चारों तरफ प्रवर्तन शाखा की खुली मेहरबानी की बदौलत अनगिनत ई रिक्शा, अनाधिकृत वाहन, आटो वाले सड़क को अपनी इकलौती जायदाद समझ कर बेखौफ खड़े रहते हैं।

माननीय उपराज्यपाल और उच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार इस सड़क पर इन ई रिक्शा वालो को चलने की अनुमति ही नहीं है और अनाधिकृत वाहनों को तो किसी भी कानून में सार्वजनिक सवारी उठाने का प्रावधान नहीं है और आटो का भी कोई स्टैंड या उपलब्ध नहीं हैं फिर भी इन्हीं की दादागिरी और तानशाही खुली पूरा दिन आप चौराहे पर चारों दिशाओं में सभी देख रहे है बस नहीं कोई देख रहा है तो वह है दिल्ली प्रवर्तन शाखा जिनका काम है सड़क को वाहनों और जनता को सुरक्षित और सुखद बनवाना।

दिल्ली के उपराज्यपाल और दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को दरकिनार कर इस चौराहे पर जाम लगने के बाद भी समर्थन देने का अर्थ तो शायद समझाने की आवश्यकता है ही नहीं।

आप सभी को सच से अवगत कराने की लिए कुछ फोटोग्राफ प्रस्तुत

मथुरा की ट्रांसपोर्ट नगर की सड़कें जर्जर होने के कारण हो रही हैं दुर्घटनाएं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। ब्रज यातायात एवं पर्यावरण समिति रजि उत्तर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने मुख्यमंत्री से शिकायत की है कि सालों से मथुरा के ट्रांसपोर्ट नगर की सड़कों की जर्जर स्थिति होने के कारण यहां पर अनेक प्रकार की सड़क दुर्घटना हो चुकी है साथ ही बरसात के दिनों में जगह-जगह पानी भरने के कारण सड़कों में गड्ढे हो चुके हैं जिससे आए दिन वाहन पलट जाते हैं या फस जाते हैं अभी तक काफी लोग चोटीले हो चुके हैं लेकिन इसके बावजूद जिला प्रशासन को शिकायतें भेजने के बाद भी जिला प्रशासन ने आज तक इस और ध्यान नहीं दिया है जबकि यह सड़क बहुत ही महत्वपूर्ण है नेशनल हाईवे नंबर 19 से ट्रांसपोर्ट नगर होते हुए सौंख रोड मथुरा में मिलती है साथ ही जाम से बचने के लिए इस रोड का लोग प्रयोग करते हैं लेकिन जर्जर स्थिति होने के कारण इस रोड की उपयोगिता बिल्कुल ना के बराबर रह गई है अगर यह रोड ठीक रहेगी तो जाम की समस्या से भी लोगों को निजात मिलेगी और स्थानीय निवासियों को भी इसका लाभ मिलेगा । इसलिए इस सड़क निर्माण बहुत जरूरी है।

एनडीएमसी ने दिल्ली की 102 पार्किंग का शुल्क किया दोगुना, एनसीआर में ग्रैप-2 लागू होने के चलते लिया गया फैसला

दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण एनडीएमसी ने पार्किंग शुल्क दोगुना कर दिया है। कनाट प्लेस जैसे इलाकों में कारों के लिए 40 रुपये प्रति घंटा और दोपहिया वाहनों के लिए 20 रुपये प्रति घंटा शुल्क लगेगा। यह नियम 29 अक्टूबर से लागू है और ग्रैप के दूसरे चरण तक जारी रहेगा। इस फैसले का दुकानदारों ने विरोध किया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति लगातार चिंताजनक बनी हुई है। इसकी मार अब NDMC क्षेत्र में वाहन मालिकों को दोगुने पार्किंग चार्ज के रूप में चुकानी होगी। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के आदेशानुसार एनडीएमसी ने भूतल और बहुमंजिला पार्किंग स्थलों पर पार्किंग शुल्क को दोगुना कर दिया है। यह कदम ग्रेडेड रेस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) के दूसरे चरण के लागू होने पर उठाया गया है। एनडीएमसी द्वारा जारी सार्वजनिक सूचना के अनुसार, संशोधित पार्किंग दरें 29 अक्टूबर से प्रभावी हो गई हैं। परिषद ने स्पष्ट किया है कि यह बढ़ी हुई दरें तब तक लागू रहेंगी जब तक ग्रैप के दूसरे चरण को वापस नहीं लिया जाता। नई दरों के अनुसार, कनॉट प्लेस जैसे प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में चार पहिया वाहनों के लिए भूतल पार्किंग शुल्क 20 रुपये प्रति घंटे से बढ़ाकर 40 रुपये प्रति घंटे कर दिया गया है। दोपहिया वाहनों के लिए शुल्क 10 रुपये से बढ़ाकर 20 रुपये प्रति घंटे और बसों के पार्किंग शुल्क 150 रुपये से बढ़ाकर 200 रुपये प्रति घंटे कर दिए गए हैं। वहीं, भूमिगत पार्किंग स्थलों पर भी शुल्क में वृद्धि की गई है। दोपहिया वाहनों के लिए शुल्क अब पांच रुपये की जगह 10 रुपये प्रति घंटे और चार पहिया वाहनों के लिए 10 रुपये की जगह 20 रुपये प्रति घंटे निर्धारित किया गया है। अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया है कि सड़क पर पार्किंग स्थलों और मासिक पास की दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। क्योंकि, इन जगहों पर पहले से ही शुल्क अधिक हैं, इसमें बंगाली मार्केट और पंडारा रोड मार्केट जैसे स्थान हैं, जहां पार्किंग शुल्क 50 रुपये प्रति घंटे है।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

Nova Lifestyles — Divine Wall Hanging Collection
Luxury Décor with a Touch of Divinity
Presented by Velvet Nova

Shiva Mahamrityunjaya
Premium Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
Material: MDF
Finish: High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Shiv 12 jyotirlinga Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte Vinyl
Size: Custom Available
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
॥ श्री ॥ शिवाय नमस्तुभ्यं

Jai Shri Ram
Exquisite Wall Hanging for Spiritual Elegance in Your Space
Material: MDF
Finish: Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
जय श्री राम

Shree Krishna Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte Vinyl
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."

Radhe Shyam Wall Hanging
Premium spiritual décor for your home and sacred spaces
Material: MDF
Finish: Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
हरे कृष्णा हरे कृष्णा
कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे

Lord Hanuman Wall Hanging
Discover our sacred décor embodying strength, faith, and devotion, perfect for enriching your spiritual space.
Material: MDF
Finish: Sparkling Vinyl Matte
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
संकट कटे मिटे सब पीरा
जो सुमिराई हनुमत बलबीरा

Goddess Durga Wall Hanging
Explore our luxurious Goddess Durga décor pieces that embody strength and spiritual elegance for your space.
Material: MDF
Finish: High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
सर्वमंगल मांगल्ये
शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी
नारायणी नमोस्तुते।।

Evil Eye Protection Décor
Embrace positivity and ward off negativity with our exquisite Evil Eye wall décor collection.
Material: MDF
Finish: Sparkling Matte or High Gloss
Ideal For: Home, Office, Temple Décor
Tagline: "Bring Divine Energy into Every Space."
EE12
THIS IS OUR HAPPY PLACE
THANKFUL GRATEFUL BLESSED

Collection Grid
Spiritual Designs for Every Space
Nova Lifestyles — A VELVET NOVA Brand dedicated to spiritual and luxury décor

Contact & Custom Order Booking
Let's create something divine together
Contact Details
Phone: +91-8076435376
WhatsApp Orders: +91-9717122095
Custom Design Orders
Minimum Order Quantity (MOQ): 10 Pieces per Design
Customization Options: Size, Finish, Material & Packaging
Delivery: PAN India & Export Available
Bulk Discounts for Dealers & Retailers.

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

बाल्यावस्था में लिवर ट्रांसप्लांट – छोटा मरीज, बड़ी चुनौती

साहिल बेरी

अमृतसर: भारत में लिवर ट्रांसप्लांटेशन अब किसी दुर्लभ प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह हर साल अनेक बच्चों के लिए जीवन बचाने वाली हकीकत बन गया है। आज देश विश्व के उन शीर्ष देशों में शामिल है जहां सबसे अधिक लिवर ट्रांसप्लांट किए जाते हैं और इनके परिणाम अंतरराष्ट्रीय मानकों के बराबर हैं। अधिकांश ट्रांसप्लांट में लिविंग डोनर होते हैं — अक्सर माता-पिता — जो न केवल चिकित्सीय नवाचार का प्रतीक हैं, बल्कि पारिवारिक समर्पण का भी उदाहरण हैं। इसके बावजूद, ऑर्गन की कमी, उच्च इलाज लागत और क्षेत्रों के बीच असमानता जैसी चुनौतियां अब भी मौजूद हैं। हालांकि बच्चों की जीवन दर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन सफलता अब केवल "जीवन के वर्षों" में नहीं, बल्कि "उन वर्षों की गुणवत्ता" में मापी जाती है।

बीएलके-मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के एचपीबी सर्जरी एवं लिवर ट्रांसप्लांटेशन विभाग के वाइस चेयरमैन एवं हेड डॉ. अभिदीप चौधरी ने बताया कि "बाल्यावस्था के लिवर ट्रांसप्लांट के बाद के दिन बेहद नाजुक होते हैं, जहां जीवन और पुनर्निर्माण के बीच संतुलन साधना होता है। कई छोटे मरीज इस यात्रा की शुरुआत कुपोषण और कमजोर इम्युनिटी के साथ करते हैं, जिससे पोषण उनकी रिकवरी का मुख्य आधार बन जाता है। प्रोटीन और माइक्रोन्यूट्रिएंट से भरपूर आहार शरीर की ताकत, विकास और संक्रमण से सुरक्षा में मदद करता है। साथ ही इम्यून सिस्टम की देखभाल में सटीकता जरूरी है ताकि रिजेक्शन नियंत्रण और दवाओं के साइड इफेक्ट के बीच संतुलन बना रहे।"

लेकिन उपचार केवल शारीरिक नहीं होता — परिवारों को राहत के साथ निरंतर चिंता का सामना करना पड़ता है, जबकि बच्चे डर, असुरक्षा और दिनचर्या में बदलाव का अनुभव करते हैं। भावनात्मक काउंसलिंग और साथियों से मिलने वाला सहयोग बच्चों को आत्मविश्वास और स्थिरता वापस पाने में मदद करता है। असली रिकवरी तब शुरू होती है जब पोषण शरीर को सशक्त करता है और मानसिक आश्वासन मन को शांत करता है — जब रुका हुआ जीवन फिर से अपनी लय पकड़ने लगता है।

डॉ. अभिदीप ने आगे बताया कि "जैसे-जैसे ये बच्चे बड़े होते हैं, नई चुनौतियां सामने आती हैं। कुछ में विकास की रफ्तार धीमी पड़ सकती है, हार्मोनल बदलाव या थकान जैसी समस्याएं आत्मविश्वास और सामाजिक जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। वहीं कुछ को लंबे समय तक इम्यूनोसप्रेशन से गुर्दे की कार्यक्षमता या मेटाबॉलिक जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद, कई बच्चे सामान्य जीवन जीते हैं — पढ़ाई पूरी करते हैं, करियर बनाते हैं और परिवार शुरू करते हैं। समाज में उनका पुनः एकीकरण ही असली सफलता है, जो दिखाता है कि ट्रांसप्लांटेशन केवल जीवन बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि उसे उसके सम्पूर्ण रूप में बहाल करने के लिए है।" तकनीक अब ट्रांसप्लांट के बाद की देखभाल का स्वरूप बदल रही है। टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म अब दूरदराज़ के मरीजों को समय पर सलाह और फॉलो-अप प्रदान कर रहे हैं, जिससे यात्रा और अस्पताल में दोबारा भर्ती होने की आवश्यकता घट रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब जटिलताओं की भविष्यवाणी और उपचार को व्यक्तिगत बनाने में मदद कर रही है। वहीं मल्टीडिसिप्लिनरी टीमें पोषण, रिहैबिलिटेशन और साइकोलॉजिकल सपोर्ट का समन्वय करती हैं। भारत में ये नवाचार स्वास्थ्य सेवाओं में अंतर कम कर रहे हैं और मरीजों को एक समान गुणवत्ता की देखभाल उपलब्ध करा रहे हैं। जब तकनीक मानवीय संवेदनाओं के साथ जुड़ती है, तो चिकित्सा विज्ञान सटीकता और करुणा दोनों का संगम बन जाता है। भारत में परिवार रिकवरी की सबसे बड़ी ताकत है। अक्सर मां ही डोनर और केयरगिवर दोनों की भूमिका निभाती हैं, दवाइयों से लेकर पोषण और स्वच्छता तक हर जिम्मेदारी संभालती हैं। हालांकि यह यात्रा बेहद थकाऊ होती है — भावनात्मक तनाव, आर्थिक दबाव और सामाजिक अलगाव आम हैं। ऐसे में संगठित केयरगिवर ट्रेनिंग, डिजिटल फॉलो-अप सिस्टम और समुदाय आधारित सहयोग परिवारों का बोझ कम कर सकते हैं। हर बाल्यावस्था लिवर ट्रांसप्लांट विज्ञान, संवेदना और साहस की परीक्षा है। ये छोटे मरीज हमें याद दिलाते हैं कि जीवित रहना ही अंतिम लक्ष्य नहीं — सच्ची सफलता तब है जब बचपन लौटे, परिवार में संतुलन आए और एक सामान्य भविष्य की उम्मीद फिर से जग उठे। चुनौती बड़ी है, लेकिन उससे भी बड़ा है वह साहस जो इन नन्हें योद्धाओं और उनके परिवारों से प्रेरणा देता है।

कोलेस्ट्रॉल के बारे में हम अक्सर सुनते रहते हैं

आइए जानते हैं कि कोलेस्ट्रॉल क्या है और यह कितना जरूरी है। कोलेस्ट्रॉल एक रासायनिक यौगिक है जो हमारे शरीर में प्राकृतिक रूप से बनता है। यह लिपिड और स्टेरॉयड नामक दो रसायनों के मेल से बनता है। हमारे शरीर में मौजूद कोलेस्ट्रॉल में से 80% हमारे लीवर द्वारा बनाया जाता है। इसे एंडोजेनस कोलेस्ट्रॉल (Endogenous cholesterol) कहा जाता है। बाकी कोलेस्ट्रॉल हम जो खाना खाते हैं उसके माध्यम से हमारे शरीर में आता है। इसे एक्सोजेनस कोलेस्ट्रॉल (Exogenous cholesterol) कहा जाता है। अधिकांश कोलेस्ट्रॉल असंतृप्त खाद्य पदार्थों से प्राप्त होता है। शाकाहारी खाद्य पदार्थों में एवोकाडो, नट्स जैसे खाद्य पदार्थों को छोड़कर कोलेस्ट्रॉल नहीं होता है। जब हम जो भोजन करते हैं वह पच जाता है और पोषक तत्व रक्त में मिल जाते हैं। इस समय कोलेस्ट्रॉल को आंत द्वारा अवशोषित किया जाता है और यकृत में जमा किया जाता है। यकृत ही तब आवश्यकता होने पर कोलेस्ट्रॉल को बाहर निकालता है या उत्पादन करता है। कोलेस्ट्रॉल, जिसे कोलेस्ट्रॉल भी कहा जाता है, हमारे शरीर को आवश्यक प्रमुख हार्मोन जैसे वृद्धि हार्मोन, एस्ट्रोजेन, टेस्टोस्टेरोन आदि के स्राव के लिए आवश्यक है। हमारे शरीर में बन रहे विटामिन 'ई' के उत्पादन के लिए कोलेस्ट्रॉल बहुत जरूरी है। कोलेस्ट्रॉल दो प्रकार का होता है। इन्हें अच्छा कोलेस्ट्रॉल और खराब कोलेस्ट्रॉल कहा जाता है। एलडीएल कोलेस्ट्रॉल खराब कोलेस्ट्रॉल है। एचडीएल कोलेस्ट्रॉल अच्छा कोलेस्ट्रॉल है। एलडीएल कोलेस्ट्रॉल रक्त में अधिक मात्रा में होने से हृदय रोग होने की संभावना अधिक होती है। यह रक्त वाहिकाओं की आंतरिक दीवारों पर जमा होकर रक्त प्रवाह को धीरे-धीरे अवरुद्ध कर देता है। इसके लिए एथेरोस्क्लेरोसिस (Atherosclerosis) कहा जाता है। लेकिन एचडीएल कोलेस्ट्रॉल इस तरह के कोलेस्ट्रॉल के निर्माण को रोकता है। रक्त में मौजूद खराब कोलेस्ट्रॉल को बाहर निकालकर रक्त वाहिकाओं में जमा होने से रोकता है। कोलेस्ट्रॉल की कुल मात्रा २०० मिलीग्राम% से अधिक होने पर हृदय रोग होने की संभावना अधिक होती है। जिन लोगों को दिल का दौरा पड़ चुका है, उनके लिए इसे 180 mg% से कम पर बनाए रखना अच्छा है। एलडीएल कोलेस्ट्रॉल का स्तर 100 mg% से अधिक होने पर हृदय रोग होने की संभावना पांच गुना बढ़ जाता है"!

1. कोलेस्ट्रॉल के स्रोत: कोलेस्ट्रॉल मुख्य रूप से जानवरों के उत्पादों में पाया जाता है, जैसे कि मांस, अंडे, दूध, और मक्खन।

१. कोलेस्ट्रॉल के प्रकार: कोलेस्ट्रॉल दो प्रकार का होता है: एलडीएल (LDL) और एचडीएल (HDL)। एलडीएल को "खराब" कोलेस्ट्रॉल कहा जाता है, जबकि एचडीएल को "अच्छा" कोलेस्ट्रॉल कहा जाता है।

3. कोलेस्ट्रॉल के नुकसान: उच्च कोलेस्ट्रॉल के स्तर से हृदय रोग, स्ट्रोक, और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।

4. कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के तरीके: कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के लिए, आप अपने आहार में बदलाव कर सकते हैं, जैसे कि अधिक फल, सब्जियां, और साबुत अनाज खाना। आप नियमित व्यायाम भी कर सकते हैं और धूम्रपान और शराब का सेवन कम कर सकते हैं।

कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने के लिए कुछ तरीके हैं:-

स्वस्थ आहार

स्वस्थ आहार में कम वसा वाले खाद्य पदार्थ, जैसे कि फल, सब्जियां, और साबुत अनाज शामिल होने चाहिए।

नियमित व्यायाम

नियमित व्यायाम करने से कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

धूम्रपान बंद करना

धूम्रपान बंद करने से कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

तनाव कम करना

तनाव कम करने से कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

कोलेस्ट्रॉल एक महत्वपूर्ण पदार्थ है जो हमारे शरीर के लिए आवश्यक है। लेकिन, इसके स्तर को नियंत्रित करना भी महत्वपूर्ण है ताकि हृदय रोगों का खतरा कम हो सके। स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम, धूम्रपान बंद करना, और तनाव कम करने से कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

शरीर में सोडियम की मात्रा को काफी स्तर तक गिरा सकती हैं ये 3 दवाइयां: डॉ ह्रदयेश कुमार

क्या आप जानते हैं कि कुछ सामान्य रूप से इस्तेमाल की जाने वाली दवाइयां आपके शरीर में सोडियम के स्तर को खतरनाक हद तक कम कर सकती हैं? Low Blood Sodium या हाइपोनेट्रिमिया की यह स्थिति शुरुआत में थकावट या कन्फ्यूजन जैसे हल्के लक्षण पैदा करती है, लेकिन अगर इस पर ध्यान न दिया जाए तो यह मिर्गी के दौरे और कोमा जैसी जानलेवा समस्याओं का कारण बन सकती है।

सोडियम शरीर में पानी का संतुलन बनाए रखता है।

इसका स्तर कम होने पर शरीर में कई परेशानियां हो सकती हैं।

सोडियम की कमी से दिमाग की कोशिकाओं में सूजन आ सकती है। अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ ह्रदयेश कुमार ने स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आप सभी को जागरूक करते हुए इस गंभीर खतरे के बारे में चेतावनी दी है। खास तौर पर बुजुर्ग और लंबे समय से दवाइयां ले रहे मरीजों के लिए यह जानकारी बेहद जरूरी है।

उनका कहना है कि 3 तरह की दवाएं शरीर में लो सोडियम (हाइपोनेट्रेमिया) की स्थिति पैदा कर सकती हैं, जो समय रहते पहचानी न जाए तो जानलेवा भी साबित हो सकती है (Medications That Lower Sodium Levels)। आइए जानते हैं।

सोडियम हमारे शरीर का एक बेहद जरूरी इलेक्ट्रोलाइट है। यह कोशिकाओं के अंदर और बाहर पानी का संतुलन बनाए रखता है और नसों व मांसपेशियों के सामान्य कामकाज के लिए जरूरी है। बता दें, जब खून में सोडियम का स्तर बहुत कम हो जाता है, तो पानी कोशिकाओं के भीतर चला जाता है, जिससे वे सूजने लगती हैं।

शुरुआती लक्षण हल्के हो सकते हैं- जैसे थकान, सिरदर्द या उलझन, लेकिन अगर स्थिति बिगड़ती चली जाए तो यह दिमाग की कोशिकाओं को प्रभावित कर सकती है, जिससे दौरे पड़ना, बेहोशी या कोमा जैसी गंभीर परिस्थितियां बन सकती हैं।

3 दवाएं जो गिरा सकती हैं सोडियम का लेवल

डॉ. कुमार ने बताया कि तीन प्रकार की दवाएं, जो लाखों लोग रोज लेते हैं, सोडियम के स्तर को खतरनाक रूप से घटा सकती हैं- खासकर बुजुर्गों या पहले से बीमार लोगों में।

थायजाइड डायूरेटिक्स (Thiazide Diuretics)

ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने के लिए दी जाने वाली दवाओं में हाइड्रोक्लोरोथायज़ाइड और इंडापामाइड जैसी दवाएं शामिल हैं। ये दवाएं शरीर से पानी और सोडियम को मूत्र के जरिए बाहर निकालती हैं।

अगर सोडियम का लॉस ज्यादा हो जाए, तो शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है और सोडियम स्तर खतरनाक रूप से गिर सकता है। यह समस्या खासकर उन लोगों में देखी जाती है जो पहले से डिहाइड्रेशन या किडनी संबंधी परेशानी से जूझ रहे हों।

एसएसआरआई (SSRIs - Selective Serotonin Reuptake Inhibitors)

ये दवाएं डिप्रेशन और एंग्जायटी के इलाज में दी जाती हैं, जैसे सर्ट्रालिन या एस्किटालोप्राम। डॉ. कुमार बताते हैं कि ये दवाएं शरीर में एंटी-डायूरेटिक हार्मोन (ADH) को प्रभावित कर सकती हैं। जब ADH अधिक बनने लगता है, तो शरीर में पानी रुक जाता है और हाइपोनेट्रेमिया की स्थिति पैदा हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति साथ में ब्लड प्रेशर की दवा या मूत्रवर्धक दवा भी ले रहा हो, तो खतरा और बढ़ जाता है।

कार्बामैजेपीन और ऑक्सकार्बामैजेपीन (Carbamazepine, Oxcarbazepine)

ये दवाएं आमतौर पर मिर्गी के दौरे कंट्रोल करने और मूड स्टेबलाइजर के रूप में दी जाती हैं। इन दवाओं से SIADH (Syndrome of Inappropriate Antidiuretic Hormone secretion) नामक स्थिति पैदा हो सकती है, जिसमें शरीर में ADH का स्तर असामान्य रूप से बढ़ जाता है। इसके चलते पानी जमा होता है और सोडियम स्तर खतरनाक रूप से घट जाता है। यह जोखिम उन लोगों में ज्यादा होता है जो पहले से कई दवाएं ले रहे हों या जिनकी उम्र अधिक हो।

कुछ परिस्थितियां हाइपोनेट्रेमिया के खतरे को और बढ़ा देती हैं:

एक साथ कई दवाएं लेना, जो पानी या सोडियम संतुलन को प्रभावित करती हैं।

उम्र बढ़ने के साथ शरीर की किडनी फंक्शन और सोडियम नियंत्रण क्षमता घटती है।

हार्ट, लिवर या किडनी की पुरानी बीमारियां।

उल्टी, दस्त या बुखार से डिहाइड्रेशन होना।

बहुत ज्यादा मात्रा में पानी पीना, जिससे सोडियम और पतला हो जाता है।

जब ये सभी फैक्टर्स एक साथ हों, तो स्थिति तेजी से गंभीर हो सकती है।

समय पर लक्षण पहचानना है बहुत जरूरी है

हाइपोनेट्रेमिया की शुरुआती पहचान ही जीवन बचा सकती है। डॉक्टर सलाह देते हैं कि अगर आप कोई लंबी अवधि की दवा ले रहे हैं, तो नीचे दिए लक्षणों पर ध्यान जरूर रखें क्यों कि आप की जरूरत आप का स्वास्थ्य है ये जीवन को अनमोल है

असामान्य थकान या सुस्ती

चक्कर आना या ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई

उलझन, चीजें भूलना या असंतुलन

मांसपेशियों में कमजोरी या ऐंठन

सिरदर्द, जी घबराना या उल्टी

और गंभीर मामलों में दौरे पड़ना या बेहोशी

अगर इनमें से कोई भी लक्षण दिखे और आप ऊपर बताई गई दवाएं ले रहे हों, तो तुरंत ही अपने नज़दीकी डॉक्टर से संपर्क करें।

72 घंटे का उपवास केवल शरीर को विश्राम नहीं देता — यह उसकी प्राचीन बुद्धि को जागृत करता है

अध्ययनों से पता चला है कि केवल तीन दिनों के उपवास में मानव प्रतिरक्षा प्रणाली स्वयं का पुनर्निर्माण शुरू कर देती है — क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को हटाकर शरीर की प्राकृतिक मरम्मत प्रक्रिया को सक्रिय करती है।

यह अभाव नहीं है — यह सामंजस्य है।

जब शरीर निरंतर आहार से विराम लेता है, तो वह भीतर की ओर मुड़ता है, अपने पुनर्नवीनीकरण के स्वाभाविक लय को फिर से खोजता है।

मौन में, हर कोशिका सुनती है, हर तंत्र स्वयं को पुनः संतुलित करता है।

विज्ञान इस प्रक्रिया को ऑटोफैगी कहता है — पुरानी कोशिकाओं के पदार्थ को पुनर्चक्रित कर नई शक्ति में बदलना।

लेकिन इसके नीचे कुछ और भी गहरा है — शरीर का अपने दिव्य खाके को याद करना, उस पूर्णता के स्वरूप को जिसे लेकर वह जन्मा था।

उपवास हमें याद दिलाता है कि उपचार हमेशा जोड़ने से नहीं, बल्कि छोड़ने से आता है।

भोजन के बीच की निस्तब्धता में शरीर फिर से सामंजस्य प्राप्त करता है, जैसे कोई वाद्ययंत्र स्वयं को फिर से सही सुर में मिलाता है।

उपवास का हर क्षण शरीर और आत्मा के बीच संवाद बन जाता है — कोशिकाओं की रसायनशास्त्र और उन्हें चेतना देने वाले तत्व के बीच।

उपवास करना उस बुद्धि का सम्मान करना है जिसने हमें रचा है — यह विश्वास करना कि शरीर जानता है कि संतुलन की ओर लौटने के लिए उसे बस थोड़ा स्थान और शांति चाहिए।

उस खालीपन में, शरीर फिर से पूर्णता पाता है — और जीवन की ज्योति पुनः प्रज्वलित हो उठती है।

ध्यान दें: यह बहुत महत्वपूर्ण है बुजुर्ग लोगों में मानसिक भ्रम के कारण क्या हैं?"

एक मेडिकल कॉलेज में, एक प्रोफेसर चौथे वर्ष के मेडिकल छात्रों को मेडिसिन के बारे में पढ़ा रहे थे। उन्होंने उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा:

'बुजुर्ग लोगों में मानसिक भ्रम के कारण क्या हैं?'

1. कुछ छात्रों ने उत्तर दिया: ₹ब्रेन ट्यूमर।₹ प्रोफेसर ने जवाब दिया: 'नहीं'

2. अन्य लोगों ने सुझाव दिया: 'अल्जाइमर (स्मृति हानि) के शुरुआती लक्षण।' प्रोफेसर ने फिर से जवाब दिया: 'नहीं'

प्रत्येक गलत उत्तर के साथ, छात्रों ने सही उत्तर खोजने के लिए संघर्ष किया। अंत में, जब प्रोफेसर ने सबसे आम कारण का खुलासा किया, तो छात्र हैरान रह गए।

कारण था: निर्जलीकरण

यह सुनने में आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन यह मजाक नहीं है। 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोग धीरे-धीरे प्यास महसूस करना बंद कर देते हैं, इसलिए वे कम पानी पीते हैं। इसके परिणामस्वरूप, जब कोई उन्हें याद दिलाने वाला नहीं होता है, तो वे जल्दी से निर्जलित हो जाते हैं।

निर्जलीकरण खतरनाक क्यों है? निर्जलीकरण एक गंभीर स्थिति है जो पूरे शरीर को प्रभावित करती है। यदि निर्जलीकरण होता है, तो यह निम्नलिखित समस्याओं का कारण बन सकता है:

1. अचानक मानसिक भ्रम
2. निम्न रक्तचाप
3. बढ़ा हुआ हृदय दर
4. एंजाइना (छाती में दर्द)
5. कोमा
6. यहां तक कि मृत्यु

60 वर्ष की आयु से यह आदत शुरू होती है, जब शरीर की पानी की मात्रा पहले से ही 50% से कम होती है। अधिकांश बुजुर्ग लोगों में पानी की कमी होती है, जो प्राकृतिक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया का हिस्सा है। हालांकि, यह अधिक जटिलताओं का कारण बनता है। यहां तक कि जब वे निर्जलित होते हैं, तो उन्हें प्यास नहीं लगती है क्योंकि मस्तिष्क की आंतरिक संतुलन प्रणाली ठीक से काम नहीं करती है।

निष्कर्ष: 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोग आसानी से निर्जलित हो जाते हैं। न केवल इसलिए कि उनके शरीर में पानी कम होता है, बल्कि इसलिए भी कि वे यह महसूस नहीं करते हैं कि वे निर्जलित हैं। यहां तक कि अगर वे स्वस्थ दिखाई देते हैं, तो निर्जलीकरण उनके शरीर की रासायनिक और शारीरिक कार्यों को धीमा कर देता है, जिससे उनके पूरे शरीर पर प्रभाव पड़ता है।

दो महत्वपूर्ण चेतावनियां:

1. बुजुर्ग लोगों को नियमित रूप से तरल पदार्थ पीने के लिए प्रोत्साहित करें।

तरल पदार्थों में शामिल हैं:

1. पानी
2. फलों के रस
3. चाय
4. नारियल पानी
5. सूप
6. पानी से भरपूर फल (तरबूज, खरबूजा, आड़ू, अनानास, संतरा, और टेंजरिन)

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर दो घंटे में कुछ तरल पदार्थ पिएं।

2. परिवार के सदस्यों के लिए:

1. सुनिश्चित करें कि बुजुर्ग लोग बार-बार तरल पदार्थ पीते हैं।

2. यदि आप देखते हैं कि वे तरल पदार्थ पीने से इनकार करते हैं और चिड़चिड़ापन, सांस की तकलीफ, या ध्यान केंद्रित करने में कमी के लक्षण दिखाते हैं, तो ये निर्जलीकरण के निश्चित संकेत हैं।

अब, क्या आप समझते हैं कि बुजुर्ग लोगों के लिए पानी पीना कितना महत्वपूर्ण है?

1. इस जानकारी को दूसरों के साथ साझा करें।

2. अपने दोस्तों और परिवार को स्वस्थ और खुश रहने में मदद करें।

यह वरिष्ठ नागरिकों के लिए मूल्यवान सलाह है!

गंभीर निर्जलीकरण अप्रत्यक्ष रूप से पक्षाघात का कारण बन सकता है मुख्य रूप से खतरनाक इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन (जैसे कम पोटैशियम स्तर, या हाइपोकैलेमिया, या उच्च सोडियम स्तर, या हाइपरनेट्रेमिया) को ट्रिगर करके, जो तंत्रिका और मांसपेशी कार्य को बाधित करता है। यह केवल द्रव हानि का सीधा प्रभाव नहीं है बल्कि चरम मामलों की एक जटिलता है, जो अक्सर गर्मी के संपर्क, लंबे समय तक उल्टी/दस्त, या अपर्याप्त द्रव सेवन में देखी जाती है। जबकि हल्का निर्जलीकरण आमतौर पर थकान, चक्कर आना, या मांसपेशियों में ऐंठन जैसी लक्षण पैदा करता है, अनुपचारित गंभीर निर्जलीकरण न्यूरोलॉजिकल समस्याओं में बढ़ सकता है, जिसमें अस्थायी फ्लैसिड पक्षाघात (मांसपेशी टोन और गति का नुकसान) शामिल है।

यह कैसे होता है इलेक्ट्रोलाइट असंतुलनः निर्जलीकरण रक्त इलेक्ट्रोलाइट्स को केंद्रित कर देता है या पसीने या द्रव हानि के माध्यम से उन्हें समाप्त कर देता है। हाइपोकैलेमिया, उदाहरण के लिए, मांसपेशी संकुचन के लिए आवश्यक विद्युत संकेतों को बाधित करता है, जिससे कमजोरी हो सकती है जो पूर्ण पक्षाघात में प्रगति कर सकती है। हाइपरनेट्रेमिया मस्तिष्क कोशिकाओं को सिकोड़ देता है और ऑस्मोटिक बदलाव पैदा करता है, जो संभवतः दौरे, कोमा, या मांसपेशी पक्षाघात का कारण बन सकता है। न्यूरोलॉजिकल प्रभावः निर्जलीकरण से रक्त की मात्रा कम होने से मस्तिष्क का रक्त प्रवाह कम हो जाता है, जिससे भ्रम, सुस्ती, या मस्तिष्क की सूजन/एडिमा हो सकती है, जो पक्षाघात जैसी अचलता की नकल कर सकती है या इसमें योगदान दे सकती है। जोखिम कारकः वृद्ध वयस्क, गर्म वातावरण में एथलीट, या पाचन संबंधी बीमारियों वाले व्यक्ति सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं। तत्काल पुनःजलीकरण और इलेक्ट्रोलाइट सुधार आमतौर पर इसे जल्दी उलट देता है।

चिकित्सा मामलों से प्रमाण गर्म जलवायु में विदेशी श्रमिकों के बीच 22 मामलों की एक श्रृंखला में, मरीजों ने अत्यधिक गर्मी में शारीरिक श्रम के बाद निर्जलीकरण-प्रेरित हाइपोकैलेमिया प्रस्तुत किया, जिसके परिणामस्वरूप फ्लैसिड पक्षाघात के कारण चलने में असमर्थता हुई। सभी ने IV पोटैशियम और द्रवों से तेजी से सुधार किया।

एक अन्य रिपोर्ट में एक व्यक्ति का वर्णन किया गया है जिसकी प्यास की कमी थी, जो अपर्याप्त निर्जलीकरण एपिसोड के कारण हाइपरनेट्रेमिया से गहन मांसपेशी पक्षाघात विकसित करता रहा।

व्यापक समीक्षाएं पुष्टि करती हैं कि गंभीर निर्जलीकरण के न्यूरोमस्कुलर प्रभावों में कमजोरी, ऐंठन, और जोखिम जैसे रैब्डोमायोलिसिस (मांसपेशी विघटन) शामिल हैं, जो चरम परिदृश्यों में अस्थायी पक्षाघात का कारण बन सकते हैं।

यदि आपको निर्जलीकरण का संदेह है (जैसे मुंह सूखना, कम मूत्र उत्पादन, तेज हृदय गति), तो तुरंत चिकित्सा सहायता लें—IV द्रव वृद्धि को रोक सकते हैं।

पर्यावरण पाठशाला : नंगे पांव घास पर चलने के फायदे

लेखक – डॉ. अंकुर शरण

आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में हम सब सुविधा के इतने आदी हो चुके हैं कि प्रकृति से हमारा रिश्ता धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है। सुबह की सैर अब जॉगिंग ट्रैक या जिम मशीनों तक सीमित हो गई है, जबकि कभी यही सैर खुली हवा में, ओस से भीगी घास पर नंगे पांव चलकर शुरू होती थी। यह सिर्फ़ एक आदत नहीं, बल्कि एक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है — जो शरीर, मन और आत्मा तीनों के लिए लाभकारी है।

धरती से जुड़ाव का एहसास

नंगे पांव घास पर चलना हमें धरती से जोड़ता है। जब हमारे पांव सीधे मिट्टी या घास को छूते हैं, तो "ग्राउंडिंग" या "अर्थिंग" की प्रक्रिया होती है — यानी शरीर में मौजूद अतिरिक्त विद्युत ऊर्जा धरती में प्रवाहित हो जाती है। यह शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकालने में मदद करती है और मन को शांति देती है।

तनाव और अवसाद से मुक्ति

सुबह की ठंडी ओस और हरी घास का स्पर्श शरीर में एक सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है। यह हमारे नर्व सिस्टम को शांत करता है और तनाव के स्तर को घटाता है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि प्रतिदिन 15–20 मिनट नंगे पांव घास पर चलने वाले लोगों में चिंता और अवसाद की स्थिति कम होती है।

रक्त संचार और नींद में सुधार

जब आप घास पर चलते हैं, तो आपके पांव के तलों में स्थित acupressure points सक्रिय होते हैं। यह न केवल रक्त संचार को बेहतर बनाते हैं, बल्कि नींद की गुणवत्ता को भी सुधारते हैं। जो लोग अनिद्रा या थकान से परेशान रहते हैं, उन्हें यह उपाय बहुत लाभ देता है।

नेत्र और हृदय स्वास्थ्य के लिए उपयोगी

आयुर्वेद में कहा गया है कि सुबह की ओस भरी घास पर चलना आंखों के लिए अमृत समान है। यह आंखों की रोशनी बढ़ाने में सहायक माना गया है। वहीं हृदय के लिए भी यह एक हल्की लेकिन प्रभावी कसरत है — बिना ज़्यादा exertion के शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

पर्यावरण से आत्मिक जुड़ाव

जब हम नंगे पांव घास पर चलते हैं, तो सिर्फ़ शारीरिक नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से भी प्रकृति से जुड़ते हैं। यह जुड़ाव हमें सिखाता है कि धरती माँ सिर्फ़ हमारी ज़रूरतें पूरी नहीं करती, बल्कि हमें सुकून और स्थिरता भी देती है।

कुछ ज़रूरी सावधानियाँ

हमेशा साफ और सुरक्षित जगह पर चलें, जहां कांच, पत्थर या कीड़े न हों।

सुबह-सुबह या शाम को हल्की रोशनी में चलना सबसे अच्छा होता है।

कोशिश करें कि रोज़ाना 10-15 मिनट इस अभ्यास को अपने रूटीन का हिस्सा बनाएं।

प्रकृति के साथ यह छोटा-सा रिश्ता हमारे जीवन में बड़ा परिवर्तन ला सकता है। यह न केवल हमारे स्वास्थ्य को संवारता है, बल्कि हमें जीवन के मूल तत्व — "धरती से जुड़ाव" — का एहसास कराता है।

पार्यावरण पाठशाला का परिचय

डॉ. अंकुर शरण का एक प्रयास

हम सबने जीवन में बहुत कुछ पढ़ा है, डिग्रियाँ हासिल की हैं, लेकिन क्या हमने यह सीखा कि अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण का ख्याल कैसे रखा जाए? पार्यावरण पाठशाला इसी सोच से जुड़ा एक प्रयास है — एक जीवंत पाठशाला, जहाँ हम हर दिन प्रकृति से कुछ नया सीखते हैं और अपने अनुभवों को एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं।

यह पहल हमें सिखाती है कि पर्यावरण संरक्षण कोई बड़ा कार्य नहीं, बल्कि छोटी-छोटी आदतों से शुरू होने वाली जीवनशैली है। आइए, मिलकर इस हरित यात्रा का हिस्सा बनें।

आप भी अपने अनुभव और सुझाव हमारे साथ साझा करें —

Email: indiangreenbuddy@gmail.com

पार्यावरण पाठशाला – प्रकृति से सीखो, प्रकृति के लिए जीयो।

बढ़ते आवारा पशु और घटती मानसिक शांति — ज़रूरत है सामूहिक कार्रवाई की

– डॉ. अंकुर शरण

फरीदाबाद जैसे विकसित होते शहर में आज एक नई चुनौती सामने है — सड़कों पर बढ़ते आवारा कुत्ते और बंदर। ये केवल सुरक्षा का नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य का भी मुद्दा बनते जा रहे हैं। कई इलाकों में लोग यह कहने लगे हैं कि अब वे निःसंकोच सड़कों पर टहल भी नहीं सकते, क्योंकि हर मोड़ पर कुत्तों के झुंड या बंदरों की मौजूदगी का डर बना रहता है।

यह डर खासकर वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों के लिए मानसिक दबाव का कारण बन रहा है। जो लोग सुबह-शाम पार्कों में घूमकर ताज़ी हवा लेना चाहते हैं, वे अब घरों में कैद रहने लगे हैं। नतीजा यह है कि लोग अपना ज़्यादातर समय मोबाइल और सोशल मीडिया पर बिताने लगे हैं — जिससे तनाव, चिड़चिड़ापन, अकेलापन और नींद से जुड़ी समस्याएं बढ़ रही हैं।

समस्या को समझें, टकराव नहीं समाधान खोजें

कुत्ते और बंदर हमारे पर्यावरण का भी हिस्सा हैं। उनका आक्रामक व्यवहार अक्सर भूख, डर और असुरक्षा के कारण होता है। हमें उन्हें शत्रु नहीं, बल्कि करुणा और संवेदना से देखने की ज़रूरत है। समाज को मिलकर इनके लिए सुरक्षित फीडिंग जोन और रिहैब सेंटर विकसित करने चाहिए।

नागरिक और प्रशासन का संयुक्त प्रयास

प्रशासन को Animal Birth Control (ABC) और टीकाकरण अभियान नियमित रूप से चलाने चाहिए।

RWA और सामाजिक संस्थाएं मिलकर आवारा पशुओं के प्रबंधन पर जागरूकता बढ़ाएं।

नागरिक अपने आसपास स्वच्छता रखें ताकि कचरे की वजह से ये जानवर आवासीय इलाकों में न आएं।

मानसिक स्वास्थ्य और समाज कल्याण का संतुलन

जब लोग बाहर घूम नहीं पाते, तो उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ सभी उम्र के लोग निःसंकोच बाहर निकल सकें, प्रकृति से जुड़ सकें और वास्तविक सामाजिक संवाद कर सकें।

अत्यधिक सोशल मीडिया से दूर रहना और प्रकृति के बीच समय बिताना मानसिक सुकून देता है — यही सच्चा "सोशल कनेक्शन" है।

संवाद और समाधान

सड़क पर घूमते कुत्ते या पेड़ों से झूलते बंदर हमारी समस्या नहीं, बल्कि हमारी ज़िम्मेदारी हैं। हमें एक ऐसा संतुलित समाज बनाना होगा जहाँ इंसान और पशु दोनों सुरक्षित रहें, और हर नागरिक मानसिक रूप से स्वस्थ व आत्मिक रूप से सशक्त हो।

लेकिन इसके साथ ही, प्रशासनिक विभागों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक है कि संबंधित अधिकारी इस बढ़ती समस्या को केवल "शिकायत" न समझें, बल्कि इसे समाज कल्याण और सार्वजनिक सुरक्षा का विषय मानते हुए ठोस कदम उठाएँ।

समाज को इस स्थिति में टकराव या हिंसा की ओर नहीं बढ़ना चाहिए। इन पशुओं को मारना, घायल करना या उनके प्रति क्रूरता दिखाना किसी भी तरह समाधान नहीं है। इसके बजाय, स्थानीय प्रशासन और पशु कल्याण विभाग को मिलकर इनकी सुरक्षित पकड़, टीकाकरण, पुनर्वास और नियंत्रण पर कार्य करना चाहिए।

अब समय आ गया है कि यह विषय केवल चर्चा तक सीमित न रहे। फरीदाबाद की स्थानीय समुदायों ने भी इस मुद्दे को गंभीरता से उठाया है, ताकि किसी बड़ी दुर्घटना या अप्रिय घटना से पहले प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

हर समाज की पहचान उसके संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिकों से होती है। आइए, मिलकर ऐसा शहर बनाएं जहाँ न केवल इंसान बल्कि हर जीव सुरक्षित और सम्मानपूर्वक जी सके।

फरीदाबाद को सुरक्षित, हरित और संवेदनशील बनाना हम सबका सामूहिक संकल्प है।

— डॉ. अंकुर शरण
पर्यावरणविद् एवं समाजसेवी

(भाषा के पतन से लोकप्रियता के उत्कर्ष तक की कहानी)

फूहड़ शब्दों का ग्लैमर और वर्चुअल समाज की विडंबना

– डॉ. प्रियंका सौरभ, लेखक और स्वतंत्र पत्रकार, हरियाणा

सोशल मीडिया पर अब केवल तस्वीरें या वीडियो नहीं, शब्द भी बिकने लगे हैं। फूहड़ता और अपशब्दों ने अभिव्यक्ति की मर्यादा को पीछे छोड़ दिया है। लाइक, कमेंट और शेयर की भूख ने भाषा को बाजार में बदल दिया है। समाज का वही वर्ग जो संस्कारों की बातें करता है, वही इन पोस्टों पर तालियाँ बजाता है। यह प्रवृत्ति केवल भाषा का पतन नहीं, सोच की गिरावट भी है। सभ्यता की पहली पहचान भाषा होती है—जब भाषा गिरती है, तो समाज भी गिर जाता है।

– डॉ प्रियंका सौरभ

कुछ समय पहले तक मुझे यह गलतफहमी थी कि सोशल मीडिया पर केवल रील्स और वीडियोज़ में वल्गर या बेहूदा कंटेन्ट ही ज्यादा देखा जाता है। सोचती थी कि शायद यह दृश्य माध्यम का प्रभाव है—जहाँ चमक, शरीर और शोर ही बिकता है। पर हाल के दिनों में कुछ लम्बी पोस्टें पढ़कर भ्रम टूटा। अब केवल दृश्य नहीं, भाषा भी बिकाऊ हो गई है। फूहड़पन अब सिर्फ कैमरे के सामने नहीं, कलम की नोक पर भी नाच रहा है।

इन पोस्टों में विषय तो वही पुराने और 'ट्रेंडिंग' हैं—पुरुषों को कोसना, संबंधों में स्त्री की पीड़ा या समाज की संकीर्णता। पर इन सबके बीच सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इन विचारों को जिस भाषा में व्यक्त किया जा रहा है, वह भाषा नहीं, गाली का उत्सव लगती है। लाइक्स और कमेंट्स की बरसात होती है, और भीड़ ताली बजाती है—मानो फूहड़ता अब किसी नई 'साहित्यिक विधा' का नाम बन चुकी हो।

कभी कहा जाता था कि लिखना, दिखने से कठिन होता है। लिखना मतलब सोचना, मनन करना, किसी विषय पर आत्मा से उतरकर बोलना। शब्द कभी भीड़ को लुभाने का नहीं, समाज को सजग करने का माध्यम होते थे। लेकिन आज इस संतुलन को एक नई भूख ने निगल लिया है—लोकप्रियता की भूख। अब जो सबसे तेज़, सबसे तीखा और सबसे विवादित लिखेगा, वही सबसे ज्यादा देखा जाएगा।

'क्लिक' और 'कमेंट' की इस दौड़ ने शब्दों की गरिमा को लगभग निचोड़ कर रख दिया है। अब भाषा का अर्थ अभिव्यक्ति नहीं, उत्तेजना रह गया है। और यह प्रवृत्ति केवल अनपढ़ या असंवेदनशील वर्ग तक सीमित नहीं—कई बार वही लोग, जो समाज में सुधार, परिवार में संस्कार और रिश्तों में मधुरता की बातें करते हैं, इन पोस्टों पर टूट पड़ते हैं। वे न केवल इन्हें पढ़ते हैं, बल्कि 'लाइक', 'हार्ट' और 'फायर इमोजी' भेजकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं—जैसे यह कोई सांस्कृतिक आंदोलन हो।

यह सवाल सबसे ज्यादा चुभता है—आखिर इस फूहड़ता में आकर्षण क्या है? क्या लोग वास्तव में इन विचारों से सहमत हैं, या बस भीड़ में शामिल हो जाने की मजबूरी है? मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो सोशल मीडिया ने व्यक्ति को 'अदृश्य पहचान' दी है। अब वह जो कहना, करना या दिखाना असल ज़िंदगी में नहीं कर सकता, उसे वह वर्चुअल दुनिया में निर्भीक होकर कर सकता है। यह आज़ादी धीरे-धीरे अराजकता में बदल गई है। भाषा की मर्यादा, सामाजिक संवेदना और दूसरों की गरिमा—सब पर खुली छूट मिल गई है।

किसी का अपमान करना, समूहों को उकसाना, व्यंग्य में विष घोलना—यह सब अब 'क्रिएटिविटी' कहलाता है। फूहड़ भाषा को 'निर्भीक अभिव्यक्ति' बताया जा रहा है, और सभ्य संवाद को 'पाखंड'। विचारों की जगह शब्दों का शोर छा गया है।

विडंबना यह है कि यही समाज घर में बच्चों को मर्यादा, संस्कार और आदर का पाठ पढ़ाता है, मगर वर्चुअल मंच पर वही लोग अपशब्दों की पोस्ट पर हंसते हुए इमोजी भेजते हैं। यानी हमारी वास्तविक और वर्चुअल नैतिकता में ज़मीन-आसमान का अंतर है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स ने हमें संवाद का अवसर दिया था, पर हम उसे विवाद का अखाड़ा बना बैठे। जहाँ पहले विचारों की टकराहट होती थी, वहाँ अब शब्दों की लाठियाँ चलती हैं।

यह प्रवृत्ति केवल भाषा की समस्या नहीं, सामाजिक संस्कृति के क्षरण का संकेत है। क्योंकि जब शब्द दूषित होते हैं, तो विचार भी विकृत हो जाते हैं। और जब विचार विकृत होते हैं, तो समाज में असहिष्णुता पनपती है। आज यही हो रहा है—हर वर्ग अपने पक्ष को 'एकमात्र सत्य' मानने लगा है, और जो असहमत है, उसके लिए अपशब्द तैयार रखे हैं।

कला, चाहे लेखन हो या अभिनय—समाज से संवाद का माध्यम है। लेकिन संवाद और प्रहार में फर्क होता है। जो शब्द किसी की गरिमा को चोट पहुँचाएँ, वे अभिव्यक्ति नहीं, आक्रोश का प्रदर्शन हैं। और जब यह आक्रोश लोकप्रियता के रास्ते का शॉर्टकट बन जाए, तब समाज को आत्ममंथन करना चाहिए।

जरूरत इस बात की है कि हम लोकप्रियता और गरिमा के बीच अंतर समझें। लिखना सिर्फ 'लोग क्या कहेंगे' के लिए नहीं होना चाहिए, बल्कि 'मैं क्या कहना चाहता हूँ' के लिए होना चाहिए। सच्चा लेखक भीड़ से नहीं, विवेक से संवाद करता है। लेकिन अफसोस, आज सोशल मीडिया ने साहित्य को मनोरंजन और विचार को व्यापार बना दिया है।

हर लाइक, हर कमेंट, हर शेयर—केवल एक बटन नहीं, एक नैतिक निर्णय है। जब हम किसी फूहड़ पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हैं, तो हम अनजाने में उस प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का एल्गोरिदम तो वही दिखाता है जो अधिक देखा जाता है। इसलिए असभ्य कंटेन्ट तभी बढ़ता है जब हम उसे बढ़ाते हैं। दर्शक अगर जिम्मेदार बन जाएँ, तो निर्माता भी सुधरने को मजबूर होंगे। संवेदनशील और सुसंस्कृत समाज वही होता है जहाँ लोकप्रियता का मापदंड शब्दों की गरिमा हो, न कि शब्दों की उत्तेजना।

सोशल मीडिया अब किसी एक व्यक्ति का नहीं, पूरे समाज का दर्पण है। यहाँ जो लिखा, कहा और साझा किया जा रहा है—वही हमारी सामूहिक सोच बन रहा है। अगर हम चाहते हैं कि समाज में शालीनता और संवेदना बनी रहे, तो हमें वर्चुअल व्यवहार में भी वही अनुशासन अपनाना होगा जो वास्तविक जीवन में अपनाते हैं। फूहड़ शब्दों की लोकप्रियता अल्पकालिक है, पर उनका प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक। विचारों की ताकत शब्दों की मर्यादा में ही बसती है, न कि उनकी अशालीनता में।

इसलिए अब वक्त है कि हम ठहरकर सोचें—क्या हम वाकई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का इस्तेमाल कर रहे हैं, या बस असभ्यता की स्वतंत्रता का जश्न मना रहे हैं? और अगर जवाब दूसरा है, तो हमें याद रखना चाहिए—सभ्यता की पहली पहचान भाषा होती है, और जब भाषा गिरती है, तो समाज भी गिर जाता है।

कविता - गोपाष्टमी

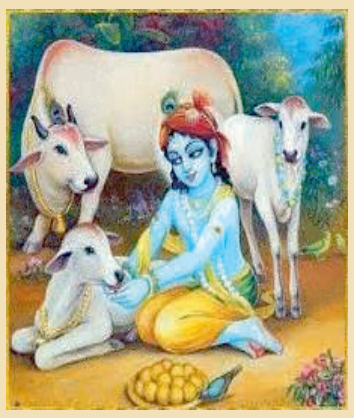

कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ अष्टमी तिथि आई,
गोचरण को प्रथम बारी चले हैं श्री कन्हाई,
सखियाँ गावै मंगलाचार यशुमति है हर्षाई,
नंदभवन में उत्सव भयो सबन को बधाई ।

अति ही प्यारी मदनमोहन को गैया माई,
कन्हैया कहाएं गोपाल गोसेवा सुखदाई,
लीला बाल कृष्ण की धूम सकल मचाई,
गोपाषटमी तिथि शुभ समृद्धि फलदाई ।

गौ से मिले पंचगव्य सोमरस दूध मलाई,
गैया की करो रक्षा जगत माता ये कहाई,
गोसेवा है संचित कर्म बंधन मुक्ति प्रदाई,
गौसेवा से बड़ा पुण्य और दूजा नही भाई ।

पवित्र हैं गंगा गीता गायत्री गौरी गौमाई,
गिरिराज गोवर्धन गोविंद और गुंसाई,
तैतिस कोटि देव देवी एक गऊ पूजाई,
श्रद्धा भक्ति समर्पण ₹आनंदर उपजाई ।

गोरज तिलक भाल श्रेष्ठतम फलदाई,
गो सेवा ही जीवन की असली कमाई,
गौ को न हो कहीं कोई कष्ट कठिनाई,
संरक्षित हो गोधन जीवन की कमाई ।

– मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नई, तमिलनाडु

स्लाइट संस्थान में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

लोंगोवाल,29 अक्टूबर (जगसीर सिंह) - संत लोंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल, पंजाब ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन 27 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक ₹सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी₹ थीम के साथ किया। इस सप्ताह के दौरान संस्थान में नैतिकता, ईमानदारी व भ्रष्टाचार-रोधी मूल्यों के प्रचार के लिए विविध गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

इस सप्ताह का प्रमुख आकर्षण ₹प्रभात फेरी₹ किया जायेगा, जिसमें विद्यार्थियों व कर्मचारियों ने जागरूकता बढ़ाने के लिए परिसर और आसपास के क्षेत्रों में मार्च निकाला। विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें सतर्कता और पारदर्शिता के सामाजिक महत्व पर चर्चा हुई और थीम से जुड़े विचारों का आदान-प्रदान किया गया। इसके अलावा, जागरूकता को संस्थान से आगे बढ़ाकर समुदाय तक पहुँचाने के लिए संगरूर जिला मुख्यालय पर विशेष जन-जागरूकता रैली का आयोजन किया जायेगा ।

इस समय निदेशक डॉ. मणिकांत पासवान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने संस्थान की नैतिक प्रशासनिक प्रतिबद्धता व भ्रष्टाचार के खिलाफ सामूहिक जिम्मेदारी के महत्व को रेखांकित किया। पूर्व मुख्य सतर्कता अधिकारी (एक्स सी. वी.ओ) श्री पी. के. जैन ने मौजूद श्रोताओं को संबोधित करते हुए सतर्कता के अपने अनुभव और संस्थागत सतर्कता के लिए व्यावहारिक सुझाव साझा किए। कार्यक्रम समन्वयक सुरिता मैनी ने सप्ताहभर की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया और युवाओं की सहभागिता के महत्व पर बल दिया। संस्थान से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियों और रिपोर्ट्स में विद्यार्थियों, कर्मचारियों व स्थानीय निवासियों की उत्साही भागीदारी को रेखांकित किया गया है, जिससे स्लाइट की ईमानदार और पारदर्शी प्रशासन की प्रतिबद्धता उजागर होती है।

सुनाम में केमिस्ट ऐसोसिएशन का विशेष "आशा द होप" समारोह 31 अक्टूबर को

परिवहन विशेष न्यूज

सुनाम ऊधम सिंह वाला 29 अक्टूबर (जगसीर लोगोंवाल)- केमिस्ट ऐसोसिएशन सुनाम की ओर से एक विशेष समारोह "आशा द होप" का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन 31 अक्तूबर को बी.बी. ग्रेंड होटल(पटियाला रोड, सुनाम) में भव्य रुप से किया जाएगा।

समारोह की अध्यक्षता जिला केमिस्ट ऐसोसिएशन के अध्यक्ष नरेश जिंदल करेंगे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में जेडएलए अमनदीप वर्मा शामिल होंगे, जबकि विशेष अतिथि के रुप में इग इंस्पेक्टर डॉ. संतोष जिंदल और एकांत प्रिय सिंगला उपस्थिति दर्ज करवाएंगे।

जिला अध्यक्ष नरेश जिंदल ने बताया कि इस समारोह का मुख्य उद्देश्य केमिस्टों को नवीन दवा नियमों और सरकारी दिशा-निर्देशों के प्रति जागरूक करना है ताकि वह बेहतर तरीके से जनसेवा कर सकें और दवा वितरण प्रणाली को और पारदर्शी बनाया जा सके।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दौरान इस विभाग के अधिकारी नए नियमों की विस्तारपूर्वक जानकारी देंगे और उनसे संबंधित शंकाओं का समाधान भी करेंगे।

इस अवसर पर केमिस्ट ऐसोसिएशन की सदस्यता प्रमाणपत्र भी वितरित किए जाएंगे, जिससे नए सदस्यों को संगठन से जोड़ने और एकजुटता को और मजबूत करने का अवसर मिलेगा। नरेश जिंदल ने बताया कि "आशा द होप" केवल एक समारोह नहीं बल्कि एक सकारात्मक पहल है जो समाज में दवाओं के जिम्मेदार उपयोग और केमिस्टों की सामाजिक भूमिका को रेखांकित करेगी। उन्होंने सभी स्थानीय केमिस्टों और समाजसेवियों से इस आयोजन में शामिल होने की अपील की है।समारोह में बड़ी संख्या में क्षेत्रभर के केमिस्ट, फार्मासिस्ट, दवा विक्रेता और समाजसेवी उपस्थित रहेंगे। आयोजन की तैयारियाँ जोरों पर हैं और ऐसोसिएशन ने इसे यादगार बनाने के लिए सभी सदस्यों को सक्रिय रुप से जोड़ा है। इस मौके पर राजीव जैन, विनोद कुमार हैप्पी, योगेश चोपड़ा, अजैब सैनी, संजय गर्ग, सतीश सिंगला आदि उपस्थित थे ।

भारत के अनोखे गाँव, आप भी जानेः

01. शनि शिग्नापुर, महाराष्ट्र।
पूरे गाँव के सभी घर बिना दरवाज़े के हैं।
यहाँ तक कि कोई पुलिस स्टेशन भी नहीं है।
कोई चोरी नहीं।

02. शेतफल, महाराष्ट्र।
गाँव के हर परिवार में साँप परिवार के सदस्य की तरह रहते हैं।

03. हिवारे बाज़ार, महाराष्ट्र।
भारत का सबसे अमीर गाँव।
60 करोड़पति।
कोई भी गरीब नहीं।
सबसे ज्यादा जीडीपी।

04. पुंसारी, गुजरात।
सबसे आधुनिक गाँव।
सभी घरों में सीसीटीवी और वाई-फ़ाई है।
सभी स्ट्रीट लाइटें सौर ऊर्जा से चलती हैं।

05. जंबूर, गुजरात।
सभी ग्रामीण भारतीय हैं, फिर भी सभी अफ्रीकी जैसे दिखते हैं।
इसे अफ्रीकी गाँव का उपनाम दिया गया है।

06. कुलधरा, राजस्थान।
भूतिया गाँव।
वहाँ कोई नहीं रहता।
बिना ग्रामीणों वाला गाँव।
सभी घर वीरान हैं।

07. कोडिन्ही, केरल।
जुड़वाँ बच्चों का गाँव।
400 से ज्यादा जुड़वाँ बच्चे।

08. मत्तूर, कर्नाटक।
एक ऐसा गाँव जहाँ के ग्रामीण अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में 100% संस्कृत बोलते हैं।

09. बरवान कला, बिहार।
कुंवारों का गाँव।
पिछले 50 सालों से कोई शादी नहीं हुई।

10. मावल्यान्नॉग, मेघालय।
एशिया का सबसे साफ़-सुथरा गाँव।
साथ ही, एक छोटी सी चट्टान पर एक अद्भुत संतुलन बनाए रखने वाली विशाल चट्टान भी है।

11. रोंगदोई, असम।
ग्रामीणों की मान्यता के अनुसार, बारिश लाने के लिए मेंढकों की शादी कराई जाती है।

12. कोरलाई गाँव, रायगढ़, महाराष्ट्र।
एकमात्र ऐसा गाँव जहाँ सभी ग्रामीण पुर्तगाली भाषा बोलते हैं।

हम में से बहुत से लोग अपने ही देश के इन गाँवों की इन अनोखी बातों के बारे में नहीं जानते...!!

जंगलों से घटती हाथियों की आबादी चिंताजनक

डॉ.रमेश ठाकुर

हाथियों पर डीएनए-आधारित जनगणना के नतीजे आ गए हैं। सार्वजनिक हुए नतीजे सुखद नहीं, दुखद हैं?

भारत के जंगलों से गजराजों की आबादी तेजी से घटी बताई गई है। घटने की तेजी में अगर रफतार ऐसी ही रही, तो जंगलों से गजराजों का गर्जना भविष्य में शांत भी हो सकता है। निश्चित रूप से यह रिपोर्ट सोचने पर विवश करती। ये रिपोर्ट, पर्यावरणविदों की उन बातों पर मुहर लगाती है जिनमें वह केंद्र और राज्य सरकारों से लंबे समय से हाथियों को बचाने की मांग करते आए हैं। जंगली हाथियों की आबादी में बड़े पैमाने पर गिरावट होना निःसंदेह सरकारी तंत्र की घोर विफलता ही कहा जाएगा? गणना बिल्कुल आधुनिक तकनीकों से संपन्न हुई है जबकि केंद्र सरकार हाथियों की गणना अपने हिसाब से करवाती है। यह नई डीएनए तकनीक प्रत्येक हाथी की उसके जेनेटिक सिग्नेचर से पहचान करती है। इससे गिनती बिल्कुल सटीक बाहर निकलती है। इसे दुनिया की पहली व्यापक डीएनए-आधारित हाथी गणना का तगमा हासिल है। रिपोर्ट ने सबसे ज्यादा हाथी कर्नाटक में बताए हैं वहां 6,013 हाथी हैं। दूसरे स्थान पर असम को रखा है जहां 4,159 हाथी है। इसके अलावा तमिलनाडु में 3,136, केरल में 2,785, उत्तराखंड में 1,792 और ओडिशा में 912 हाथी शेष बचे हैं। उत्तराखंड, तराई क्षेत्र, हिमाचल क्षेत्रों के हालात बहुत खराब दर्शाते हैं।

जो संख्या जांची गई है उसमें हाथियों की कोई प्रजाति ऐसी नहीं बची जिनमें घटौती न दर्ज की गई हो। मौजूदा गणना की मानें तो पिछले 8 सालों में करीब 25 फीसदी हाथियों की संख्या भारत में सिमट गई है। जंगलों में वास करने वाली विभिन्न किस्म की जीव प्रजातियां और बेजुबान जानवरों की संख्या बीते कुछ वर्षों से लगातार घटी ही हैं, उनमें हाथी भी अब शामिल हो गए हैं। तीन हजार के करीब ऐसे जीव हैं जिनकी संख्या तकरीबन-तकरीबन विलुप्त हो चुकी है। कुछ कतार में हैं। उस कतार में हाथियों का भी सम्मिलित होना, घोर चिंता का विषय है। जंगलों का लगातार खत्म होना, उनके रहने की जगहों का टुकड़ों में बंटना और गलियारों का कटना मुख्य कारण सामने निकलकर आए हैं। हाथियों को उनके रहने की जगह जब नहीं मिलती हैं तो वह खेतों और आवासीय क्षेत्रों का रुख करते हैं जहां पहले से घात लगाए बैठे शिकारियों के चंगुल में फंस जाते हैं। कुछ महीने पहले असम से एक दुखद खबर आई थी, दर्जन भर से ज्यादा हाथी रेलवे पटरी पर आकर कट गए थे।

गौरतलब है, भारत में पहली मर्तबा डीएनए आधारित इस नई टेक्नोलॉजी द्वारा हाथियों की गिनती हुई है जिसमें यह चिंतनीय रिपोर्ट सामने निकलकर आई है। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने हाथियों को लेकर पिछली गणना साल-2017 में कराई गई थी जिसमें में 29964 हाथी बताए गए थे। वहीं, मौजूदा गणना में संख्या घटकर मात्र 22446 रह गई, यानी वर्ष 2017 से 2025 के बीच इन 8 वर्षों में करीब साढ़े सात हजार हाथी कम हो गए। हाथियों की कम होती आबादी जंगलों के सिकुड़ते आकार और इंसानों व हाथियों के बीच बढ़ते टकराव की ओर इशारा आज से नहीं बल्कि बहुत पहले से कर रही है लेकिन हम बेखबर थे। असम के जंगलों में हाथियों की संख्या सर्वाधिक हुआ करती थी। वहां उनका अवैध शिकार बड़े स्तर पर आज भी जारी है। हाथियों की कुछ प्रजातियां ऐसी हैं जो सिर्फ भारत में ही पाई जाती है। उन हाथियों के दांत व अन्य शरीर के अंग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारी डिमांड रहती है। मोटी कमाई के लालच में तस्कर बेजुबान हाथियां का शिकार करते हैं। इस कृत्य में कई मर्तबा फॉरेस्ट कर्मचारियों की भी मिलीभगत सामने आती आई है।

भारत के अलावा वैश्विक स्तर भी हाथियों की आबादी तेजी से घट रही है। मौजूदा जनगणना 'वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' के नेतृत्व में हुई है जिनमें पारंपरिक तरीकों को छोड़कर नए आधुनिक और वैज्ञानिक रूप से सटीक डीएनए मार्क-रिकैप्चर विधि का इस्तेमाल किया गया। पहले हाथियों की गिनती उनकी चहलकदमियों या तो उन्हें देखकर हुआ करती थी या फिर उनके प्रजनन के आधार पर आकलन किया जाता था। पर, वह तरीके उतने सटीक नहीं होते थे। विश्व की बात करें तो वर्ष-1964 से लेकर 2016 तक, जंगली हाथियों की आबादी में औसतन 90 फीसदी की कमी हुई है। अफ्रीका में पाए जाने वाले 'सवाना हाथियों' की संख्या तकरीबन एक तिहाई लुप्त हो चुकी है। कुल मिलाकर, हाथियों की संपूर्ण आबादी में औसतन 77 प्रतिशत कमी आ चुकी है। करीब तीन दशक पूर्व ग्लोबल लेबल पर किए गए सर्वेक्षण में 37 देशों के 475 ऐसे स्थलों का जायजा लिया गया था जहां हाथियों की आबादी अच्छी हुआ करती थी। लेकिन सर्वेक्षण टीम ने उन सभी जगहों पर हाथियों की संख्या में गिरावट दर्ज की। उस गणना में भारतीय जंगल भी शामिल थे।

अभी कुछ नहीं बिगड़ा. हाथियों को अभी भी बचाया जा सकता है क्योंकि विश्व के 90 देशों के मुकाबले भारत में गजराजों की आबादी अभी भी सर्वाधिक है। भारत के पश्चिमी घाट अभी भी हाथियों के सबसे बड़े गढ़ हैं, वहां 11,934 हाथी हैं जबकि, 2017 में संख्या 14,587 थी। उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों और ब्रह्मपुत्र के बाढ़ वाले मैदानों में 6,559 हाथी हैं जो 2017 के 10,139 से कम हैं। मध्य भारत के ऊंचे इलाके और पूर्वी घाट में कुल मिलाकर 1,891 हाथी हैं जो 2017 की रिपोर्ट में बताए गए 3,128 हाथियों से कम हैं।

आबादी बढ़ाने के लिए सबसे पहले सुरक्षित आवासों को संरक्षित करना होगा और अवैध शिकार करने वाले तस्करों पर लगाम लगानी होगी। साथ ही सबसे जरूरी ध्यान मादा हथिनियों के स्वास्थ्य देखभाल और उनके आवश्यक रखरखाव पर ध्यानकार्षण करना होगा। इससे प्रजनन क्रियाओं को बढ़ावा मिलेगा। असम, कर्नाटक जैसे राज्यों को 'टाइगर रिर्जव' की भांति 'हाथी रिजर्व परियोजना' या 'प्रोजेक्ट एलीफेंट' जैसे विंग गठित होने चाहिए। इन जरूरी तथ्यों पर ध्यान दिए बिना हाथी को नहीं बचाया जा सकता। इसमें सामाजिक स्तर पर प्रत्येक इंसान को भी अपनी भागीदारी निभानी होगी क्योंकि बिना जनमानस के सहयोग से कोई भी सरकारी योजना सफल नहीं होती।

दादी के साथ बैठक

शाम उतर आई थी,
आँगन की मिट्टी ठंडी हो चली थी,
और दादी का आसन वही —
पुरानी बोर की चटाई पर,
पीठ के नीचे तकिया,
हाथ में चिलम, आँखों में धुआँ और कथा।

मैं पास ही बैठी थी —
बालों में उँगलियाँ फेरते हुए,
सुनती कम,
महसूस ज़्यादा कर रही थी।

दादी बोलती थीं,
पर शब्दों से अधिक,
उनकी झुर्रियाँ बोलती थीं —
हर रेखा जैसे एक किस्सा,
हर ठहराव जैसे कोई भूली हुई प्रार्थना।

उनके पास वक़्त का न कोई हिसाब था,
न किसी घड़ी की टिक-टिक।
दिन वहाँ ठहर जाते थे,
जहाँ उनका स्वर धीमा पड़ता,
और रात वहीं से शुरू होती,
जहाँ उनकी हँसी में खाँसी घुल जाती।

कभी-कभी वे रुककर कहतीं —
"देख, इस नीम के नीचे तेरे बाबा ने पहली
बखत हल चलाया था"
और मैं उस नीम को देखती,
तो लगता,
जड़ें अब भी बाबा की थकान को थामे हैं।

उनकी आँखों में पूरा गाँव बसता था —
कुएँ की रस्सी,
रसोई का चूल्हा,
सावन की बूँदें,
और किसी भूले मेले की धुन।

मैं हर दिन वहीं लौटती —
दादी की बैठक में,
जहाँ समय की घड़ी नहीं चलती थी,
बस स्मृतियों की घंटियाँ बजती थीं।

अब वही बैठक है,
पर दादी नहीं।
नीम अब भी है,
पर छाँव कुछ कम लगती है।
चटाई अब भी बिछती है,
पर उस पर कोई कथा नहीं उतरती।

कभी-कभी मैं बैठती हूँ —
वैसे ही,
जैसे वह बैठती थीं,
और मन ही मन पूछती हूँ —
दादी, क्या सच में
स्मृतियाँ भी मर जाती हैं,
या वे बस बैठकों से उठ जाती हैं?

– डॉ. प्रियंका सौरभ

मुलाकात की दो बूँद... साहेब!

— डॉ. प्रियंका सौरभ

मुलाकात की दो बूँद, साहेब,
रिश्तों को पोलियो से बचाती है।
वरना हाल पूछते-पूछते,
मोहब्बत लकवाग्रस्त हो जाती है।

अब चेहरे मुस्कान लिए रहते हैं,
पर आँखों में पहचान नहीं रहती,
हर संदेश "टिक" में बदल गया,
पर भावनाओं में जान नहीं रहती।

वो वक्त जब चाय पर बातें होतीं,
अब वीडियो कॉल में खो गया,
दिल से दिल मिलने की जगह,
नेटवर्क से जुड़ना हो गया।

थोड़ा वक्त निकालिए किसी अपने के लिए,
थोड़ी परवाह जताइए अपने दिल के लिए,
हर रिश्ता जवाब नहीं चाहता,
कभी बस हाज़िरी चाहता है।

सुनिए, जो रिश्ते साँस लेते हैं,
उन्हें हवा चाहिए, बहाना नहीं,
मुलाकात की दो बूँदें ही काफ़ी हैं,
रिश्तों को मरझाने से बचाने के लिए।

समावेशी और सशक्त राष्ट्र की आधारशिला रखने वाले लौह पुरुष, सरदार वल्लभ भाई पटेल

गौतम चौधरी

भारत आगामी 31 अक्टूबर को एक बार फिर से राष्ट्रीय एकता दिवस मनाने जा रहा है। देश के सत्ता प्रतिष्ठानों से लेकर ऐसे सैकड़ों संगठन हैं जो 31 अक्टूबर को एक राष्ट्रीय पर्व के तौर पर मनाते हैं। दरअसल, इस दिवस का महत्व इसलिए है कि इसी दिन भारत के उस लौह पुरुष का जन्म हुआ जिन्होंने आधुनिक संप्रभु भारत की आधारशिला रखी। उस राष्ट्र पुरुष का नाम सरदार वल्लभ भाई पटेल है। 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के सम्मान में हमारा कृतज्ञ राष्ट्र राष्ट्रीय एकता का जश्न मनाता है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल एक ऐसे नेता थे जिनकी दूरदृष्टि और दृढ़ निश्चय ने एक एकीकृत भारत की नींव रखी। "भारत के लौह पुरुष" के रूप में प्रसिद्ध पटेल के नेतृत्व में स्वतंत्रता के बाद 560 से अधिक देशी रियासतों का एकीकरण हुआ जिसने आज के इस अखंड, संप्रभु राष्ट्र को जन्म दिया। एकता दिवस केवल उनकी विरासत को श्रद्धांजलि नहीं है बल्कि भारत की विविधता में एकता की स्थायी प्रतिबद्धता का पुनर्स्मरण है।

जब वर्ष 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ, तब देश को 560 से अधिक रियासतों का एक जटिल ताना-बाना विरासत में मिला। प्रत्येक रियासत की अपनी स्वायत्तता और अलग-अलग निष्ठाएं थीं। सरदार पटेल ने इन रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित करने की चुनौती स्वीकार की। यह एक ऐसा कार्य था जिसके लिए अद्वितीय कूटनीति, साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी। उनकी स्थिर दृष्टि और दृढ़ संकल्प ने उन्हें "लौह पुरुष" के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया। राजनयिक समझदारी और व्यवहारिकता के संयोजन से पटेल ने लगभग सभी रियासतों का विलय भारतीय परिसंघ में कराया, जिनमें हैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू-कश्मीर जैसे जटिल और सामरिक दृष्ट से महत्वपूर्ण क्षेत्र भी शामिल थे। इससे भारत की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित हुई।

एकता के बिना मनुष्य बल कोई शक्ति नहीं है, जब तक वह ग्रथित रूप से समन्वित और संगठित न हो जाए। जब ऐसा होता है तो वह अपनी सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम और दुनिया के सामने उन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है, जो उस भूभाग को लंबे समय तक के लिए प्रभावशाली बना देता है। सरदार पटेल के लिए राष्ट्र की सच्ची शक्ति केवल सीमाओं में नहीं बल्कि उसके लोगों की एकता में निहित थी।

दरअसल, इन्हीं कुछ विशेषताओं के कारण वर्ष 2014 में भारत सरकार ने सरदार पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इसका उद्देश्य देशवासियों में एकता की भावना को पुनर्जीवित करना और पटेल की "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की दृष्टि को सम्मानित करना था।

इस दिन देशभर में रन फॉर यूनिटी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी और शपथ समारोह आयोजित किए जाते हैं। ता कि हमारे देश वासी अपने पूर्वज का स्मरण कर अपने आप को एकता के लिए प्रस्तुत करें। 31 अक्टूबर को मुख्य समारोह गुजरात स्थित एकता नगर के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (182 मीटर ऊँचा पटेल का भव्य प्रतिमा) पर आयोजित होता है जो भारत की शक्ति, साहस और सामूहिक संकल्प का प्रतीक है।

सरदार पटेल की राजनीतिक बुद्धिमत्ता और दूर दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी स्वतंत्रता के समय थी। उनका सामाजिक समरसता और समावेशिता में विश्वास आज के विभाजित विश्व में भी प्रेरणा देता है। सरदार पटेल बराबर यह बात दोहराते थे, "धर्म के मार्ग पर चलो, सत्य और न्याय के मार्ग पर चलो, क्योंकि वही सभी के लिए सही मार्ग है।" ये शब्द हमें याद दिलाते हैं कि भारत के सामाजिक ताने-बाने में न्याय, परस्पर सम्मान और शांति बनाए रखना हमारी साझा जिम्मेदारी है। एकता दिवस, उस भारत के विचार को पुनर्स्थापित करता है जो अपनी विविधता के कारण फलता-फूलता रहा है। यह दिन हर नागरिक को राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पण की याद दिलाता है। साथ ही भारत की सांस्कृतिक विविधता को संजोने और भाषा, क्षेत्र तथा धर्म के बीच बंधन को मजबूत करने का आह्वान करता है।

आज जब भारत क्षेत्रीय असमानताओं, सामाजिक विभाजनों और वैचारिक मतभेदों जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब एकता दिवस का संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामूहिक प्रगति की भावना को पुनर्जीवित करता है। एकता दिवस के मौके, शैक्षणिक संस्थानों में एकता पर वाद-विवाद और निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित करने की परिपाटी भी प्रारंभ की गयी है। सरकारी संस्थान परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं और नागरिक राष्ट्र की अखंडता बनाए रखने की शपथ लेते हैं। हर वर्ष स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर आयोजित समारोह देशभक्ति और गर्व की भावना को फिर से जगाता है। इस प्रकार के तमाम कार्यक्रम, यह संदेश देता है कि भारत चाहे जितना विशाल और विविध हो, उसका दिल और आत्मा एक है।

मसलन, सरदार पटेल के शब्द आज भी प्रेरणादायक हैं, "मेरी केवल एक इच्छा है कि भारत एक अच्छा उत्पादक बने और देश में कोई भूखा न रहे, किसी की आँखों में आँसू न हों।" उनका दयालु व समावेशी राष्ट्रवाद, सेवा और एकता पर आधारित नेतृत्व का सर्वोत्तम उदाहरण है।

गो - वंश संरक्षण और संवर्धन पर परिचर्चा के साथ आज कानपुर में गोपाष्टमी मनाएगी गौशाला सोसायटी

सुनील बाजपेई

कानपुर। 30 अक्टूबर को यहां कानपुर गोशाला सोसाइटी की ओर से एक्सप्रेस रोड स्थित अन्नपूर्णा भवन भोजनालय में गोपाष्टमी महोत्सव मनाने की तैयारी को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

सोसायटी के उपाध्यक्ष सुरेश गुप्ता ने यहां बताया कि कार्यक्रम का शुरूआत सुबह 11 बजे गो पूजन के साथ होगी। कार्यक्रम में गोवंश संरक्षण और संवर्धन पर परिचर्चा भी आयोजित किए जाने की जानकारी देते हुए उन्होंने यह भी बताया कि इसमें संस्था के नवाचारों की जानकारी साझा की जाएगी। इसी संदर्भ में अन्य जानकारी देते हुए संस्था के महामंत्री पुरुषोत्तम लाल तोषनीवाला ने बताया कि गोशाला समिति ने गो-ग्रास दान योजना के तहत मासिक 15 सौ और वार्षिक 51 हजार की योजना शुरू की है जो एक नवंबर से प्रभावशील होगी। इसका संचालन कृष्णा बब्बू को सौंपा गया है। जबकि कोषाध्यक्ष सुबोध अग्रवाल ने बताया कि महोत्सव के बाद सोसाइटी अपनी सभी शाखाओं में देसी गीर और हरियाणवी नस्ल की गायों को शामिल करेगी ताकि शहरवासियों को शुद्ध व गुणवत्तायुक्त दूध मिल सके। इस अवसर पर विजय पांडेय, विश्वनाथ कनोडिया, शेषनारायण त्रिवेदी, श्यामकृष्ण कनोडिया, रमेश मिश्रा, रामगोपाल तुलस्यान, विजय पांडेय आदि रहे।

मजदूरों की सशक्त आवाज़ गीता सोनी को मिला "बिलासा सेवा रत्न सम्मान"

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। समाज सेवा और मजदूरों के अधिकारों की सशक्त आवाज़ रही भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ की अखिल भारतीय मंत्री, छत्तीसगढ़-मध्यप्रदेश-तेलंगाना प्रभारी एवं भारतीय मजदूर संघ जिला जांजगीर की कार्यकारी अध्यक्ष गीता सोनी को प्रतिष्ठित "बिलासा सेवा रत्न सम्मान" से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान बिलासपुर के बैकुंठ रेसीडेंसी की ओर से चिचिरदा में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। कार्यक्रम में समाजसेवा, श्रमिक कल्याण और संगठन निर्माण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान की सराहना की गई। गीता सोनी, जो राष्ट्रीय सेविका समिति से प्रबोध प्रशिक्षित हैं, पिछले दस वर्षों से लगातार समाज सेवा और मजदूर कल्याण के कार्यों में सक्रिय हैं। उन्होंने विभिन्न राज्यों के मजदूर संगठनों को एक सूत्र में पिरोने में अहम भूमिका निभाई है। मजदूरों के हक़ की आवाज़ बुलंद करते हुए उन्होंने कई बार शासन-प्रशासन तक उनकी समस्याओं को पहुँचाया और समाधान के लिए निरंतर संघर्ष किया है।

उनकी निष्ठा, संगठन क्षमता और जनहित के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। समारोह में शहर के कई गणमान्य नागरिक, समाजसेवी और मजदूर संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

गीता सोनी ने सम्मान ग्रहण करते हुए कहा कि यह पुरस्कार उनके लिए नहीं, बल्कि हर उस मजदूर बहन-भाई के लिए है जो पसीने से समाज की नींव मजबूत करता है। गीता सोनी की इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर राज्य कर्मचारी संघ के अनुभव तिवारी, भारतीय मजदूर संघ जांजगीर चांपा के अध्यक्ष प्रमोद कुर्रे, जिला मंत्री संजय चौहान व कोषाध्यक्ष रमेश साहू ने शुभकामनाएं व्यक्त की हैं।

प्लास्टिक कचरा ,जल निकासी साधनों को चोक करता है- भयानक परिणाम मानवीय जीव खुद भुगतता है जलवायु परिवर्तन से भारी नुकसान व जनहानि के दोषी हम मानवीय जीव हैं

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया

वैश्विक स्तरपर दुनियां का हर देश जलवायु परिवर्तन व अनेक शहरों नगरों में जल जमाव से बुरी तरह पीड़ित हैं, जिसका समाधान करने के लिए पेरिस समझौते से लेकर अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर समस्या का स्थाई हल निकालने पर मंथन होता रहता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र, मेरा मानना है कि इसका स्थाई समाधान हम मानवीय योनि की दिनचर्या बदलने पर निर्भर है, यानें हम अगर प्राकृतिक संसाधनों से छेड़छाड़ उनके अवैध दोहन छोड़ने का संकल्प करें तथा जल जमाव का महत्वपूर्ण कारण सिंगल यूस प्लास्टिक का उपयोग करना छोड़ दें, तो हर देश को जलवायु परिवर्तन व जल जमाव का स्थाई समाधान मिल जाएगा। मैं आज इन दोनों विषयों पर आर्टिकल लिखने का मानस इसलिए बनाया क्योंकि, मेरे एक व्हाट्सएप ग्रुप में एक पोस्ट आया जिसपर गटर से निकली हुई पानी की प्लास्टिक खाली बोतल प्लास्टिक का कचरा व सिंगल यूस प्लास्टिक भारी मात्रा में उस गटर से निकली पड़ी थी और पोस्ट में लिखा था बारिश के पानी का जल भराव तो सबको दिखता है, जनहानि भी होती है परंतु इसका कारण अपनी गलती किसी को नहीं दिखती, बस! मैंने उसे देखकर कोट करके लिखा आज इसी विषय पर आर्टिकल लिखना तय है। मेरा मानना है कि जलवायु परिवर्तन से दुर्गति व नगरों में जल जमाव दोनों समस्याएं मानवीय देन है। अगर हम प्राकृतिक संसाधनों का अवैध खनन दोहन बंद कर व सिंगल यूस प्लास्टिक का उपयोग बंद कर दें तो इस भीषण समस्या से निदान पा सकते हैं हालांकि इन दोनों समस्याओं पर नियंत्रित करने के लिए प्रत्येक देश सहित भारत में भी सख्त कानून नियम विनियम बने हुए हैं जिसमें 19 चीजों पर सख्त बैन लगाया गया है, व सजा का भी प्रावधान है, फिर भी हम इन कानून नियमों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, तो जल जल जमाव के दोषी हम खुद हैं। चूंकि प्लास्टिक कचरा जल निकासी साधनों को चोक करता है, जिसके भयानक परिणाम मानवीय जीव खुद भुगतता है, व जल भराव जलवायु परिवर्तन से भारी नुकसान व जनहानि के दोषी हम मानवीय जीव ख़ुद ही हैं इसलिए आज हम मीडिया उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा व सिंगल यूस प्लास्टिक बैन कानूनों नियमों विनियमों का पालन करना हर मानवीय जीव का परम कर्तव्य है।

साथियों बात अगर हम जल जमाव का जिम्मेदार प्लास्टिक कचरे की करें त,केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने दिल्ली में हुई मूसलाधार बारिश के बाद जलजमाव के लिए प्लास्टिक कचरे से अटे नालों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने इसके साथ ही दिल्ली सरकार की भी आलोचना की। बता दें, सीजन की पहली भारी बारिश ने दिल्ली में जलजमाव वाली सड़कों, अंडरपासों, पानी में फंसे वाहनों और लंबे ट्रैफिक जाम को फिर से जीवित कर दिया। कई लोगों ने शहर की जल निकासी व्यवस्था पर निराशा व्यक्त की। मेरा मानना है कि इसमें जन्म मानस भी दोषी है क्योंकि वे कानूनी बैन के बावजूद सिंगल प्लास्टिक यूस कर रहे हैं। उन्होंने भारत जलवायु शिखर सम्मेलन में कहा, हमने एकल- उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा दिया और दिल्ली सरकार से कार्रवाई करने को भी कहा। हमने दिल्ली सरकार के उद्योग विभाग से इन (एकल-उपयोग प्लास्टिक विनिर्माण) इकाइयों को बंद करने के लिए कई बार कहा है।उन्होंने कहा कि इन इकाइयों ने न केवल पर्यावरणीय खतरों में योगदान दिया है, बल्कि औद्योगिक आपदाओं का भी अनुभव किया।बता दें , जल जमाव का मुख्य कारण पॉलिथीन के कारण नालियों का जाम होना है। हमें व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव लाने की जरूरत है और यह स्थानीय

सरकार का भी हिस्सा होना चाहिए। जलजमाव के लिए प्लास्टिक कचरा अति सख्त जिम्मेदार है।

साथियों बात अगर हम सिंगल यूस प्लास्टिक को जानने की करें तो, ऐसी प्लास्टिक जो सिर्फ एक ही बार इस्तेमाल के लायक को उसे सिंगल यूज प्लास्टिक कहा जाता है। जैसे- प्लास्टिक की थैलियां, प्याले, प्लेट, छोटी बोतलें, स्ट्रॉ और कुछ पाउच सिंगल यूज प्लास्टिक हैं।इसलिए इस तरह के प्लास्टिक को एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दिया जाता है। दरअसल आधी से ज्यादा इस तरह की प्लास्टिक पेट्रोलियम आधारित उत्पाद होते हैं। इनके उत्पादन पर खर्च बहुत कम आता है। यही वजह है कि रोजाना के बिजनस और कारोबारी इकाइयों में इसका इस्तेमाल खूब होता है।उत्पादन पर इसके भले ही कम खर्च हो लेकिन फेंके गए प्लास्टिक के कचरे, उसकी सफाई और उपचार पर काफी खर्च होता है।सिंगल यूज प्लास्टिक के अंदर जो रसायन होते हैं, उनका इंसान और पर्यावरण के स्वास्थ्य पर काफी बुरा असर पड़ता है। प्लास्टिक की वजह से मिट्टी का कटाव काफी होता है। इसके अंदर का केमिकल बारिश के पानी के साथ जलाशयों में जाता है, जो काफी खतरनाक है। हम खुद भी गौर करें। मार्केट में ऐसी चीजों का चलन बहुत आम हो गया है। हम खुद बाजार जाएं तो ना चाहते हुए भी कुछ एक आईटम्स ऐसे ले ही आते हैं। बहुत सारे प्रोडक्ट्स में गत्ते के ऊपर प्लास्टिक रैप की रहती है जिसको कोई देखता भी नहीं है और फेंक देता है। ऐसी ही सब चीजें आती हैं इसके अंतर्गत।1 जुलाई 2022 से भारत में सिंगल यूज प्लास्टिक वाली वस्तुओं पर बैन लगाया गया है।इनमें 100 माइक्रोन से कम मोटाई के प्लास्टिक बैनर, गुब्बारा, फ्लैग, कैंडी, ईयर बड्स के स्टिक और मिठाई बॉक्स में यूज होने वाली क्लिंग रैप्स भी शामिल हैं।इसके साथ ही 120 माइक्रॉन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक बैग को भी 31 दिसंबर 2022 से बंद कर दिया गया है।खतरनाक प्रभाव- अव्यवस्थित डिस्पोजल नाली/सीवेज सिस्टम को चोक करते हैं। खुले में डिस्पोजल गाय और अन्य ऐसे जीवों द्वारा निगले जाने पर प्राणघातक बनते हैं।जल स्रोतों में डंप होने पर जलीय पारिस्थितिकी को विषैला करत है।जलाए जाने पर वायुप्रदूषण का कारण बनते हैं।हर प्लास्टिक रिसाईकल भी नहीं किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम स्वच्छ भारत अभियान मिशन में प्लास्टिक कचरा सबसे बड़ी बाधा बनने की करें तो स्वच्छ भारत अभियानमें पॉलीथीन सबसे बड़ी बाधा है, इसीलिए लोगों से प्लास्टिक मुक्त भारत की मुहिम में योगदान देने के लिए बाजार से खरीदारी के लिए पॉलीथीन के बजाय कपड़े का थैला इस्तेमाल करने की अपील भी की जाती रही है।दरअसल एक समय था, जब हम बाजार से कोई भी सामान लाने के लिए कपड़े का थैला लेकर ही घर से निकलते थे लेकिन समय के साथ-साथ अपनी सहूलियतों के हिसाब से हमने पॉलीथिन को इतना महत्व दिया कि कपड़े का थैला लेकर बाजार जाना आज की पीढ़ी को तो अपनी शान के खिलाफ लगता है।प्लास्टिक की एक थैली को नष्ट होने में 20 से 1000 साल तक लग जाते हैं जबकि एक प्लास्टिक की बोतल को 450 साल, प्लास्टिक कप को 50 साल और प्लास्टिक की परत वाले पेपर कप को नष्ट होने में करीब 30 साल लगते हैं। बहरहाल, प्लास्टिक प्रदूषण से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय यही है कि लोगों को इसके खतरों के प्रति सचेत और जागरूक करते हुए उन्हें प्लास्टिक का उपयोग न करने को प्रेरित किया जाए।

साथियों बात अगर हम प्लास्टिक कचरे के खिलाफ़ सरकार के सख्त कदम उठाने की करें तो, सरकार तो अपनी ओर से सख्त कदम उठा रही है। आमजन को भी सिंगल यूज प्लास्टिक के दुप्रभावों को समझने की जरूरत है। साथ ही, सरकार को व्यापक स्तर पर जनजागरुकता अभियान चलाने की आवश्यकता है, क्योंकि अधिकांश लोग अभी भी इसे लेकर अनभिज्ञ हैं। वो केवल अपने कंफर्ट को ढूंढते हैं।कहीं ऐसा न हो की सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक केवल उगाही का जरिया बनकर रह जाए। कहीं ऐसा न हो की चोर रास्तों से सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल जारी रहे और सरकार की सारी कवायद धरी की धरी रह जाए। भारत सरकार का सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक का कदम साहसिक है, क्योंकि यह बेहद जोखिम भरा कदम है। अभी सरकार ने सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्लेमाल पर एक लाख रुपए जुर्माना और 7 साल की सजा का प्रावधान किया है। असली चुनौती इसे गंभीरता से लागू करने की है।प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021, 30 सितंबर, 2021 से 75 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक कैरी बैग के विनिर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर भी प्रतिबंध लगाते हैं, तथा 31 दिसंबर, 2022 से 120 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक कैरी बैग के विनिर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर भी प्रतिबंध लगाते हैं।पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 16 फरवरी, 2022 को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2022 के रूप में प्लास्टिक पैकेजिंग परविस्तारित उत्पादकों की जिम्मेदारी पर दिशा-निर्देश भी अधिसूचित किए हैं। विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी (ईपीआर) किसी उत्पाद के जीवन के अंत तक उसके पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन के लिए उत्पादक की जिम्मेदारी है। दिशा-निर्देश प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे की सर्कुलर अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, प्लास्टिक पैकेजिंग के नए विकल्पों के विकास को बढ़ावा देने और व्यवसायों द्वारा टिकाऊ प्लास्टिक पैकेजिंग की ओर बढ़ने के लिए अगले कदम प्रदान करने के लिए रूपरेखा प्रदान करेंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जल जमाव जलवायु परिवर्तन से भारी नुकसान व जनहानि के दोषी हम मानवीय जीव हैं।प्लास्टिक कचरा, जल निकासी साधनों को चोक करता है- भयानक परिणाम मानवीय जीव खुद भुगतता है।प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा व सिंगल यूस प्लास्टिक बैन कानूनों नियमों विनियमों का पालन करना, हर मानवीय जीव का परम कर्तव्य है।

एलआईसी को अडानी का पक्ष लेने के लिए मजबूर किया मोदी सरकार ने

थिरुमारन, अनुवाद : संजय पराते

यह बात सब लोग जानते है कि मोदी सरकार बड़े कॉर्पोरेट घरानों का पक्ष लेती है। यह भी सबको मालूम है कि अडानी समूह इस आकर्षक अंदरूनी मंडली का हिस्सा है। इसकी पुष्टि वाशिंगटन पोस्ट के हालिया खुलासे से होती है कि केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने भारत की एक प्रमुख जीवन बीमा कंपनी, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) द्वारा अडानी समूह को बेलआउट देने की व्यवस्था की थी।

आंतरिक दस्तावेजों का हवाला देते हुए, इस अखबार ने बताया है कि इस साल मई में वित्त मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले वित्तीय सेवा विभाग ने एलआईसी को अडानी समूह की संस्थाओं द्वारा जारी किए गए 3.9 अरब डॉलर (33,000 करोड़ रुपये) मूल्य के बॉन्ड खरीदने के लिए प्रेरित किया था। यह ऐसे समय में हुआ था, जब अडानी समूह की छवि पहले से ही न्यूयॉर्क स्थित शोध फर्म हिंडनबर्ग द्वारा किए गए खुलासे से धूमिल हो चुकी थी। यह फर्म अब बंद हो चुकी है। इस फर्म ने अडानी समूह पर बाजार के नियमों के गंभीर उल्लंघन का आरोप लगाया था। अब अडानी समूह को अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा लगाए गए नए आपराधिक आरोपों का सामना करना पड़ रहा है। हिंडनबर्ग ने 2023 में आरोप लगाया था कि अडानी समूह कर्ज में काफी डूबा हुआ है और उसने अपने शेयरों के मूल्यों को कृत्रिम रूप से बढ़ाने के लिए, आपस में जुड़े पक्षों के बीच शेयर व्यापार के एक नेटवर्क का इस्तेमाल किया था, जिससे उसे और भी अधिक कर्ज जुटाने में मदद मिली। गौरतलब है कि ये गंभीर आरोप विदेशों में, कर-स्वर्ग (टैक्स हेवन) में स्थित कुछ ₹निवेशकों₹ की अस्पष्ट पहचान पर केंद्रित थे, जो प्रतिभूति बाजार नियमों का गंभीर उल्लंघन था।

हालाँकि इन आरोपों को बाज़ार नियामक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने वित्त मंत्रालय की मदद से खारिज कर दिया था, फिर भी 2024 में अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा अडानी समूह पर नए आरोप लगाए गए। इन एजेंसियों ने समूह के प्रमुख गौतम अडानी और उनके सहयोगियों पर रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी और अन्य भ्रष्ट आचरण का आरोप लगाया। यही वह संदर्भ है, जिसमें भारतीय वित्त मंत्रालय ने एलआईसी से अडानी के बॉन्ड में निवेश करने का आग्रह किया।

उसी महीने, अडानी समूह की बंदरगाह सहायक कंपनी द्वारा जारी किए गए 58.5 करोड़ डॉलर (करीब 4,950 करोड़ रुपये) के बॉन्ड का एलआईसी एकमात्र ग्राहक बन गया। ये बॉन्ड मौजूदा कर्ज़ के पुनर्वित्त के लिए जारी किए गए थे।

वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, दस्तावेज़ों से पता चला है कि वित्त मंत्रालय, नीति आयोग और एलआईसी ने इस विचार-विमर्श में भाग लिया था। वित्त मंत्रालय ने बेशर्मी से इस दिग्गज का पक्ष लिया और उसे ₹दूरदर्शी उद्यमी₹ करार दिया। योजना का ₹रणनीतिक उद्देश्य₹ ₹अडानी समूह में विश्वास का संकेत₹ देना और उससे भी ज़्यादा, ₹अन्य निवेशकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना₹ था।

मंत्रालय ने एलआईसी को यहां तक सुझाव दिया कि अडानी के बॉन्ड, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा उसकी ओर से जारी किए गए भारत सरकार के बॉन्ड की तुलना में काफ़ी ज़्यादा आकर्षक थे! एलआईसी पर लंबे समय से नज़र रखने वालों के लिए, यह संस्थान के निवेश संबंधी दिशा निर्देशों से से एक गंभीर विचलन है। निवेश संबंधी ये दिशा निर्देश काफी कठोर हैं, जो उच्च प्रतिफल की तुलना में सुरक्षा को तरजीह देते हैं और इसीलिए, इसके निवेश का एक बड़ा हिस्सा वैधानिक प्रतिभूतियों में, ज़्यादातर सरकारी ऋण में, था। यह आश्चर्यजनक नहीं था, क्योंकि एलआईसी करोड़ों गरीब और साधारण शेयर धारकों के लिए एक आश्रय स्थल है, जिनके पास ₹छोटी-सी₹ जीवन बीमा पॉलिसियाँ हैं, जिनके लिए सुरक्षा और संरक्षा ज़्यादा मायने रखती है, बजाय उच्च प्रतिफल के भ्रम से, जिसमें उच्च जोखिम भी शामिल है।

दरअसल, ऐसे समय में जब निवेशकों के बीच समूह की व्यवहार्यता गंभीर रूप से सवालों के घेरे में थी, सरकार ने एलआईसी को इन बॉन्ड्स में निवेश करने के लिए प्रेरित करने हेतु अपना ज़ोर

लगाया। दरअसल, एलआईसी बाज़ार में सिर्फ़ एक और निवेशक नहीं थी, न ही ये बॉन्ड्स सिर्फ़ एक और व्यावसायिक मौका था। इसके बजाय, एलआईसी को एक प्रमुख निवेशक के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था ताकि अन्य वित्तीय खिलाड़ियों – स्थानीय और विदेशी दोनों – को अडानी समूह की धन उगाहने वाली योजनाओं की ओर आकर्षित किया जा सके। वास्तव में, हुआ भी यही। एलआईसी द्वारा अडानी बॉन्ड्स खरीदने के एक महीने बाद, अमेरिका स्थित एथीन इंश्योरेंस ने अडानी समूह के बंदरगाह उद्यम द्वारा जारी किए गए 75 करोड़ डॉलर मूल्य के बॉन्ड्स खरीदे। मीडिया रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि मई 2025 में एलआईसी द्वारा बॉन्ड खरीद के बाद से अडानी समूह ने कम से कम 10 अरब डॉलर मूल्य के बॉन्ड जारी किए हैं। ऐसी खबरें हैं कि अडानी समूह के कम से कम 13,750 करोड़ रुपये (1.625 अरब डॉलर) मूल्य के बॉन्ड्स घरेलू निवेशकों द्वारा खरीदे गए हैं, जिनमें म्यूचुअल फंड, बीमा कंपनियां और बैंक शामिल हैं।

गौरतलब है कि अन्य निवेशकों में से कोई भी -- जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र का अग्रणी बैंक एसबीआई जैसी संस्था शामिल हैं, और न ही आईसीआईसीआई या एचडीएफसी जैसी निजी संस्थाएं -- के पास ऐसा निवेश कोष है, जो एलआईसी का मुकाबला कर सके। एलआईसी का जीवन कोष -- वह विशाल पूल, जिसमें बीमा प्रीमियम आता है और जिससे सभी देनदारियों को पूरा किया जाता है -- मार्च 2024 में 46 लाख करोड़ रुपये का था। भारत में कोई भी भारतीय वित्तीय संस्थान या दुनिया भर में कोई भी जीवन बीमाकर्ता एलआईसी जितना वजन नहीं रखता है। यह कोष, जो पिछले कुछ वर्षों में लगभग 10% सालाना की दर से बढ़ रहा है, वही एलआईसी को बाजार में ताकत प्रदान करता है। इस प्रकार, जब एलआईसी जैसी संस्था को सरकार द्वारा अडानी बॉन्ड में निवेश करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो अन्य निवेशक जो शुरू में अनिच्छुक थे, अब अडानी समूह की इसी तरह की पेशकशों के लिए आकर्षित हो रहे हैं।

इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि एलआईसी ने वाशिंगटन पोस्ट की खबर का खंडन किया है और इस अखबार द्वारा कथित योजना में उसकी भागीदारी दिखाने वाले किसी भी दस्तावेज़ के अस्तित्व से इनकार किया है। उसने दावा किया है कि उसके निवेश पूरी तरह से उसके बोर्ड के फैसलों पर आधारित थे।

भारतीय व्यावसायिक मीडिया ने बड़े पैमाने पर अडानी और मोदी का पक्ष लिया है। गौरतलब है कि एलआईसी के फैसले को सही ठहराने की हर संभव कोशिश करने के बावजूद, इसने सबसे अहम इस सवाल को काफी हद तक नज़रअंदाज़ कर दिया है : भारत की सबसे बड़ी वित्तीय संस्था के व्यावसायिक फैसलों का निर्देशन सरकार को क्यों करना चाहिए? यह कहना कि अडानी समूह, जो अब भारतीय उद्योग के बड़े हिस्से -- बंदरगाहों, सड़कों, हवाई अड्डों, सीमेंट और अब डेटा सेंटरों (गूगल के सहयोग से) में एक प्रमुख खिलाड़ी है -- में एलआईसी का निवेश व्यावसायिक रूप से समझदारी भरा है, बिल्कुल बेतुका है।

इसी तरह यह तर्क भी दिया जाता है कि अडानी समूह में एलआईसी का निवेश आईटीसी, टाटा या रिलायंस समूहों में उसके निवेश का एक अंश मात्र है। लेकिन ये अन्य समूह काफी पुराने हैं और इन संस्थाओं में एलआईसी का निवेश काफी लंबी अवधि में किया गया है। इसके विपरीत, अदाणी समूह का तीव्र उदय 2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के साथ हुआ। चूँकि यह हर मोड़ पर घोटालों से घिरा रहा है, इसलिए लंबी अवधि में इस तरह के विकास की स्थिरता पर संदेह करने के लिए हर वह कारण मौजूद है, जो एलआईसी जैसे निवेशक के लिए रुचिकर होगा। जीवन बीमाकर्ता आमतौर पर अपनी दीर्घकालिक देनदारियों के अनुरूप दीर्घकालिक निवेश चाहते हैं। व्यावसायिक मीडिया हमें यह विश्वास दिलाना चाहता है कि ये एलआईसी के लिए केवल एक अच्छा व्यावसायिक मौका था। इसके विपरीत, ऐसे निवेशों से उत्पन्न दीर्घकालिक जोखिम और करोड़ों भारतीय पॉलिसीधारकों से किए गए अपने वादे को पूरा करने की उसकी क्षमता ही एलआईसी के लिए प्रासंगिक हैं।

मोदी सरकार ने अडानी समूह के मामलों की किसी भी समन्वित जाँच को लगातार रोका है। अडानी समूह पर लगे आरोपों में कई तरह के उल्लंघन शामिल हैं – नकली बिलिंग से लेकर बाज़ार नियमों के गंभीर उल्लंघन तक के। यह ताज़ा मामला है, जब एक प्रमुख केंद्रीय मंत्रालय ने देश के सबसे बड़े वित्तीय संस्थान को पॉलिसीधारकों की भावी पीढ़ियों के धन को अडानी समूह में निवेश करने का निर्देश दिया है। यह एक ऐसा कारण है कि बड़े व्यवसायों और सरकार चलाने वालों के बीच सांठगांठ को तोड़ने के लिए एक व्यापक जाँच ज़रूरी है। बेहतर होगा कि यह जांच एक संयुक्त संसदीय समिति द्वारा की जाएं।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

क्लच चेस का सबक: किंग नहीं, चरित्र मायने रखता है

शतरंज की बिसात पर घमंड की दीवार ढह गई, और शालीनता की नींव मजबूत खड़ी हो गई। 28 अक्टूबर 2025, सेंट लुइस चेस क्लब का माहौल तनाव से भरा था। क्लच चेसः चैंपियंस शोडाउन का पहला दिन। दुनिया के नंबर दो खिलाड़ी हिकारू नाकामुरा काले मोहरों के साथ सामने थे। उनके सामने थे 19 साल के डी. गुकेस, वर्तमान विश्व चैंपियन। तीन हफ्ते पहले हिकारू ने गुकेस का किंग दर्शकों की भीड़ में उछालकर एक संदेश दिया था—मैं जीतता हूं, और जीत का जश्न ऐसे मनाता हूं। लेकिन आज बोर्ड ने उलटा जवाब दिया। गुकेस ने 1.5-0.5 से मैच जीता। पहला गेम सफेद मोहरों से हिकारू को पोजिशनल दबाव में जकड़ा, दूसरा गेम ड्रॉ रहा। जीत के बाद हिकारू उठे और चले गए। गुकेस रुके। उन्होंने हर मोहरा अपनी जगह पर रखा—सफेद भी, काले भी। कोई मुस्कान नहीं, कोई इशारा नहीं, सिर्फ एक साधारण काम जो बोर्ड की गरिमा को बनाए रखता है। यही छोटा सा अंतर दो खिलाड़ियों के चरित्र को अलग करता है।

यह कहानी सिर्फ एक मैच की नहीं है। यह दो अलग-अलग दृष्टिकोणों की टक्कर है। हिकारू नाकामुरा शतरंज को मनोरंजन का माध्यम मानते हैं। उनकी हर जीत एक शो है। 5 अक्टूबर 2025 को आर्लिंगटन के ई-स्पोर्ट्स स्टेडियम में चेकमेट इवेंट हुआ। बुलेट फॉर्मेट, एक मिनट प्रति खिलाड़ी। हिकारू ने गुकेस को बैक-रैंक चेकमेट दिया। टीम अमेरिका 5-0 से जीती। लेकिन जीत का अंतिम क्षण हिकारू ने किंग उठाया और दर्शकों की ओर फेंक दिया। भीड़ ने तालियां बजाईं। कैमरे ने पल कैद किया। हिकारू मुस्कुराए। उनके लिए यह शोमैनशिप थी, दर्शकों को जोड़ने का तरीका। लेकिन गुकेस के लिए यह बोर्ड पर खेल था। वे हारे, लेकिन उठे नहीं। बोर्ड सजाया, हाथ मिलाया, मुस्कुराए और चले गए। कोई शब्द नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं। यही उनकी ताकत है—चुप रहकर जवाब देना।

क्लच चेस टूर्नामेंट दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित आयोजन है। चार खिलाड़ीः मैग्नस कार्लसन, हिकारू नाकामुरा, फेबियानो कारुआना और डी. गुकेस। तीन दिन, डबल राउंड-रॉबिन। हर दिन पॉइंट्स दोगुने होते हैं। पहला दिन एक पॉइंट प्रति जीत। गुकेस की शुरुआत कमजोर रही। पहले राउंड में कार्लसन ने उन्हें 1.5-0.5 से हराया। लेकिन दूसरा राउंड हिकारू के खिलाफ था। गुकेस काले मोहरों से खेले। सिसिलियन डिफेंस। हिकारू ने आक्रामक शुरुआत की, लेकिन गुकेस ने पोजिशन को मजबूत बनाया। मध्य खेल में हिकारू का समय कम होने लगा। गुकेस ने शांतिपूर्वक दबाव बढ़ाया। अंत में हिकारू की स्थिति बिगड़ गई। पहला गेम गुकेस का। दूसरा गेम ड्रॉ। 1.5-0.5। फिर तीसरा राउंड कारुआना के खिलाफ। गुकेस ने दोनों गेम जीते। 2-0। कुल मिलाकर दिन का अंत 4 अंकों के साथ। शीर्ष पर गुकेस। कार्लसन 3.5 पर, हिकारू 3 पर।

हर मैच के बाद खिलाड़ी बोर्ड छोड़ते हैं। हिकारू जीतते हैं तो उत्साह दिखाते हैं, हारते हैं तो चुपचाप निकल जाते हैं। लेकिन गुकेस हर बार रुकते हैं। मोहरे सजाते हैं। यह छोटी सी आदत उनकी परवरिश की झलक है। चेन्नई में जन्मे गुकेस ने 12 साल की उम्र में ग्रैंडमास्टर का खिताब जीता। 2024 में डिंग लिरेन को हराकर विश्व चैंपियन बने। उनकी सफलता का राज उनकी शांत स्वभाव है। वे कहते हैं कि शतरंज में जीत और हार आती-जाती रहती है, लेकिन बोर्ड पर सम्मान हमेशा रहना चाहिए। हिकारू का तरीका अलग है। वे स्ट्रीमिंग करते हैं, मीम्स बनाते हैं, दर्शकों से जुड़ते हैं। उनके लिए शतरंज सिर्फ खेल नहीं, ब्रांड है। लेकिन यही ब्रांड कभी-कभी खेल की गरिमा पर भारी पड़ जाता है।

5 अक्टूबर का किंग फेंकना सिर्फ एक घटना नहीं थी। यह एक प्रवृत्ति का प्रतीक था। आधुनिक शतरंज में मनोरंजन बढ़ रहा है। ई-स्पोर्ट्स स्टाइल आयोजन, थिएट्रिक्स, ड्रामा। आयोजक चाहते हैं कि दर्शक बढ़ें, स्पॉन्सर आएं। हिकारू इसमें माहिर हैं। लेकिन गुकेस पुरानी परंपरा के खिलाड़ी हैं। उनके लिए बोर्ड पवित्र है। जीत हो या हार, मोहरे हमेशा अपनी जगह पर लौटने चाहिए। क्लच चेस में उनकी यह आदत कैमरों में कैद हुई। हिकारू के जाते ही गुकेस ने बोर्ड सजाना शुरू किया। हर मोहरा सही जगह पर। लोग इसे क्लास और क्रास का अंतर बता रहे हैं। एक खिलाड़ी जीत का जश्न मनाता है, दूसरा जीत के बाद भी जिम्मेदारी निभाता है।

शतरंज का इतिहास ऐसे ही विपरीत चरित्रों से भरा है। बॉबी फिशर आक्रामक थे, लेकिन बोर्ड पर पूरी तरह समर्पित। अनातोली कार्पोव शांत थे, लेकिन हर चाल में गहराई। हिकारू और गुकेस आज की पीढ़ी के दो छोर हैं। हिकारू अमेरिकी शतरंज की चमक हैं। वे तेज हैं, आक्रामक हैं, दर्शकों को पसंद हैं। गुकेस भारतीय शतरंज की नई पीढ़ी हैं। वे शांत हैं, गहरे हैं, परंपरा को जीते हैं। 5 अक्टूबर को हिकारू ने किंग फेंककर कहा—मैं स्टार हूं। 28 अक्टूबर को गुकेस ने बोर्ड सजाकर कहा—मैं खिलाड़ी हूं। बोर्ड ने गुकेस की बात मानी।

टूर्नामेंट अभी दो दिन बाकी है। दूसरा दिन डबल पॉइंट्स का। गुकेस की बढ़त है, लेकिन कार्लसन और हिकारू पीछे नहीं हटेंगे। हिकारू शायद अगले मैच में और आक्रामक खेलेंगे। लेकिन गुकेस का खेल बदलता नहीं। वे हर हाल में शांत रहते हैं। उनकी तैयारी गहरी होती है। सिसिलियन डिफेंस में उन्होंने हिकारू की आक्रामकता को पोजिशनल मजबूती से रोका। समय प्रबंधन में हिकारू फंस गए। गुकेस ने दबाव बनाए रखा। यह सिर्फ तकनीक नहीं थी, धैर्य था। हिकारू जल्दबाजी में गलती करते हैं जब दबाव बढ़ता है। गुकेस दबाव में भी शांत रहते हैं।

यह मैच शतरंज की दिशा पर भी सवाल उठाता है। क्या खेल को मनोरंजन बनाना जरूरी है? क्या थिएट्रिक्स दर्शक बढ़ाते हैं या खेल की आत्मा को कमजोर करते हैं? हिकारू का किंग फेंकना आयोजकों की योजना का हिस्सा था। लेकिन गुकेस ने उसे नजरअंदाज किया। वे बोर्ड पर जवाब देते हैं। क्लच चेस में उनकी एक्यूरेसी 80 प्रतिशत से ऊपर रही। हिकारू समय की कमी में फंसे। यह तकनीकी जीत थी, लेकिन व्यवहार की भी। गुकेस ने साबित किया कि आप बिना शोर मचाए भी जीत सकते हैं।

गुकेस की यात्रा प्रेरणा है। चेन्नई की गलियों से विश्व चैंपियन तक। उनके कोच कहते हैं कि गुकेस कभी जल्दबाजी नहीं करते। हर गेम के बाद वे बोर्ड सजाते हैं। यह आदत बचपन से है। उनकी मां बताती हैं कि घर पर भी वे खिलौनों को सही जगह रखते थे। यह छोटी आदत बड़ा संदेश देती है—जीत के बाद भी जिम्मेदारी। हिकारू की दुनिया अलग है। वे स्ट्रीम पर लाखों दर्शक जोड़ते हैं। उनकी जीत मीम्स बनती है। लेकिन हार के बाद वे चुप हो जाते हैं। गुकेस हार के बाद भी बोर्ड सजाते हैं। यही स्थिरता उन्हें अलग बनाती है।

टूर्नामेंट का दूसरा दिन महत्वपूर्ण होगा। अगर गुकेस बढ़त बनाए रखते हैं, तो यह भारतीय शतरंज का नया अध्याय होगा। विशी आनंद के बाद गुकेस दूसरा विश्व चैंपियन हैं। लेकिन उनका तरीका अलग है। आनंद शांत थे, लेकिन गुकेस और युवा हैं। उनकी शालीनता नई पीढ़ी को प्रेरित कर रही है। हिकारू जैसे खिलाड़ी मनोरंजन लाते हैं, लेकिन गुकेस गरिमा लाते हैं। शतरंज को दोनों की जरूरत है। लेकिन जब गरिमा और मनोरंजन में टक्कर होती है, तो बोर्ड फैसला करता है। 28 अक्टूबर को बोर्ड ने गुकेस का साथ दिया।

शतरंज बुद्धि का खेल है, लेकिन चरित्र का भी। हिकारू ने किंग फेंककर दिखाया कि जीत कैसे मनाई जाती है। गुकेस ने बोर्ड सजाकर दिखाया कि जीत के बाद क्या किया जाता है। एक की जीत अस्थायी थी, दूसरी का सम्मान स्थायी। बोर्ड पर सच्चा राजा वही जो चुपचाप खेलता है, चमकता नहीं। गुकेस ने यह साबित कर दिया। अब बाकी दिन बताएंगे कि क्या यह जीत टूर्नामेंट की दिशा बदल देगी। लेकिन व्यवहार का सबक तो बोर्ड ने दे दिया। शतरंज की बिसात पर घमंड हारता है, शालीनता जीतती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बिहार : संघ-भाजपा की बदहवासी

(आलेख : राजेंद्र शर्मा)

बिहार में चुनाव अभियान अपने पूरे जोर पर तो छठ के पर्व के बाद ही आएगा। लेकिन, उससे पहले ही सत्ताधारी भाजपा-जदयू गठजोड़ की और उसमें भी खासतौर पर भाजपा की घबराहट और बदहवासी, साफ-साफ दिखाई देने लगी है। इस बदहवासी का इससे बड़ा संकेतक क्या होगा कि चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद, प्रधानमंत्री मोदी ने जो पहली दो जनसभाएं की हैं, उनमें वह चुनाव प्रचार की किसी व्यवस्थित और मतदाताओं की नजर में गंभीर थीम पर चलने के बजाए, मुद्दों को पकड़ने के लिए जैसे अंधेरे में हाथ मारते नजर आए। इसी का सबूत था कि उस बिहार में, जहां डिजिटल साक्षरता और युवाओं के लिए रोजगार, दोनों का ही स्तर बड़े हिंदी भाषी राज्यों में भी संभवतः सबसे कम है, प्रधानमंत्री युवाओं को "रील्स बनाने" के जरिए कमाई का रास्ता ही नहीं दिखा रहे थे, डॉटा चाय से भी सस्ता करा देने के लिए श्रेय का दावा भी कर रहे थे। और प्रधानमंत्री यह सब तब कर रहे थे, जबकि देश की निजी संचार इजारेदारियों ने अपने प्रतिस्पर्द्धियों को बाजार से बाहर करने और दो कंपनियों की लगभग पूर्ण इजारेदारी कायम करने के बाद, पिछले कुछ महीनों में ही डॉटा की दरों में अच्छी-खासी बढ़ोतरी की है।

हैरानी की बात नहीं है कि बिहार की समस्याओं के प्रधानमंत्री के इस डिजिटल-रील आधारित समाधान का सिर्फ विरोधियों द्वारा ही नहीं, आम लोगों द्वारा भी खूब मजाक बनाया जा रहा है। यही नहीं इसने सत्ताधारी गठजोड़ और उसके वास्तविक अगुआ के रूप में भाजपा की, इसकी आलोचनाओं को और धार दे दी है कि उनके पास, बिहार की बेरोजगारी, पलायन और गरीबी का, कोई वास्तविक समाधान ही नहीं है। सभी जानते हैं कि तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन तो इसे शुरू से अपने प्रचार का एक केंद्रीय मुद्दा बनाए ही रहा है, प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी भी इसे ही चुनाव का मुख्य मुद्दा बना रही है। भाजपा के दुर्भाग्य से मोदी के बाद नंबर-2 माने जाने वाले, अमित शाह द्वारा एक समाचार चैनल को दिए गए एक बहुप्रचारित साक्षात्कार में किए गए इस दावे ने इन आलोचनाओं की आग में और तेल डालने का ही काम किया है कि बिहार में उद्योग नहीं लग सकते हैं, क्योंकि गुजरात के विपरीत, बिहार में जमीन की कमी है! सवाल पूछा जा रहा है कि क्या विकास की उनकी संकल्पना में बिहार का भविष्य, सस्ते मजदूरों का गुजरात आदि दूसरे राज्यों के लिए निर्यात करने तक ही सीमित है? अगर प्रधानमंत्री मोदी के प्रचार में यह बदहवासी बिहार के लिए डिजिटल-रील समाधान की ओर उनके लपकने में दिखाई दे रही है, तो उनके नंबर-2 अमित शाह के प्रचार में इस बदहवासी का और दयनीय रूप देखने को मिल रहा है। शाह, अपने से उम्र और राजनीतिक अनुभव में आधे, तेजस्वी यादव का मुकाबला करने के लिए, उनके उठाए मुद्दों की खुल्लमखुल्ला नकल करते नजर आ रहे हैं। ताजातरीन यह कि शाह हाल के अपने बयानों में तेजस्वी का 'पढ़ाई, दवाई, सिंचाई' आदि का चिर-परिचित नारा, बिना किसी खास बदलाव के कमोबेश ज्यों का त्यों दोहराते देखे गए हैं।

और इस बदहवासी का एक अतिरिक्त कारण यह लगता है कि बिहार की विशेष परिस्थितियों में, जिनमें औपचारिक रूप से नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ने की मजबूरी और नीतीश कुमार की जद-यू का अल्पसंख्यकों से वोट की

उम्मीद पूरी तरह से छोड़ने के लिए तैयार नहीं होना सबसे खास हैं, भाजपा का शीर्ष नेतृत्व खुलकर और व्यवस्थित तरीके से प्रचार की उन बहुसंख्यकवादी सांप्रदायिक थीमों का प्रयोग नहीं कर पा रहा है, जिनके प्रयोग को पिछले आम चुनाव से उसने अपने प्रचार का मुख्य आधार ही बना रखा था।

वास्तव में खुद प्रधानमंत्री की ही अगुआई में, चुनाव से कई महीने पहले भाजपा ने अपनी खास सांप्रदायिक थीम की आजमाइश भी शुरू कर दी थी, जब खुद प्रधानमंत्री ने इससे पहले झारखंड के अपने चुनाव प्रचार की निरंतरता में, "घुसपैठियों" के खतरे का मुद्दा उछाला था और विपक्ष को "घुसपैठियों" का पैरोकार बताकर, निशाने पर लेने की कोशिश की थी। यह प्रधानमंत्री के 15 अगस्त के भाषण की निरंतरता में था, जिसमें घुसपैठ की वजह से जनसांख्यिकी ही बदल जाने का डर दिखाया गया था और इससे निपटने के लिए एक जनसांख्यिकी आयोग के गठन का एलान किया गया था।

"आपरेशन सिंदूर" के बाद के दौर में, कथित रूप से बंगलादेशी घुसपैठियों को पकड़ने और देश से बाहर निकालने के नाम पर, खासतौर पर बंगाली मुसलमानों को दिल्ली समेत अनेक भाजपा-शासित राज्यों में चुन-चुनकर निशाना भी बनाया गया था और इसके जरिए आम तौर पर घुसपैठियों के खतरे के प्रचार को और तेज किया गया था। इसी की पृष्ठभूमि में जब बिहार में चुनाव आयोग ने अचानक, मनमाने तरीके से एसआइआर थोपा था, उसके जरूरी होने के लिए खासतौर पर "घुसपैठियों" को मतदाता सूचियों से निकालने की दलील दी गयी थी, जिसका खासतौर पर भाजपा-आरएसएस ने जोर-शोर से अनुमोदन भी किया था। बाद में जब कच्ची मतदाता सूचियों में पैंसठ लाख से ज्यादा मतदाताओं के नाम काट दिए गए, तब भी भाजपा-आरएसएस ने इसी तर्क के सहारे, वोट काटने की इस कसरत का बचाव करने की कोशिश की थी। लेकिन, जब एसआइआर के बाद अंतिम मतदाता सूचियां जारी की गयीं, चुनाव आयोग ने यह बताने से ही इंकार कर दिया कि वास्तव में, घुसपैठियों के रूप में निशानदेही कर के कितने अवैध बंगलादेशी या अन्य विदेशी प्रवासियों के नाम, मतदाता सूची से काटे गए थे। जैसा कि बाद में पत्रकारों तथा अन्य कई विश्लेषणकर्ताओं की छानबीन से साफ हो गया, चुनाव आयोग की यह चुप्पी, ऐसे कोई खास नाम ही नहीं मिलने की वजह से थी। इसने कुल मिलाकर, चुनाव आयोग की ही नहीं, संघ-भाजपा की भी "घुसपैठियों के खतरे" की पूरी कहानी को, कम से कम बिहार के संदर्भ में तो पंचर कर ही दिया।

इसके बाद तो बस, बिना किसी बहाने के खुल्लमखुल्ला मुस्लिम-विरोधी दुहाई की ही गुंजाइश बचती थी, जिसके लिए जैसा कि हमने पीछे कहा, बिहार की विशेष राजनीतिक स्थिति इजाजत नहीं देती है। फिर भी, भाजपा की ओर से केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने मुसलमानों को "नमकहराम" घोषित करने और 'इन नमकहरामों के वोट की जरूरत नहीं है' का एलान करने के साथ, अकारण खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक दुहाई का सहारा लिए जाने की शुरूआत भी की थी। इस सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, आदित्यनाथ को प्रचार के लिए लाया भी गया था। लेकिन, शुरूआत में ही यह साफ हो गया कि जद-यू के साथ तथा अन्य छोटी गैर-सांप्रदायिक पार्टियों के साथ भी गठबंधन में, संघ-भाजपा द्वारा अपनी इस तुरप का इस तरह इस्तेमाल किया जाना, अन्य पार्टियों को मंजूर नहीं होगा। लिहाजा चुनाव प्रचार के शुरूआती दौर में ही, इन आगलगाऊ प्रचारकों को किनारे लगा दिया गया बताया जाता है। खबरों के अनुसार, आदित्यनाथ के चुनाव प्रचार कार्यक्रमों को प्रचार के बाद के दौर के लिए टाल दिया गया है, जो बाद का दौर शायद अब आए ही नहीं।

नतीजा यह कि संघ-भाजपा के खेमे में ऐसी बदहवासी है, जिसका असर उनके नंबर-एक और नंबर-दो तक के प्रचार में दिखाई दे रहा है। फिर भी संघ-भाजपा की बदहवासी की यही एकमात्र वजह नहीं है कि अपना आजमूदा सांप्रदायिक हथियार आजमाने में उनके हाथ बंधे हुए हैं। उनकी बदहवासी की एक और बड़ी वजह यह है कि महागठबंधन की ओर से मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में राजद नेता, तेजस्वी यादव के नाम की घोषणा किए जाने ने, उनके चुनाव बाद के मंसूबों के लिए भी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। जैसा कि सभी जानते हैं, भाजपा चुनाव के बाद, सरकार बनाने की स्थिति में होने पर भी, नीतीश कुमार को और पांच साल के लिए मुख्यमंत्री पद सौंपने के लिए तैयार नहीं है। इसीलिए, इस बार का चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़े जाने की मजबूरी को स्वीकार करने के बावजूद, भाजपा के शीर्ष नेताओं ने एक बार भी इसका एलान करना मंजूर नहीं किया है कि नीतीश कुमार ही, उनके मोर्चे की ओर से मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हैं। उल्टे खुद अमित शाह ने एक से अधिक मौकों पर यह कहकर मुख्यमंत्री पद की नीतीश कुमार की दावेदारी पर सवालों को हवा ही दी है कि मुख्यमंत्री के नाम का फैसला, चुनाव के बाद निर्वाचित विधायकों द्वारा किया जाएगा।

जाहिर है कि महाराष्ट्र के अनुभव के बाद, जहां पूर्व-मुख्यमंत्री शिंदे के नेतृत्व में चुनाव लड़ने के बाद, जीत के बाद भाजपा के संख्याबल के नाम पर फडनवीस को मुख्यमंत्री बना दिया गया और शिंदे को उप-मुख्यमंत्री के पद से ही संतोष करना पड़ा, बिहार में भाजपा के सहयोगी दल और उनके आम समर्थक, यह मानने को तैयार नहीं हैं कि कथित रूप से नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाना और नीतीश कुमार को सत्ताधारी मोर्चे का मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाना, एक ही बात है। हैरानी की बात नहीं है कि इस मुद्दे पर भाजपा पर दबाव बढ़ाते हुए, जद-यू के अलावा सत्ताधारी गठबंधन में शामिल आरएलपी, हम आदि अन्य छोटी पार्टियों ने अपनी ओर से, नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी होने का एलान कर दिया है। यह देखना दिलचस्प होगा कि भाजपा, कब तक इस दबाव का मुकाबला कर पाएगी और इसके लिए कितनी राजनीतिक कीमत अदा करने के लिए तैयार होगी।

और संघ-भाजपा की बदहवासी की सबसे बड़ी वजह तो यही है कि बिहार का चुनाव उन्हें हाथ से निकलता नजर आ रहा है। सत्ताधारी गठजोड़ का मुकाबला जिस महागठंधन से है, उसका पलड़ा जाति-समीकरणों को छोड़कर, हर पहलू से भारी नजर आ रहा है। और जाति समीकरणों के स्तर पर उसकी कमजोरी की वामपंथ के एकजुट समर्थन और जाति-जनगणना समेत विभिन्न मुद्दों के जरिए पिछड़ों तथा दलितों के जुड़ाव समेत, वंचितों का उसके पक्ष में झुकाव आसानी से भरपाई कर सकता है। इसके ऊपर से बिहार की जागरूक जनता की एक जनतांत्रिक बदलाव की आकांक्षा है, जिसे तेजस्वी यादव का महागठबंधन का नेतृत्व करना, बखूबी प्रतिबिंबित करता है। इस बार संघ-भाजपा वाकई उस जगह पहुंच गए हैं, जहां उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। इसके ऊपर से न तो वोट चोरी के मसले पर बिहार की जनता के अतिरिक्त रूप से जागरूक हो जाने चलते, चुनाव आयोग से बहुत ज्यादा उम्मीद कर सकते हैं और न बदलाव के जनता के स्पष्ट मूड के सामने, लोक स्वराज और एमआइएम जैसी इस महामुकाबले के बीच वोट काटने वाली पार्टियों से, खास मदद की उम्मीद कर सकते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

स्मार्ट क्लासरूम में क्या खोया गया है

● विजय गर्ग

डिजिटल परिवर्तन के युग में, कक्षाएं स्क्रीन, प्रोजेक्टर, टैबलेट और एआई-संचालित उपकरणों से भरी हुई ₹स्मार्ट क्लासरूम₹ बन गई हैं। ये स्थान सीखने को अधिक कुशल, इंटरैक्टिव और आधुनिक बनाने का वादा करते हैं। फिर भी, इस सभी नवाचार के बीच, कुछ सूक्ष्म लेकिन गहरा खो रहा है - शिक्षा का मानवीय स्पर्श।

कक्षा आज जो थी उससे बहुत अलग लगती है। चॉकबोर्ड टचस्क्रीन, नोटबुक टैबलेट और शिक्षकों में डिजिटल सुविधाएं बन गए हैं। सीखना अधिक स्मार्ट, तेज़ और कनेक्ट हो गया है। फिर भी, चमकती स्क्रीन और चुपचाप क्लिक के बीच कहीं एक शांत प्रश्न रहता है - हमारे स्मार्ट कक्षाओं में हमने क्या खो दिया है?

शिक्षा का आधुनिकीकरण करने की धड़कन में, कक्षा की हृदय गति - मानव संबंध - कमजोर हो गई है। एक बार, शिक्षक की आवाज में गर्मी, कहानियां और भावनाएं थीं। प्रोत्साहन की एक झलक संघर्षरत छात्र को उठा सकती है; छोटी सी बातचीत आत्मविश्वास पैदा कर सकती है। अब, सबक स्लाइड और सॉफ्टवेयर के माध्यम से बहते हैं। खिड़की के पीछे हंसी, विराम और आश्चर्य की साझा भावना अक्सर फीका पड़ती है।

प्रौद्योगिकी ने वास्तव में अंतहीन ज्ञान के लिए दरवाजे खोल दिए हैं, लेकिन उसने अदृश्य दीवारें भी बनाई हैं। गैजेट्स से घिरे छात्र पहले की तुलना में अधिक जुड़े हुए हैं - और फिर भी, वे अक्सर अकेले महसूस करते हैं। समूह चर्चा चैट बक्से का स्थान देती है; जिज्ञासा को क्लिक में मापा जाता है; सीखना कुशल लगता है लेकिन हमेशा जीवित नहीं होता।

स्मार्ट कक्षाओं में, सब कुछ सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रोग्राम किया जाता है - सीखने का गड़बड़ और सुंदर हिस्सा जो गलतियों, भावनाओं और मानवीय आदान-प्रदान से आता है। एक शिक्षक ऐसे तरीकों से प्रेरित कर सकता है जो कोई भी AI कभी नहीं करेगा, न कि पूर्णता के माध्यम से, बल्कि उपस्थिति के माध्यम से।

शायद प्रगति केवल इस बात पर नहीं है कि हमारे कक्षाएं कितनी स्मार्ट हो जाती हैं, बल्कि यह भी कि वे कितने मानव बने रहते हैं। शिक्षा कभी भी केवल मन को खिलाने के बारे में नहीं थी; यह हमेशा आत्मा को छूने के बारे में था।

एक स्मार्ट कक्षा निस्संदेह सूचना तक पहुंच को बढ़ा देती है। पाठ दोहराए जा सकते हैं, प्रश्नोत्तरी स्वचालित रूप से ग्रेड की जाती है और आभासी सिमुलेशन अमूर्त विचारों को जीवन में लाता है। हालांकि, शिक्षा केवल डेटा वितरण के बारे में नहीं है; यह शिक्षक और छात्र - जिज्ञासा और खोज के बीच संबंध के बारे में है। जब सीखना बहुत स्वचालित हो जाता है, तो व्यक्तिगत मार्गदर्शन की गर्मी अक्सर फीकी पड़ जाती है।

पहले, एक शिक्षक छात्र के चेहरे पर भ्रम महसूस कर सकता था, रुक सकता था और कहानी या उदाहरण के साथ फिर से समझा सकता था। अब, स्क्रीन न तो घूरती है और न ही हाथ उठाती है; यह बस चलता रहता है। वास्तविक बातचीत की लय - छोटे-छोटे मजाक, साझा मौन, समझ की स्पार्क - अक्सर पूर्व प्रोग्राम इंटरैक्शन से प्रतिस्थापित होती है।

इसके अलावा, छात्र सक्रिय प्रतिभागियों के बजाय निष्क्रिय उपभोक्ता बन सकते हैं। जब प्रौद्योगिकी गति निर्धारित करती है, तो रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच पीछे बैठ सकती है। डिजिटल दक्षता का पीछा करते समय, हम ऐसे शिक्षार्थियों को उत्पन्न करने का जोखिम उठाते हैं जो जल्दी क्लिक कर सकते हैं लेकिन धीरे-धीरे सोच सकते हैं। एक और शांत हानि सामाजिक शिक्षा है। समूह चर्चाएं, हस्तलिखित नोट्स और आमने-सामने की बहस सहानुभूति और टीमवर्क का निर्माण करती हैं - ऐसे गुण जिन्हें कोई एल्गोरिथ्म नकल नहीं कर सकता। स्क्रीन हमें लगभग जोड़ सकती है, लेकिन यह भावनात्मक रूप से भी अलग कर सकती है।

स्मार्ट कक्षाएं एक शक्तिशाली उपकरण हैं, लेकिन उन्हें बस यही रहना चाहिए - एक उपकरण। शिक्षा का दिल अभी भी मानव संबंधों, जिज्ञासा और साझा खोज में धड़कता है। जब हम भविष्य के कक्षाओं को डिजाइन करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम पिक्सेल के लिए सुविधा या उपस्थिति का व्यापार न करें। इसलिए जब हम प्रौद्योगिकी की चमक का जश्न मनाते हैं, तो आइए पुरानी कक्षाओं की नाजुक और अपरिवर्तनीय गर्मी को बचाने के लिए भी रुकें - जहां सीखना न केवल डाउनलोड किया गया था, बल्कि महसूस किया गया था।

क्योंकि हमारी कक्षाओं को अधिक स्मार्ट बनाने में हमें अपनी शिक्षा को कम मानवीय नहीं बनाना चाहिए।

रेलवे प्लेटफॉर्म पर पुस्तकालय: ज्ञान की यात्रा

विजय गर्ग

रेलवे स्टेशनों को लंबे समय से आगमन, प्रस्थान और प्रतीक्षा के स्थान के रूप में देखा गया है। लेकिन हाल के वर्षों में, पूरे भारत में कुछ प्लेटफार्मों पर एक शांत क्रांति हुई है: रेलवे स्टेशनों पर पुस्तकालय बनाने से यात्रा समय को सीखने और चिंतन का क्षण बन गया है।

रेलवे प्लेटफॉर्म लाइब्रेरी के पीछे का विचार सरल लेकिन शक्तिशाली है - लोगों को किताबें करीब लाने के लिए। कई यात्री ट्रेनों की प्रतीक्षा में घंटों बिताते हैं, और ये पुस्तकालय उन्हें उस समय पढ़ने, सीखने और अपने दिमाग को समृद्ध करने का अवसर प्रदान करते हैं। छात्रों और दैनिक यात्रियों से लेकर पर्यटकों तथा रेलवे कर्मचारियों तक सभी लोग मुफ्त या न्यूनतम शुल्क पर पुस्तकों तक पहुंच सकते हैं।

ऐसी पुस्तकालयें अक्सर पढ़ने की सामग्री - उपन्यास, बच्चों की किताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं और यहां तक कि प्रतिस्पर्धी परीक्षा गाइड भी प्रदान करती हैं। कुछ का प्रबंधन रेलवे अधिकारियों द्वारा किया जाता है, जबकि अन्य स्थानीय एनजीओ या पढ़ने के क्लबों द्वारा समर्थित समुदाय-चालित होते हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण पुणे, मैसूरू और सेकंदराबाद जैसे स्थानों पर शुरू की गई ₹लाइब्रेरी ऑन प्लेटफॉर्म₹ पहल है जिसने अन्य शहरों में भी इसी तरह के प्रयास प्रेरित किए हैं।

पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देने के अलावा, ये पुस्तकालय सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं। वे साक्षरता को प्रोत्साहित करते हैं, जीवन के सभी क्षेत्रों से लोगों तक ज्ञान पहुंचाते हैं और मोबाइल स्क्रीन द्वारा हावी युग में पढ़ने की संस्कृति को पुनर्जीवित करने में मदद करते हैं। कई यात्रियों के लिए, पृष्ठों की सौम्य गर्जना डिजिटल विचलितताओं से एक स्वागत योग्य ब्रेक बन जाती है।

रेलवे प्लेटफॉर्म पर पुस्तकालय केवल पुस्तकों की अलमारियों से अधिक है - यह विचारों के लिए एक मंच, सीखने का स्टेशन और एक ऐसी यात्रा है जो कभी समाप्त नहीं होती।

आज, अवधारणा विकसित हुई है, अक्सर सार्वजनिक पुस्तकालयों, छोटी ऋण शाखाओं या यहां तक कि स्टेशन कॉन्कोर्स में सीधे बुक वेंडिंग मशीनों के रूप में भी।

1। सुविधा और पहुंच

रेलवे स्टेशन पुस्तकालय का मुख्य आकर्षण सुविधा है। प्लेटफार्मों के पास या स्टेशन के भीतर स्थितियां व्यस्त यात्री और यात्रियों को सार्वजनिक पुस्तकालय की अलग यात्रा किए बिना जल्दी से लौटने, ब्राउज़ करने और पुस्तक देखने की अनुमति देती हैं। कुछ यूरोपीय उदाहरणों में, पुस्तकालय त्वरित वापसी और चेकआउट के लिए विशिष्ट क्षेत्रों के साथ ₹सुपर-फास्ट लेनदेन₹ के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जो तत्काल यात्री को सीधे पूरा करते हैं। परिवहन केंद्रों से अक्सर जुड़े विस्तारित घंटे पारंपरिक सार्वजनिक पुस्तकालयों की तुलना में भी अधिक हो सकते हैं, जिससे गैर-मानक कार्य कार्यक्रम वाले लोगों के लिए पुस्तकें उपलब्ध होती हैं।

साक्षरता और शिक्षा के लिए एक प्रोत्साहन

रेलवे स्टेशन पुस्तकालयों को अक्सर उन व्यक्तियों के लिए अमूल्य संसाधनों के रूप में उद्धृत किया जाता है जिनके पास अन्यथा पुस्तकों तक आसानी से पहुंच नहीं हो सकती। वे सूचना तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाते हैं। एक प्रेरणादायक उदाहरण स्टार्टअप सीईओ की कहानी है जिसने अपनी प्रारंभिक सफलता और शैक्षिक प्रयासों को भारतीय रेलवे के कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए आंतरिक पुस्तकालय से जोड़ दिया। उनकी मां, जो वहां एक क्लर्क थीं, ने उन्हें हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू जैसी पुस्तकों और पत्रिकाओं तक पहुंच प्रदान की थी जिन्हें उनका परिवार बर्दाश्त नहीं कर सकता था, जिससे यह पता चला कि ऐसी पुस्तकालयें सीमित साधनों वाले व्यक्तियों पर कितनी गहराई से जीवन बदल सकती हैं।

आवागमन अनुभव में सुधार

पुस्तकों और पत्रिकाओं की पेशकश करके, ये पुस्तकालय अन्यथा निष्क्रिय या उबाऊ प्रतीक्षा समय को पढ़ने और मानसिक जुड़ाव के क्षणों में बदल देते हैं। वे अक्सर उपयोगितापूर्ण स्टेशन वातावरण में सांस्कृतिक और बौद्धिक आयाम जोड़ते हैं, जो भीड़ के बीच शांत स्थान को बढ़ावा देते हैं।

सामुदायिक कल्याण

सभी सार्वजनिक पुस्तकालयों की तरह, स्टेशन शाखाएं सामुदायिक एंकर के रूप में कार्य करती हैं। वे एक सुरक्षित, गैर-व्यावसायिक स्थान प्रदान करते हैं जहां सभी लोगों का स्वागत किया जाता है। वे पढ़ने को बढ़ावा देकर यात्रियों और कर्मचारियों की सामाजिक तथा मानसिक भलाई में योगदान देते हैं, जिससे यात्रा और शहरी जीवन के तनाव से राहत मिलती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

अपने जीवंत प्लमज के लिए प्रसिद्ध पक्षी

विजय गर्ग

पक्षी हमारे ग्रह के जीवित गहने हैं, जिन्हें उनके रंगों, पैटर्न और सौंदर्य के लिए प्रशंसा की जाती है। कुछ प्रजातियाँ इतनी आश्चर्यजनक लगती हैं कि वे प्रकृति द्वारा बनाई गई उड़ान कलाकृति की तरह लगभग अवास्तविक लगती हैं। यहां दुनिया भर के आठ खूबसूरत पक्षी हैं अपने खूबसूरत पंखों के लिए जाना जाता है। स्कार्लेट माका मध्य और दक्षिण अमेरिकी वर्षा वनों में मूलतः, स्कारलेट मकाउ अपने उज्ज्वल लाल पंखों के लिए जाना जाता है, जो नीले और पीले पंखों से विपरीत हैं। अत्यधिक बुद्धिमान और सामाजिक, ये बबूते झुंडों में रहते हैं और उनकी चमकदार उपस्थिति तथा जोर-जोर से बोलने के लिए प्रशंसा की जाती है। इंद्रधनुष लोरीकेट रेनबो लॉरिकेट रंग का कैलिडोस्कोप है, जिसमें नीला सिर, हरे पंख और नारंगी स्तन होते हैं। ऑस्ट्रेलिया और आस-पास के द्वीपों में पाए जाने वाले ये ऊर्जावान पक्षी फूलों के बीच फ्लिट करते हुए अक्सर देखे जाते हैं, उनके रंग उष्णकटिबंधीय फूलों से पूरी तरह मिलते रहते हैं। मंदारिन बट मंदारिन डक पूर्वी एशिया से आता है। पुरुष, विशेष रूप से प्रजनन के मौसम में नारंगी ₹सेलर₹ पंखों, बैंगनी और हरे रंग के उच्चारण और एक आकर्षक चेहरे का पैटर्न पहनते हैं। उनकी अनूठी सुंदरता ने उन्हें सांस्कृतिक प्रतीक बना दिया है। किल-बिल ट्यूकन मध्य और दक्षिण अमेरिका में पाया जाने वाला यह उष्णकटिबंधीय पक्षी हरे, नारंगी, लाल और नीले रंगों से चित्रित अपने बड़े आकार के बिल के लिए प्रसिद्ध है। इसके रंगीन डिक और अंधेरे शरीर के बीच का विपरीत इसे अविस्मरणीय बनाता है। इसकी खुशखबरी की आह्वान बारिश के जंगलों में प्रतिध्वनित होती है, जिससे उसकी सुंदरता को जीवन मिलता है। अटलांटिक पफिन ₹समुद्र का क्लोनर₹ के रूप में जाना जाता है, अटलांटिक पुफिन एक समुद्री पक्षी है जिसका पंख काला और सफेद होता है तथा उसका डंक चमकीला रंग का होता है जो प्रजनन मौसम में चमकता है। उत्तरी अटलांटिक में पाया जाता है, यह न केवल अपनी उपस्थिति के लिए बल्कि अपने आकर्षक, सीधा रुख के लिए भी प्रशंसा की जाती है। भारतीय रोलर भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित भारतीय रोलर को इसकी सुंदर टर्किज़ और नीले रंगों के लिए सराहना की जाती है। डेटिंग में वे हवाई स्टंट करते हैं, हवा में घूमते और गोता लगाते हैं, और यह आकाश के सबसे दृश्यमान पक्षियों में से एक है। गोल्डन फासान नर गोल्डन फेसेंट पश्चिमी चीन के जंगलों में रहता है, और वह रंग का एक धमाका होता है, जिसमें सोने का झंडा, लाल शरीर, हरी पीठ और लंबी पैटर्न वाली पूंछ होती है। यह अपनी चमकती पंखों के कारण दुनिया में सबसे अधिक फोटो खिंचवाए जाने वाले पक्षियों में से एक भी है। पेंट बंटिंग यह छोटा सा उत्तरी अमेरिकी गायन पक्षी एक चित्रकार का पैलेट जैसा दिखता है। नीला सिर, लाल छाती और हरे रंग के धब्बे वाले पुरुष बहुत दिलचस्प हैं। ये सभी पक्षी प्रजातियां प्रकृति की सुंदरता और कला का प्रदर्शन करती हैं।

उधार के उद्धरण

विजय गर्ग

शैली एक साधारण पढ़ी-लिखी महिला है। उसके दोस्त, रिश्तेदार सभी जानते हैं कि उसका गंभीर लेखन, या साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा है। लेकिन इन दिनों फेसबुक पर वह जिस तरह की चीजें लिखती थी, लोग अचंभित हो जाते थे। नाते-रिश्तेदारों को फेसबुक पर ज्यादातर प्रतिबंधित रखने वाली शैली के फेसबुक पर छह हजार से ज्यादा मित्र बन चुके थे। कभी सिनेमा, कभी साहित्य तो कभी राजनीति, शैली किसी भी विषय पर रोचक लेख डाल देती थी। धीरे-धीरे फेसबुक की आभासी दुनिया में उसने एक लेखिका के रूप में अपनी पहचान बना ली। लेकिन यह ज्यादा दिन नहीं चला।

फेसबुक पर एक व्यक्ति ने उसके नाम को नत्थी करते हुए उसकी पोस्ट का 'स्क्रीनशाट' डाल कर कहा कि शैली आप मेरे लेख उठा कर अपने नाम से क्यों डालती हैं? यह तो चोरी है। आप जैसा भी लिख सकती हैं, वैसा खुद लिखिए। उस व्यक्ति ने शैली की कई पोस्ट की 'स्क्रीनशाट' डाली, जो किसी और की पोस्ट से चुराई हुई थी। शैली ने इस बात पर माफी मांगने की बजाए कुतर्क करना शुरू कर दिया कि ज्ञान बांटने से बंटता है, मैं तो आपके ज्ञान को विस्तार दे रही हूं। मैंने कब कहा कि ये लेख मैंने लिखा है। शैली के इस रूप को देख कर उन लोगों को धक्का लगा, जो उसे एक संवेदनशील लेखिका समझ बैठे थे। इसके बाद कई लोगों ने शैली पर उनके लेख चोरी करने का आरोप लगाया।

आज सोशल मीडिया पर शैली जैसे बहुत से लोग हैं, जो दूसरे के लेख और उद्धरणों को उठा कर अपनी दीवार पर लगा देते हैं। आभासी मंच पर विद्वता की आभासी छवि से उन्हें सुकून मिलता है। लेकिन यह सब बहुत थोड़े समय का ही मामला रहता है। जल्दी ही लोगों को पता चल जाता है कि आप सामग्रियां कहां से उठा कर अपना बना कर डाल रहे हैं। इसके बाद लोग आपकी पोस्ट देखते ही मूल रचनाकार को नत्थी कर देते हैं। आप पर से लोगों का भरोसा उठ जाता है। सोशल मीडिया पर रचनात्मक भ्रष्टाचार सिर्फ लंबे लेख लिखने तक नहीं है। कोई पर्व-त्योहार आते ही लोग ऐसे संदेश लिखते हैं, जो उनकी मौलिक सोच नहीं होती है। ऐसे भारी-भरकम संदेशों में जो नकलीपन दिखता है, उससे शायद ही कोई खुश हो पाता होगा। दूसरे के लिखे उद्धरण के बजाए अगर आप अपने दोस्त या रिश्तेदार का नाम लिख कर सरल शब्दों में ही शुभकामना दे देंगे तो उन्हें ज्यादा अपनापन महसूस होगा। पर्व-त्योहारों पर हम भारी भरकम चित्र और वीडियो के साथ जो संदेश भेजते हैं, बहुत से लोग उसे खोलना भी पसंद नहीं करते हैं। ऐसे संदेश फोन की बहुत सी जगह को घेर लेते हैं। अगर, आपने अपने शब्दों में कुछ भेजा है तो उसे पढ़ने और स्वीकारने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती है। शाब्दिक सरल संदेशों पर प्रतिक्रिया देना भी आसान होता है। भारी-भरकम संदेशों को जब कोई खोलेगा ही नहीं तो प्रतिक्रिया भी कैसे देगा। इसलिए उधार के उद्धरणों से बच कर अपना कुछ सहज और

पहली पाठशाला

विजय गर्ग

देश, समाज, परिवार - यह सब हमारे जीवन की आधारशिला हैं। हम पैदा होने के बाद पलने - बढ़ने से लेकर बड़े होने और अपना जीवन जीने तक जो भी हासिल करते हैं, जो भी हमें समाज और परिवार से मिलता है, वह सब आखिरकार हमारे व्यक्तित्व को गढ़ता है। सवाल है कि इन सबके बीच कौन ऐसा चेहरा होता है, जो हमारे जीवन के हर पल को सुख और सुकून से भर देने के लिए न केवल दुनिया के सामने खड़ा हो जाता है, बल्कि अपना भी सब कुछ त्याग देने को तैयार हो जाता है। हम चारों ओर अपनी नजर घुमाएं। क्या हमें अपनी मां के सामने कोई और दिखाई देता है? दरअसल, मां एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही हमारा हृदय करुणा और प्रेम के साक्षात दर्शन करता । मगर मां सिर्फ संबोधन नहीं है, बल्कि एक संपूर्ण संसार है। हमारे जीवन की आधारशिला है। गर्भ काल लेकर हमें जन्म देने तक से बहुत आगे । जब तक मां का जीवन है, मां अपने बच्चे के लिए एक सुरक्षित आंचल प्रदान करती है। मां और बच्चे का रिश्ता ही संसार में सबसे निश्छल

और ममता से भरा होता है। वह न केवल बच्चे का पालन-पोषण करती है, बल्कि वह बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है । यों तो प्रत्येक मां अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा, नैतिकता और सुविचारों से पोषित करना चाहती है, लेकिन जमाने के साथ विचारों में भी परिवर्तन आया है। ऐसे में मां का मूल तो वही है, लेकिन पालन-पोषण के तरीके में अंतर पड़ गया है।

आज इंटरनेट, मोबाइल जैसे तकनीक युग और व्यस्ततम जीवनशैली होने के कारण कामकाजी मां अपने बच्चों को उतना समय नहीं दे पाती, जितना कि वह देना चाहती है या फिर उसे देना चाहिए। यह एक मजबूरी हो सकती है, लेकिन यह मजबूरी बच्चों को नैतिकतापूर्ण आचरण, अनुशासित जीवन

और अध्ययन के लिए प्रेरित करने से कहीं भी आड़े नहीं सकती। अगर मां अपनी इच्छाशक्ति से ऐसा करने की ठान ले।

आधुनिक समय के इस उथल-पुथल से भरे दौर में मां को न केवल अपने-आप को जमाने की कदम ताल से कदम मिलाकर चलना होगा, बल्कि खुद को भी परिपक्व बनाना होगा, ताकि वह बच्चों को ठीक ढंग से आगे बढ़ा सके। इसके अलावा, बच्चों की आवश्यकता, मनोविज्ञान से भी परिवार को और उसके आसपास के सभी लोगों को परिचित होना होगा। बच्चों पर अनुशासन और नैतिकता के मापदंडों को थोपने की जगह उन्हें धीरे-धीरे अपनी और अन्य लोगों की जीवनशैली के द्वारा प्रेरित करना होगा। अगर बच्चा गलत रास्ते पर भी जा रहा हो, तो मां उसे सही राह दिखा सकती है। कभी प्रेम से, तो कभी डांटकर, कभी समझाइश, तो कभी रूठकर। एक मां ही भावनात्मक स्तर तक पहुंच कर बच्चे का मार्गदर्शन कर सकती है। मां के शरीर से अलग होकर भी बच्चा मां से जुड़ा ही रहता है। संकट में वह मां के आंचल को सबसे ज्यादा सुरक्षित और विश्वसनीय मानता है। इधर मां के जीवन का प्रकाश बच्चा ही होता है। वह उस पर अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहती है। बच्चे के जीवन की थोड़ी-सी भी कठिनाई मां को बहुत बड़ी लगती है । बच्चे के जीवन को सहारा देना एक अलग बात है, लेकिन उस सहारे के नाम पर कभी भी उसे स्वावलंबी बनने से नहीं रोकना चाहिए । स्वावलंबन ही जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है। अगर मां यह सीढ़ी खुद बनना चाहेगी और प्रेम वश उसे कुछ भी नहीं करने देगी तो बच्चा जीवन में कुछ भी नहीं सीख पाएगा। बच्चे को स्वावलंबी बनाना आमतौर पर सभी मां के जीवन का परम उद्देश्य होता है । जिस प्रकार बालपन में मां बच्चे का ध्यान रखती है, उसी प्रकार बच्चों को भी अपनी वृद्ध मां की देख-रेख खुले हृदय से करनी चाहिए। बच्चे मां द्वारा उनके प्रति किए गए कार्यों का कर्तव्य समझकर भूल जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि मां ने रातों को जागकर अपने जीवन की प्रत्येक सफलता, जो उसे मिल सकती थी, उसका त्यागकर उन्हें जीवन दिया है, उनके रास्ते के कांटों को हटाया है। ऐसे में सभी बच्चों की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे अपनी मां का पूरा खयाल रखे, जिस मां ने उन्हें चलना सिखाया, उसके बुढ़ापे की लाठी बने ।

यों मां का कर्ज कोई चुका नहीं सकता। वह अमूल्य है । मगर अपनी कोशिश के जरिए हमें अपने व्यवहार से मां के प्रति श्रद्धा प्रकट करनी चाहिए। समाज में जो मां का उच्च स्थान है, इसका कारण भी यही है कि मां ही ज्ञान, शिक्षा, पोषण और परिवार की धुरी है। मां अपने बच्चे का उचित लालन पालन कर उसे समाज का एक जिम्मेदार सदस्य बनाती है, जो आगे चलकर इसी समाज की उन्नति का रास्ता खोजता है। एक-एक व्यक्ति के योगदान से समाज उन्नत होता है और अगर कोई समाज इतना उन्नत हो जाए तो ऐसे ही समाज वाला राष्ट्र अपना चहुंमुखी विकास करता है। हमें बुनियादी तौर पर मनुष्य बनाने में हमारी माताओं का ही योगदान रहा है । मनुष्य रूप में जन्म लेना मनुष्य होना नहीं है बल्कि हमें मनुष्य होने के नाते कई गुणों को अपने व्यक्तित्व के अंदर समाहित करना पड़ता है। ऐसे में मां ही हमें अपने विचारों, संस्कारों और अनुशासन की सीख देकर मनुष्य बनाती है। मां सिर्फ संबोधन नहीं है, वह हमारी आधारशिला है, जीवन की पहली पाठशाला है और उसी की वजह से हमारा अस्तित्व है ।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जेईई मेन्स-2026 के लिए प्रभावी और स्मार्ट तैयारी युक्तियाँ

विजय गर्ग

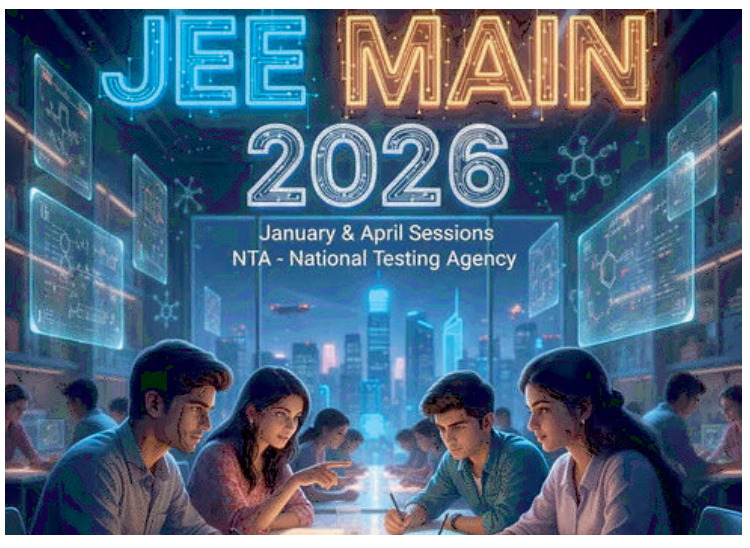

संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) मेन्स, राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर की इंजीनियरिंग परीक्षा में निरंतरता, धैर्य और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। प्रतियोगिता के कारण परीक्षा को ज्ञान और स्मार्ट तैयारी की आवश्यकता होती है। आइए 21 जनवरी, 2025 से 30 जनवरी तक जेईई मेन्स के लिए तैयारी कैसे करें।

परीक्षा पैटर्न और पाठ्यक्रम की पूरी समझ रखें पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न के सही ज्ञान से शुरुआत करें। पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित करें भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित तथा उन विषयों पर विशेष ध्यान दें जिनके वजन अधिक है।

सूत्रों के बजाय अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करें

जेईई प्रश्न सीखने से नहीं बल्कि समझ से हल होते हैं। रसायन विज्ञान के लिए एनसीईआरटी पढ़ें और प्रत्येक विषय पर मजबूत पकड़ पाने के लिए उन्नत स्तर की पुस्तकों से अभ्यास करें।

साप्ताहिक छोटे लक्ष्य निर्धारित करें

दीर्घकालिक योजना के बजाय, प्रत्येक सप्ताह के लिए सूक्ष्म लक्ष्य बनाएं। जैसे भौतिकी में थर्मोडायनामिक्स पूरा करना, गणित में 50 एकीकरण प्रश्न हल करना या रसायन विज्ञान में आवधिक तालिका को संशोधित करना।

अपनी त्रुटि पुस्तक तैयार करें और समीक्षा करें प्रत्येक परीक्षण के बाद, अपनी गलतियों को नोट करें। समय-समय पर गलतियों को देखकर एक ही गलती की संभावना कम हो जाती है।

नियोजित तरीके से संशोधन परीक्षा को तीन चरणों में विभाजित करें: समय-सीमित प्रश्नोत्तरी के साथ एक परीक्षा जैसी स्थिति बनाकर त्वरित पुनरावलोकन, गहन संशोधन और परीक्षण समीक्षा। इस अनुक्रम में अध्ययन करने से आत्म-विश्वास और विषय की समझ दोनों मजबूत होती है। जेईई में, सटीकता गति की तरह ही महत्वपूर्ण है। समय-सीमित अभ्यास करें और उन प्रश्नों पर विशेष ध्यान दें जिन्हें हल करने

जब जेब संभलती है, तो ज़िंदगी संवरती है : [बचत: आज की समझ, कल की आज़ादी]

सूरज की पहली किरण जब खिड़की से झाँकती है, तो दिल में सिर्फ़ उमंग होती है—कोई कर्ज़ का काँटा नहीं चुभता, कोई कल की चिंता नहीं घेरती, कोई अचानक आफ़त नहीं डराती। यह चमत्कार कोई जादू नहीं, बस एक साधारण सी दीवानगी है— बचत। विश्व बचत दिवस, हर साल 31 अक्टूबर को मनाया जाता है—भारत में 30 अक्टूबर को, 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के शोक से अलग रखने हेतु—हमें यही हुंकार भरता है— हर छोड़ा हुआ सिक्का, हर रोका हुआ ख़र्च, हर चुकाया हुआ क़िस्त हमें उस आज़ाद सुबह का हक़दार बनाता है। यह दिन सिर्फ़ खाते की लाइनें नहीं बढ़ाता; यह ज़िंदगी का नक्शा बदलता है—आत्मविश्वास की ऊँचाई देता है, सुरक्षा का कवच पहनाता है, और हर सपने को हक़ीक़त की ज़मीन पर उतारता है।

बचत की कहानी मानव सभ्यता जितनी ही पुरानी और अनंत है। प्राचीन काल में लोग अनाज, कपड़े या कीमती पत्थर संचय करते थे, ताकि सूखे की मार, युद्ध की विभीषिका या प्राकृतिक आपदा के समय उनका उपयोग हो सके। आज डिजिटल दौर में बैंक ऐप्स और निवेश प्लेटफॉर्म्स ने रूप बदल दिया, मगर बचत का मूल मंत्र अटल है— सुरक्षा की मजबूत नींव, स्थिरता की गारंटी और आर्थिक स्वतंत्रता की कुंजी। 1924 में इटली के मिलान में विश्व बचत बैंक संस्थान ने विश्व बचत दिवस की नींव रखी, ताकि हर आम इंसान में वित्तीय साक्षरता की ज्योत जले। तब से यह दिन वैश्विक प्रेरणा का प्रतीक बन चुका है, जो चेतावनी देता है—मेहनत की कमाई को समझदारी से संभालो, यही सच्ची आजादी का राजमार्ग है।

आज के दौर में बचत का महत्व पहले कभी इतना गहरा और अनिवार्य नहीं रहा। आसमान छूती महंगाई, नौकरियों की अनिश्चितता, और अचानक आते संकट—चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो या प्राकृतिक आपदा—हर पल चीख-चीखकर चेताते हैं—वित्तीय सुरक्षा के बिना जीवन एक जुआ है। मगर हकीकत कड़वी है—भारत में ज्यादातर लोग बचत को हल्के में लेते हैं। जड़ है वित्तीय शिक्षा की भयंकर कमी और उपभोक्तावाद की अंधी दौड़। हम तुरंत के लालच में डूब जाते हैं—नया स्मार्टफोन, ब्रांडेड फैशन, लग्जरी ट्रिप्स—और भूल जाते हैं कि ये 'छोटे' खर्चे हमारे भविष्य को खोखला कर रहे हैं, एक-एक करके।

बचत सिर्फ पैसे जोड़ना नहीं है; यह एक अच्छी सोच है। यह हमें अनुशासन सिखाती है, धैर्य देती है और सबसे ज्यादा आत्मविश्वास बढ़ाती है। जब हम खर्च कम करते हैं और नियमित बचत करते हैं, तो अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करते हैं। साथ ही परिवार और समाज के लिए जिम्मेदारी निभाते हैं। बचत करने वाला व्यक्ति अपनी जरूरतों के लिए तैयार रहता है। वह मुश्किल समय में अपनों की मदद भी कर सकता है। यह आदत हमें आर्थिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाती है।

आजकल बचत के तरीके पूरी तरह बदल गए हैं—यह एक बड़ा बदलाव है। पहले लोग अपनी गाढ़ी कमाई को लोहे की तिजोरी या मिट्टी की गुल्लक में छिपाकर रखते थे, लेकिन आज डिजिटल बैंकिंग, म्यूचुअल फंड, एसआईपी और शेयर बाजार जैसे आसान विकल्प हैं। ये पैसे को सुरक्षित रखते हैं और बढ़ाते भी हैं। यह फायदा तभी मिलेगा, जब हम इन्हें अच्छे से समझें और सही ढंग से इस्तेमाल करें। विश्व बचत दिवस हमें यही सिखाता है—पैसे की समझ बढ़ाओ, स्मार्ट तरीके से बचत करो, और एक सुरक्षित, अच्छा भविष्य बनाओ।

बचत का एक गहरा, अनकहा असर है—इसका सामाजिक प्रभाव। जब हम बचत करते हैं, तो सिर्फ अपना भविष्य नहीं संवारते, बल्कि समाज पर बोझ बनने से बचते हैं। एक आत्मनिर्भर इंसान न सरकारी मदद मांगता है, न दूसरों की बैसाखी का मोहताज होता है। और सबसे बड़ी जिम्मेदारी, बच्चों में बचत की जड़ें गहरी करें। छोटी उम्र से ही गुल्लक में सिक्के डालना, बजट बनाना, निवेश का जादू समझाना—यही उन्हें वित्तीय रूप से मजबूत, जिम्मेदार नागरिक बनाएगा। ये छोटे कदम एक मजबूत, जागरूक और समृद्ध समाज की नींव डालते हैं!

मगर बचत की राह कांटों भरी है। आज की उपभोक्तावादी संस्कृति, सोशल मीडिया का चकाचौंध दबाव, और आसान लोन की लुभावनी जाल—ये सब हमें खर्च करने की आग में झोंक देते हैं। युवा पीढ़ी, जो ऑनलाइन शॉपिंग और तुरंत सुख की लत में डूबी है, भूल जाती है कि हर फिजूलखर्ची उनके भविष्य से चोरी है! विश्व बचत दिवस हमें झकझोरकर पूछता है—क्या हमारी प्राथमिकताएं सही हैं? उस नए गैजेट की चमक जरूरी है, या बच्चों की पढ़ाई और अपने रिटायरमेंट की सुरक्षा? यह दिन हमें अपनी खर्च की आदतों पर तीखा सवाल उठाने, वित्तीय लक्ष्यों को नया जुनून देने का सुनहरा मौका है—अब जागो, बदलो, बचाओ।

बचत का एक क्रांतिकारी, अनदेखा आयाम है—इसका पर्यावरणीय प्रभाव। जब हम फिजूलखर्ची पर ब्रेक लगाते हैं, तो अप्रत्यक्ष रूप से धरती मां के संसाधनों की रक्षा करते हैं। कम खरीदारी से कम उत्पादन, कम कचरा और कम प्रदूषण। इस तरह, बचत न सिर्फ आपकी जेब की ढाल है, बल्कि ग्रह की संजीवनी भी। विश्व बचत दिवस हमें यह सिखाता है कि पैसा, समय या प्राकृतिक संपदा—हर संसाधन को समझदारी से इस्तेमाल करो, और एक हरा-भरा, टिकाऊ भविष्य रचो।

विश्व बचत दिवस केवल एक तारीख नहीं है; यह एक आंदोलन है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारी छोटी-छोटी कोशिशें बड़े बदलाव ला सकती हैं। चाहे वह हर महीने 100-200 रुपये बचाना हो या अपने खर्चों को नियंत्रित करना हो, हर कदम मायने रखता है। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम अपने सपनों को हकीकत में बदलें—चाहे वह अपने बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा हो, एक सुरक्षित रिटायरमेंट हो, या समाज के लिए कुछ बेहतर करने का लक्ष्य हो। इस विश्व बचत दिवस पर संकल्प लें कि हम बचत को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाएंगे। एक ऐसा भविष्य बनाएं, जहां न केवल हम, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी आत्मनिर्भर और सशक्त हों। क्योंकि बचत सिर्फ पैसे की बात नहीं है—यह हमारी आजादी, हमारी ताकत, और हमारी जिम्मेदारी की बात है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत जैन", बड़वानी (मप्र)

ग्रेटर बांग्लादेश भारत के खिलाफ बड़ी साजिश है

राजेश कुमार पासी

जब से बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार का तख्ता पलट करके मोहम्मद यूनुस बांग्लादेश के सर्वेसर्वा बने हैं, तब से बांग्लादेश भारत के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रहा है। शेख हसीना की सरकार को हटाने का श्रेय छात्रों को दिया जा रहा था लेकिन बांग्लादेश जिस तरफ जा रहा है, उससे लगता है कि तख्ता पलट छात्रों की आड़ में कट्टरवादी तत्वों द्वारा किया गया है। मोहम्मद यूनुस एक नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अर्थशास्त्री हैं लेकिन उनकी हरकतें बता रही हैं कि उनके मासूम चेहरे के पीछे एक बेहद खतरनाक कट्टरपंथी छुपा हुआ है। जब से बांग्लादेश में मोहम्मद युनुस की सरकार आई है, तब से कट्टरपंथी समूहों द्वारा ग्रेटर बांग्लादेश बनाने की बात कही जा रही है और इसमें सरकार का समर्थन दिखाई दे रहा है । बांग्लादेश को एक कट्टर इस्लामिक देश सल्तनत-ए-बांग्ला बनाने की मांग की जा रही है ।

पाकिस्तान मानता है कि भारत ने उसके देश के दो टुकड़े किये हैं इसलिए वो बदले की आग में जल रहा है। अपना बदला लेने के लिए पाकिस्तान कोई भी कीमत चुकाने को तत्पर दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान बदला लेने के चक्कर में अपने देश को ही बर्बादी की ओर ले जा रहा है । वो अच्छी से देख रहा है कि भारत से बदला लेने के चक्कर में खुद भी बर्बाद हो रहा है लेकिन वो पीछे हटने को तैयार नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना की जबरदस्त मार के बावजूद पाकिस्तान आतंकवादियों को भारत पर नए हमले के लिए तैयार कर रहा है । वो जानता है कि भारतीय सेना इस बार पहले से भी बड़ा हमला कर सकती है । भारत सरकार ने भी पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि ऑपरेशन सिंदूर जारी है. अगर भारत पर बड़ा आतंकवादी हमला होता है तो पाकिस्तान की इसकी बड़ी कीमत चुकानी होगी । पाकिस्तान इसके बावजूद दूसरे हमले की तैयारी कर रहा है । पाकिस्तान को अब भारत के खिलाफ साजिश करने के लिए बांग्लादेश का भी साथ मिल गया है । मोहम्मद यूनुस पाकिस्तान से नजदीकी संबंध बना रहा है ताकि भारत के खिलाफ वो पाकिस्तान के साथ मिलकर नए षड्यंत्र बना सके ।

इतिहास से सीख मिलती है कि देश की सुरक्षा हमेशा सर्वोपरि होनी चाहिए और हर उस खतरे पर नजर रखनी चाहिए जो हमारे लिए घातक साबित हो सकता है। बांग्लादेश बेशक एक छोटा देश हो लेकिन उसको हरकतों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता । इतिहास गवाह है कि कई बार छोटी समस्याएं भी बड़ा असर डालती हैं । बांग्लादेश भी दूसरा पाकिस्तान बनने जा रहा है जो हर कीमत पर भारत को बर्बाद करना चाहता है। जैसे पाकिस्तान भारत को बर्बाद करने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार है, वैसा ही बांग्लादेश करने की कोशिश करता नजर आ रहा है। सोशल मीडिया में बांग्लादेश की हरकतों का मजाक बनाया जा रहा है कि वो इतना कमजोर होने के बावजूद भारत को धमकियां दे रहा है । ये विचार का विषय है कि बांग्लादेश इतनी छोटी शक्ति होते हुए भी भारत जैसे देश को धमकी देने पर उतर आया है ।

1971 के बाद से बांग्लादेश का पाकिस्तान के साथ संबंध टूटा हुआ रहा है क्योंकि बांग्लादेश पाकिस्तानी सेना के अत्याचार को भूल नहीं पाया है । जब से मोहम्मद यूनुस सत्ता में आया है, वो पाकिस्तान से संबंधों को बढ़ा रहा है । पहली बार पाकिस्तान के वरिष्ठ सैन्य अधिकारी जनरल साहिर शमशाद मिर्जा बांग्लादेश की यात्रा कर रहे हैं । उनकी यात्रा के दौरान मोहम्मद यूनुस ने एक विवादित किताब 'आर्ट ऑफ ट्रायम्फ' भेंट की है । इस किताब के कवर पर ग्रेटर बांग्लादेश का नक्शा बनाया गया है जिसमें भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के साथ-साथ बंगाल, उड़ीसा, बिहार और झारखंड के हिस्से भी शामिल किए गए हैं । ऐसा बांग्लादेश की सरकार ने पहली बार नहीं किया है बल्कि कई राष्ट्राध्यक्षों और महत्वपूर्ण विदेशी नेताओं को यह किताब भेंट की गई है । भारत बांग्लादेश की इस हरकत पर कई बार नराजगी दिखा चुका है लेकिन बांग्लादेश पर कोई असर नहीं हो रहा है । भारत सरकार को लगता है कि ग्रेटर बांग्लादेश के विवादास्पद मानचित्र में पूर्वोत्तर भारत को शामिल करने के पीछे कोई बड़ी साजिश हो सकती है । इस साजिश के तार पाकिस्तान, तुर्की और चीन से जुड़े हो सकते है । भारतीय खुफिया एजेंसियों के अनुसार बांग्लादेश भारत के खिलाफ साजिश में शामिल होकर पूर्वोत्तर भारत को एशिया में पड़ोसी देशों का प्रवेश द्वार बनाना चाहता है । इस मानचित्र की आड़ में बांग्लादेश भारत में अलगाववादी भावनाओं को भड़काना चाहता है ।

26/11 के मुंबई हमले के साजिशकर्ता हाफिज सईद का करीबी सहयोगी इब्तिसाम इलाही जहीर इन दिनों बांग्लादेश में बहुत सक्रिय है । वह भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में घूम-घूम कर भड़काऊ भाषण दे रहा है । वो बांग्लादेश में मौजूद कट्टरपंथी समूहों से संपर्क स्थापित कर रहा है। यह उसकी बांग्लादेश में दूसरी यात्रा है, जिससे साबित होता है कि बांग्लादेश पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों से सम्पर्क कर रहा है । उसने अपने भाषण में कहा है कि इस्लाम के लिए खुद को और अपने बच्चों को कुर्बान करने के लिए तैयार रहो । पाकिस्तान से बांग्लादेश तक सभी मुसलमान सेक्युलर ताकतों के खिलाफ एकजुट हो जाएं । कश्मीर के बारे में उसने कहा है कि कश्मीरियों को उनकी आजादी से वंचित किया जा रहा है, पाकिस्तान की जिम्मेदारी है कि वो कश्मीर पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाये । इससे पता चल रहा है कि बांग्लादेश में आतंकवादी संगठनों का जमावड़ा हो रहा है और वो भारत के खिलाफ साजिश कर रहे हैं । बांग्लादेश में कट्टरवादियों की ताकत बढ़ती जा रही है और यूनुस सरकार का इनको सहयोग मिल रहा है । यूनुस सरकार के सत्ता में आने के बाद से बांग्लादेश के हिंदुओं का जबरदस्त उत्पीड़न हो रहा है, उनकी धन-संपत्ति और रोजगार छीने जा रहे हैं । उनकी बहन-बेटियों पर जबरन कब्जा किया जा रहा है और यूनुस सरकार चुपचाप देख रही है ।

अब मोहम्मद यूनुस ने पाकिस्तान के साथ मिलकर बयान दिया है कि भारत में सोशल मीडिया दोनों देशों के खिलाफ नफरत फैला रहा है । उसने कहा है कि दोनों देशों को भारत की इस साजिश के खिलाफ मिलकर लड़ना होगा । उसने हिन्दुओं के उत्पीड़न को दुष्प्रचार बता दिया है । भारत ने बांग्लादेश के कहने पर ही कट्टरपंथी उपदेशक जाकिर नाइक पर प्रतिबंध लगाया था लेकिन अब बांग्लादेश ही उसका स्वागत करने को तैयार है । यूनुस सरकार ने उसे बांग्लादेश में एक महीने की यात्रा करने की मंजूरी दी है । वो अब पूरे बांग्लादेश में एक महीने तक घूम-घूम कर भड़काऊ भाषण देगा और उसका निशाना मुख्य रूप से हिन्दू और भारत ही होंगे । अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान जाकिर नाइक ने पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों के नेताओं के साथ बातचीत की थी । उसकी यात्रा से बांग्लादेश में भारत विरोधी शक्तियों को बड़ी ताकत मिल सकती है ।

भारत की सबसे बड़ी समस्या बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ है जो भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा बन सकती है । बांग्लादेश की हरकतों से लगता है कि बहुत पहले से बांग्लादेश के कट्टरपंथी संगठन भारत को बर्बाद करने के लिए अवैध घुसपैठ को बढ़ावा दे रहे थे । भारत में लगभग पांच करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिए होने का अनुमान है क्योंकि यह घुसपैठ 1971 से जारी है । एक रिपोर्ट में बांग्लादेश की सरकार ने खुद माना था कि 1981 से 1991 के बीच बांग्लादेश से लगभग 80 लाख लोग गायब हो गए हैं । सिर्फ दस साल में 80 लाख लोगों के गायब होने की बात खुद बांग्लादेश की सरकार कबूल कर चुकी है तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि 54 साल में कितने बांग्लादेशी भारत आ चुके हैं । इसके अलावा उनकी आबादी में बढ़ोतरी भी हुई होगी । ये बांग्लादेशी घुसपैठिए समय आने पर ग्रेटर बांग्लादेश बनाने में बांग्लादेश की बड़ी मदद कर सकते हैं । 15 अगस्त को लाल किले से प्रधानमंत्री मोदी ने देश को अपने संबोधन में भारत की बिगड़ती डेमोग्राफी पर चिंता व्यक्त की थी और कहा था कि इस पर नजर रखने के लिए एक एजेंसी बनाई जाएगी । इसका मतलब है कि भारत सरकार भी घुसपैठियों से होने वाले खतरे को समझ रही है ।

समस्या यह है कि भारत का विपक्ष मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण घुसपैठियों के समर्थन में खड़ा रहता है । कई राज्य सरकारें घुसपैठियों के खिलाफ कार्यवाही करने को तैयार नहीं हैं क्योंकि वो इसे मुस्लिमों के खिलाफ कार्यवाही मानती हैं । समस्या यह है कि देश का विपक्ष अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए देश पर आने वाले खतरे को शह दे रहा है । बांग्लादेश की सरकार सीमा पर तारबंदी को भी रोकने की कोशिश कर रही है. इसका मतलब यही है कि अवैध घुसपैठ बांग्लादेश की बड़ी साजिश है जिसको वो वक्त आने पर भारत को तोड़ने के लिए इस्तेमाल कर सकता है । भारत सरकार और भारतीय समाज को बांग्लादेश का मजाक बनाने की जगह उसकी साजिशों को गंभीरता से लेने की जरूरत है ।

सात योजनाएँ, एक लक्ष्य वैश्विक मंच पर भारत का उदय

भारत की आर्थिक महत्त्वाकांक्षाओं का प्रतीक, मेक इन इंडिया, एक बार फिर गतिशील सुर्खियों में है। 27 अक्टूबर को, सरकार ने सात नवीन इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग योजनाओं को मंजूरी दी, जो भारत को वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। यह पहल आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को नई उड़ान दे रही है, जो तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करेगी। 2014 में शुरू हुआ मेक इन इंडिया अब 2025 में नवीन ऊर्जा और संकल्प के साथ उभर रहा है, जो इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में भारत की वैश्विक साख को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक ले जाने का वादा करता है।

इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ बन चुका है। ताजा आँकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 38.57 बिलियन डॉलर तक पहुँचा है, और 2030 तक इसके 200-240 बिलियन डॉलर तक पहुँचने की संभावना है। इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट्स मैन्युफैक्चरिंग स्कीम के तहत, सरकार ने 249 प्रस्तावों में से सात को चुना, जो मोबाइल फोन, सेमीकंडक्टर, और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित हैं। ये योजनाएँ प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम का हिस्सा हैं, जो कंपनियों को उत्पादन बढ़ाने और निर्यात को गति देने के लिए आकर्षक वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। यह कदम न केवल विदेशी निवेश को आकर्षित करेगा, बल्कि स्थानीय विनिर्माण को सशक्त बनाकर भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का अभिन्न अंग बनाएगा।

भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग न केवल आर्थिक प्रगति का पर्याय है, बल्कि यह देश के युवाओं के लिए एक स्वर्णिम भविष्य का द्वार भी खोल रहा है। उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों में विनिर्माण इकाइयों का तेजी से विस्तार लाखों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित कर रहा है, जो एक अभूतपूर्व क्रांति का सूचक है। सरकार का स्किल इंडिया मिशन इस दिशा में एक गेम-चेंजर साबित हो रहा है, जो सेमीकंडक्टर डिज़ाइन, सर्किट निर्माण और क्वालिटी कंट्रोल जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें भविष्य के लिए सशक्त बना रहा है।

वैश्विक मंच पर भारत का यह कदम एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक है। जहाँ चीन आपूर्ति श्रृंखला की जटिलताओं और बढ़ती लागतों से जूझ रहा है, वहीं भारत एक आकर्षक, विश्वसनीय और नवाचार-संचालित विकल्प के रूप में उभर रहा है। हाल ही में, ऐपल ने भारत में अपने आईफोन उत्पादन को 25% तक बढ़ाने की घोषणा की है, जबकि क्वालकॉम और माइक्रोन जैसी दिग्गज कंपनियाँ सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए भारत को प्राथमिकता दे रही हैं। ये पहल न केवल भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का एक अपरिहार्य केंद्र बनाएँगी, बल्कि देश को तकनीकी और आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में मील का पत्थर साबित होंगी।

भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग की यह यात्रा जितनी प्रेरणादायक है, उतनी ही चुनौतियों से भरी भी है। उन्नत बुनियादी ढाँचे, निर्बाध बिजली आपूर्ति और कुशल कार्यबल की आवश्यकता इस क्षेत्र की प्रगति के लिए अपरिहार्य है। हालाँकि भारत ने बुनियादी ढाँचे में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी बिजली कटौती और लॉजिस्टिक्स की बाधाएँ कुछ क्षेत्रों में रुकावट बनकर सामने आती हैं। सेमीकंडक्टर जैसे उच्च तकनीकी क्षेत्रों में विदेशी तकनीक पर निर्भरता एक और बड़ी चुनौती है। इन बाधाओं को पार करने के लिए सरकार ने सेमीकंडक्टर मिशन के तहत 76,000 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी योजनाएँ शुरू की हैं, जो भारत को आत्मनिर्भरता की राह पर ले जाने का दृढ़ संकल्प रखती हैं। यह न केवल एक आर्थिक अवसर है, बल्कि एक ऐसी तकनीकी क्रांति है, जो नवाचार और रोजगार सृजन के माध्यम से भारत को वैश्विक नेतृत्व की ऊँचाइयों तक पहुँचाएगी।

इन योजनाओं का सामाजिक प्रभाव गहन और परिवर्तनकारी है, जो भारत के सामाजिक ताने-बाने को नया रंग और आयाम दे रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में विनिर्माण इकाइयों की स्थापना स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को नई गति और समृद्धि प्रदान कर रही है। उत्तर प्रदेश के नोएडा और ग्रेटर नोएडा जैसे क्षेत्र अब इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के चमकते सितारे बन चुके हैं, जो स्थानीय युवाओं को रोजगार के सुनहरे अवसर प्रदान कर रहे हैं। विशेष रूप से, इन कारखानों ने महिलाओं की भागीदारी को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया है। हाल के एक सर्वेक्षण के अनुसार, इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में कार्यरत 30% कर्मचारी महिलाएँ हैं, जो लैंगिक समानता की दिशा में भारत की प्रगति का एक प्रेरक और शक्तिशाली प्रतीक है। यह पहल न केवल आर्थिक विकास को बल दे रही है, बल्कि सामाजिक समावेशिता और सशक्तिकरण के नए युग की शुरुआत कर रही है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से, इन योजनाओं को लागू करते समय सजगता और जवाबदेही सर्वोपरि है। इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण से उत्पन्न होने वाला ई-वेस्ट एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि भारत वर्तमान में प्रतिवर्ष 3.2 मिलियन टन ई-वेस्ट उत्पन्न कर रहा है, और यह आँकड़ा तेजी से बढ़ने की आशंका है। सरकार ने ई-वेस्ट प्रबंधन नियमों को कड़ा करने का दृढ़ संकल्प दिखाया है, परंतु इस दिशा में और अधिक ठोस और प्रभावी कदमों की आवश्यकता है। नई योजनाओं में हरित प्रौद्योगिकी, रीसाइक्लिंग और टिकाऊ प्रथाओं पर बल देकर पर्यावरणीय संतुलन को सुनिश्चित किया जा सकता है। यह न केवल भारत के हरे भविष्य की नींव रखेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर टिकाऊ विकास का एक प्रेरक मॉडल भी प्रस्तुत करेगा।

मेक इन इंडिया का यह नवीन जोश केवल आर्थिक प्रगति का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक पहचान को अभूतपूर्व आयाम देने वाला एक ऐतिहासिक कदम है। इन सात योजनाओं के माध्यम से, भारत न केवल इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में अपनी स्थिति को अडिग करेगा, बल्कि तकनीकी नवाचार और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में विश्व के लिए एक प्रेरणा बनकर उभरेगा। यदि पारदर्शिता और दृढ़ निष्ठा के साथ इनका कार्यान्वयन किया गया, तो यह कदम भारत को वैश्विक मंच पर एक नई ऊँचाई प्रदान करेगा, जहाँ वह एक तकनीकी और आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित होगा।

आने वाले वर्षों में, ये योजनाएँ भारत की अर्थव्यवस्था, समाज और वैश्विक छवि पर एक स्वर्णिम अध्याय अंकित करेंगी। यह न केवल विनिर्माण को अभूतपूर्व गति देगा, बल्कि भारत के युवाओं को उनके सपनों को साकार करने का एक सशक्त मंच प्रदान करेगा। मेक इन इंडिया अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत के उज्ज्वल और आत्मनिर्भर भविष्य की मजबूत नींव है। यह कदम, निस्संदेह, भारत को वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर करेगा, जहाँ नवाचार, समावेशिता और टिकाऊ विकास मिलकर देश को एक नई दिशा और पहचान देंगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

यह आर्थिक छलांग ही नहीं, राष्ट्रीयता का उद्घोषक भी : वीरेन्द्र सिंह परिहार

वीरेन्द्र सिंह परिहार

पूरे देश में यह चर्चा का विषय है कि इस वर्ष की दीपावली इस मामले में ऐतिहासिक रही कि इस वर्ष उसमें छः लाख करोड़ से ज्यादा का बिजनेस किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 41 प्रतिशत ज्यादा था जबकि वर्तमान में सोने-चाँदी की कीमते आसमान को छू रही हैं। उक्त छः लाख करोड़ के बिजनेस में 5 लाख 40 हजार करोड़ का सामान खरीदा गया और 65 हजार करोड़ की सर्विस दी गई। बड़ी बात यह कि उपरोक्त खरीदी में 87 प्रतिशत खरीदी स्वदेशी की की गई। इससे यह पता चलता है कि देश के नागरिकों में इस अवधि में राष्ट्रीयता की भावना का अभूतपूर्व प्रसार हो रहा है। इस स्वदेशी और राष्ट्रीयता की भावना के चलते ही इस वर्ष की दीपावली चीन को एक लाख करोड़ का झटका दे गई जबकि मोदी राज के पहले ऐसे अवसरों पर चीनी सामानों की खरीद की बहुलता रहती थी।

कारोबार के आकड़ों के हिसाब से ऐतिहासिक सी.ए.आई.टी. के मुताबिक यह उछाल न केवल महानगरों में, बल्कि दूसरे और तीसरे दर्जे के शहरों में भी देखने को मिला। नवरात्रि से लेकर दीवाली तक का लम्बा उत्सव-काल खुदरा बाजार के लिये बूम साबित हुआ। आभूषण, इलेक्ट्रानिक्स वस्तु, गृह सज्जा और खाद्य सामग्री जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उछाल देखने को मिला जो कि मुद्रा स्फीति के दबाव के बावजूद हुआ। वाहन, ज्वेलरी की रिकार्ड बिक्री हुई। धनतेरस के दिन अकेले बीस हजार करोड़ का सोना और 2500 करोड़ की चाँदी का कारोबार हुआ। आटो मोबाइल बाजार में लगभग 125 करोड़ की बिक्री का रिकार्ड कायम हुआ। अकेले भोपाल में 850 करोड़ से ज्यादा का बिजनेस हुआ

लेकिन यह सब अपने आप नहीं हो गया। इसके पीछे निश्चित रूप से मोदी सरकार की नीतियाँ रही हैं। मोदी सरकार ने आयकर योग्य राशि की सीमा 12 लाख रूपये वार्षिक तक कर दी है जो 2014 के पहले तीन लाख तक ही थी। जी.एस.टी. में अभी गत महीनों ही 12 प्रतिशत और 28 प्रतिशत का टैरिफ हटा दिया गया है। चार पहिया वाहनों की खरीदी में 60 से 70 प्रतिशत तक की बचत हो रही है। 95 प्रतिशत उत्पादों में 5 प्रतिशत और शेष में 18 प्रतिशत ही जी.एस.टी. होने से उपभोक्ताओं को दस

प्रतिशत तक का लाभ मिल रहा है। दीपावली के दिन 60 लाख वाहन एक दिन में बिके। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है ।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प और राहुल गांधी भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था को डेड बताए, पर यह भारतीय अर्थव्यवस्था की ही उपलब्धि है कि अमेरिका ने झींगा मछली लेना बन्द किया तो आस्ट्रेलिया ने उसके लिये दरवाजे खोल दिये। वित्तीय वर्ष 2025-26 की प्रथम तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था 7.3 प्रतिशत की दर से बढ़ी है और पूरी उम्मीद है कि आगे और भी रफ्तार पकड़ेगी। भले ही अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प 50 प्रतिशत का टैरिफ भारतीय सामानों पर लगा चुके हों। इस दीवाली के आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वैचारिक एवं सास्कृतिक दृष्टि से भी राष्ट्र के लिये इसके सकारात्मक पहलू देखे जा सकते हैं। वस्तुतः यह ऐसी दीवाली थी, जिसमें भारतीय जड़े तो देखने को मिली हीं, साथ ही उसकी आत्मा भी मुखरित हुई हैं। 'वोकल फार लोकल' और 'स्वदेशी' दीवाली जेसे अभियानों ने न केवल उपभोक्ताओं को प्रेरित किया बल्कि छोटे व्यापारियों और कुटीर उद्योगो में भी नई ऊर्जा का संचार किया। वस्तुतः गांधी के स्वदेशी के सपने को हम मोदी राज में सार्थक होते देख रहे हैं जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस कदम कहा जा सकता है।

कैट के अनुसार इस त्यौहारी सीजन में लगभग 50 लाख अस्थायी रोजगारों का सृजन हुआ जो वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में देश के लिये एक उपलब्धि ही कही जा सकती है। स्वदेशी की दिशा में यह नव जागरण केवल व्यापारिक दृष्टि से ही नहीं, आत्मनिर्भर भारत की आत्मा का प्रतिबिम्बन भी कहा जा सकता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि देश बढ़ता ही जायेगा और एक दिन आत्मनिर्भर भारत की दिशा में देश का बहुत बड़ा अभियान सार्थक हो सकेगा।

लोगो को यह अच्छी तरह पता होगा कि कभी प्रधानमंत्री मोदी ने देश के वरिष्ठ नागरिकों से रेल्वे के टिकटो में मिल रही छूट को लेकर एक अपील की थी कि सक्षम वरिष्ठ नागरिक इस छूट का लाभ न लें, और करोड़ो वरिष्ठ नागरिको ने इस छूट को लेना बन्द कर दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि राष्ट्र का नेतृत्व प्रमाणित और राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत हो तो देश के नागरिकों को कैसे प्ररित कर सकता है! इस वर्ष की दीपावली भी इस बात का प्रमाण है कि यदि राष्ट्र का नेतृत्व राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध और समर्पित हो तो देश के नागरिक उससे प्रेरित होकर कैसे राष्ट्र की काया-कल्प बदलने की दिशा में मार्ग निर्मित कर सकते हैं।

राजगांगपुर नगरपालिका में सफाई कार्यों में भ्रष्टाचार, ठेका कंपनी पर मजदूर शोषण के आरोप : जाँच की माँग डॉ. राजकुमार यादव ने की

कर्मचारियों को वेतन, पीएफ और बीमा राशि में गड़बड़ी — नगरपालिका पर ठेकेदार को संरक्षण देने का आरोप

परिवहन विशेष न्यूज

राजगांगपुर। राजगांगपुर नगरपालिका में सफाई कार्यों से जुड़ी ठेका कंपनी पर गंभीर भ्रष्टाचार और मजदूर शोषण के आरोप सामने आए हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने कहा है कि इस पूरे प्रकरण की उच्च स्तरीय जाँच कर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

डॉ. यादव ने कहा कि यह अत्यंत चिंताजनक है कि नगरपालिका प्रशासन सतर्कता सप्ताह के दौरान भी खुद लापरवाही और भ्रष्टाचार में डूबा नजर आ रहा है।

उनका आरोप है कि जिस ठेका कंपनी को सफाई कार्य का जिम्मा सौंपा गया है, वह सैकड़ों सफाई कर्मियों से पूरा काम लेकर भी उन्हें पूरा वेतन, भविष्य निधि और बीमा राशि नहीं देती।

ठेका राशि और भुगतान में अनियमितता - नगरपालिका ने इस कंपनी को सफाई कार्य हेतु ₹6 करोड़ 21 लाख 8 हजार 292 रुपये का वार्षिक ठेका दिया है।

कंपनी प्रतिदिन लगभग ₹1,66,501 रुपये के हिसाब से बिल बनाती है, जिससे महीने के अनुसार भुगतान ₹49 लाख 95 हजार 30 रुपये से लेकर ₹51 लाख 61 हजार 531 रुपये तक पहुँचता है।

लेकिन, आरोप है कि कंपनी अपने 238 सफाईकर्मियों को केवल 26 दिनों का वेतन (रविवार छोड़कर) ही देती है।

इसके अलावा, मजदूरों के वेतन से भविष्य निधि और बीमा की राशि काटी जाती है, परंतु वह सरकारी खातों में जमा नहीं की जाती।

नियमों की खुलेआम अवहेलना - नियमों के अनुसार, ठेकेदार को प्रत्येक माह मजदूरों का वेतन, PF और बीमा की राशि जमा करने का प्रमाण प्रस्तुत करने के बाद ही बिल पास किया जा सकता है।

इसके बावजूद, नगरपालिका प्रशासन पर आरोप है कि उसने कंपनी को बिना सत्यापन के भुगतान जारी किया, और अब बिना नए टेंडर के ठेका नवीनीकरण की तैयारी भी चल रही है।

डॉ. यादव ने कहा कि यह स्थिति प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि संरक्षण प्राप्त भ्रष्टाचार का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि "यदि शासन और निगरानी एजेंसियाँ निष्पक्षता से जांच करें, तो पूरा घोटाला अपने आप उजागर हो जाएगा।"

कंपनी ने किया आरोपों से इंकार - इस बीच ठेका कंपनी के अधिकारी पद्मनाभ सामल ने सभी आरोपों को निराधार बताया है। उनका कहना है कि कंपनी ने कुल 270 कर्मचारियों को सफाई कार्य में लगाया है और सभी को वेतन, बीमा तथा PF की राशि समय पर दी जाती है।

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा —

> "यह मामला न केवल वित्तीय अनियमितता का है, बल्कि गरीब मजदूरों के हक़ की खुली लूट है। मैं मांग करता हूँ कि नगरपालिका प्रशासन, ठेकेदार कंपनी और संबंधित अधिकारियों की भूमिका की निष्पक्ष जांच हो तथा दोषियों के विरुद्ध सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाए।"

साफ-सफाई की आड़ में हो रहे भ्रष्टाचार और श्रमिक शोषण का यह मामला राजगांगपुर नगरपालिका की साख पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

जनता की अपेक्षा है कि शासन तत्काल हस्तक्षेप कर पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करे।

122वाँ वार्षिक उत्सव एवं गोपाल अष्टमी महोत्सव 30 अक्तूबर मनाया जाएगा

अमृतसर 29 अक्टूबर (साहिल बेरी)

अमृतसर पिंजरापोल गौशाला, घी मंडी की तरफ से 122वाँ वार्षिक उत्सव एवं गोपाल अष्टमी महोत्सव दिनांक 30 अक्तूबर गुरूवार को घी मंडी स्थित गौशाला भवन में बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

इस उपलक्ष्य में प्रातः 11 बजे प्रधान सन्तोष गुप्ता ध्वजारोहण एवं गौपूजन करके समारोह का शुभारम्भ करेंगे। प्रातः 11:30 बजे विश्व शान्ति हेतु हवन यज्ञ होगा। दोपहर 2:30 बजे विधायक डॉ. अजय गुप्ता एवं पंजाब गौसेवा कमीशन के वाईस चेयरमैन मनीष अग्रवाल के कर कमलों से विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों को गौदूध पिलाया जायेगा। बाद दोपहर 3 बजे श्री राम शरणम के अमृतसर प्रमुख तिलक राज वालिया के मुखारविन्द से अमृतवाणी सत्संग होगा। इस अवसर पर मेयर स. जतिन्द्र सिंह भाटिया विशेष अतिथि होंगे ! इस अवसर पर गौशाला की स्मारिका का भी विमोचन होगा, यह समस्त कार्यक्रम विधायक कुंवर विजय प्रताप सिंह के मार्गदर्शन में होगा

इस उपलक्ष्य में गौमाता को भोग लगाने के लिए हरा चारा, तूड़ी, चोकर, गुड़, नमक आदि खाद्य सामग्री गौशाला परिसर में लागत मूल्य पर उपलब्ध करवाई गई है, गौभक्त अपनी श्रद्धा भावना के अनुसार इन्हें लेकर गौमाता को भोग लगा सकते हैं, इस समारोह हेतु सभी तैयारियाँ अपने अन्तिम चरण में पहुंच गई हैं

इस संदर्भ में जानकारी देने के लिए आयोजित प्रैस कॉन्फ्रेंस में गौशाला के प्रधान सन्तोष गुप्ता ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि गौशाला भवन 121 वर्ष पुराना होने के कारण इसका कार्यालय तथा अन्य कई हिस्से क्षतिग्रस्त हो गये थे, जिनका नवनिर्माण कार्य आप सभी गौभक्तों के आर्थिक सहयोग से चल रहा है, उन्होंने भामाशाह गौभक्तों से निवेदन किया कि इस कार्य हेतु तन-मन-धन से अपना सहयोग देकर गौमाता का आशीर्वाद प्राप्त करें

महामंत्री अशोक कपूर ने इस अवसर पर कहा ₹ पहला दूध माँ का, दूसरा दूध गाय का ₹, बच्चों को पौष्टिक आहार के लिए देशी गाय का दूध अवश्य देवें, गाय माता की सेवा करने से और हरा चारा खिलाने से घर से सुख शांति बनी रहती है, अतः गौसेवा करें और पुण्य के भागी बनें।

सरायकेला को छोड़ कोल्हान बंद, मुख्यमंत्री पुतला दहन कार्यक्रम हुआ था

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, चाईबासा में एनएच और बाईपास पर नो एंट्री लागू करने की मांग को लेकर शांतिपूर्ण धरना दे रहे ग्रामीणों पर सोमवार की मध्यरात्रि में पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज और आंसू गैस छोड़ने की घटना के विरोध में आज कोल्हान बंद का आह्वान किया गया था।

इस बंद को आदिवासी संगठनों और भारतीय जनता पार्टी का समर्थन मिला है। बंद का व्यापक असर पश्चिमी सिंहभूम में देखा जा रहा है। बंद के कारण चाईबासा से रांची और जमशेदपुर जाने वाली बसों का परिचालन ठप रहा।

शहर में निजी स्कूलों ने छुट्टी की घोषणा की है, जबकि कई सरकारी संस्थान भी

आंशिक रूप से प्रभावित रहे। मुख्य बाजार, दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद हैं।

नोवामुंडी थाना क्षेत्र के कोटगढ़ बस स्टैंड में आंदोलनकारी ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया है। बस स्टैंड के पास टायर जलाकर उन्होंने प्रदर्शन किया और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की।

जगन्नाथपुर अनुमंडल मुख्यालय में भी कोल्हान बंद का असर दिखा। सुबह से ही चारों दिशाओं से आने-जाने वाले वाहनों का आवागमन ठप रहा। बाजार और दुकानें पूरी तरह बंद रहीं। जैंतगढ़ में झंडा चौक पर भी ग्रामीणों ने टायर जलाकर पुलिस प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया।

इधर सरायकेला के राजनगर मोड़ पेट्रोल पंपों के पास सड़क में टायर जलाये गये परन्तु गाड़ियों का आवाजाही पूर्व की तरह जारी रही, बाजार पुरी तरह से खुले रहे। सनद रहे कि सरायकेला विधायक सह पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कल बंद का जोरदार एलान किया था। जहां उन्हें चाईबासा जाने नहीं दिया, पुलिस ने रोका। उस समय जब वे चाईबासा में पीड़ित लोगों से मिलने जा रहे थे। उन्होंने चालियामा के पास जोरदार विरोध किया था आदिवासियों पर लाठीचार्ज।

ज्योति शंकर सतपथी द्वारा चांडिल में तीन करोड़ रुपये के अवैध बालू जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, सरायकेला खरसावां उपायुक्त नितिश कुमार सिंह के निदेशानुसार बुधवार को जिला खनन विभाग द्वारा औचक निरीक्षण अभियान चलाया गया। यह निरीक्षण एवं कार्रवाई मुख्य रूप से जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सत्पथी एवं खान निरीक्षक समीर ओझा के द्वारा की गई। जहां चांडिल अंचल क्षेत्र में लगभग तीन करोड़ रुपए का अवैध बालू भंडारण जप्त किया गया।

इस दौरान जिला खनन विभाग तथा चांडिल थाना पुलिस बल की संयुक्त टीम ने चांडिल थाना अंतर्गत मौजा – चाकुलिया में अवैध पत्थर उत्खनन के विरुद्ध सघन कार्रवाई की।

निरीक्षण के क्रम में एक जनरेटर, दो इलेक्ट्रिक मोटर, दो हथौड़ा, दो सम्भल, लगभग 25 मीटर विद्युत तार तथा दो वॉटर होस पाइप बरामद किए गए।

उक्त सभी सामग्रियों को विधिवत जब्त कर चांडिल थाना को सुपुर्द किया गया।

इस मामले में अवैध खनन कर्ताओं एवं संबंधित भूमि स्वामी के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की जा रही है।

इसके उपरांत, जिला खनन विभाग एवं ईचागढ़ थाना पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा ईचागढ़ थाना अंतर्गत मौजा – बिरडीह एवं जारगोडीह में अवैध बालू खनिज भंडारण के विरुद्ध कार्रवाई की गई। इस क्रम में क्रमशः लगभग 2,57,000 घनफीट एवं 5,00,000 घनफीट बालू खनिज को विधिवत्जब्त कर ईचागढ़ थाना को सुपुर्द किया गया।

इस संबंध में अग्रेतर विधिक कार्रवाई की प्रक्रिया प्रगति पर है। जब्त किए गए बालू भंडार की नीलामी से राज्यहित में लगभग 2 से 3 करोड़ रुपये तक के राजस्व प्राप्ति की संभावना व्यक्त की गई है।

नेता के बदौलत देश चलता, जहां मिडिया चौथा स्तम्भ : मधुकोड़ा ने कहा डीसी चाईबासा को

आदिवासी लाठीचार्ज मामले पर उपायुक्त से कहा मिडिया के साथ गलत व्यवहार अनुचित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिला मुख्यालय चाईबासा में बुधवार को नो एंट्री व्यवस्था लागू करने की मांग को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा, मानकी मुंडा संघ और अन्य आदिवासी संगठनों के प्रतिनिधि उपायुक्त चंदन कुमार से मिलने पहुंचे। इस दौरान ज्ञापन सौंपने के क्रम में पूर्व मुख्यमंत्री और उपायुक्त के बीच तीखी बहसबाजी हो गई। सूत्रों के अनुसार, ज्ञापन सौंपने के दौरान मीडिया प्रतिनिधियों को लेकर की गई एक टिप्पणी पर मधु कोड़ा नाराज हो गए। उन्होंने कहा कि नेता की बदौलत ही देश आजाद हुआ, महात्मा गांधी आजादी की जंग में आगे नहीं आते, तो क्या देश आज आजाद होता? नेता देश चलाता है और नेता की बदौलत ही अधिकारी कुर्सी पर बैठते हैं। मीडिया देश का चौथा स्तंभ है, उसके साथ गलत व्यवहार उचित नहीं है।पूर्व मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रशासन को जनता की मांगों को संवेदनशीलता से लेना चाहिए। उन्होंने मांग की कि जितने भी लोगों को पुलिस प्रशासन ने गिरफ्तार किया है, उन्हें बिना शर्त रिहा करे, अन्यथा आने वाले दिनों में पूरे झारखंड में आंदोलन और बंदी का आह्वान किया जाएगा।

वहीं, उपायुक्त चंदन कुमार की ओर से इस पूरे घटनाक्रम पर अब तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। ज्ञात हो कि चाईबासा शहर में भारी वाहनों के आवागमन से जाम और दुर्घटनाओं की समस्या लगातार बढ़ रही है। इसे देखते हुए स्थानीय लोग और विभिन्न सामाजिक संगठन नो एंट्री व्यवस्था लागू करने की मांग लंबे समय से कर रहे हैं।

गजपति जिले में भारी बारिश की बजे से दो स्थानों पर बड़े भूस्खलन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

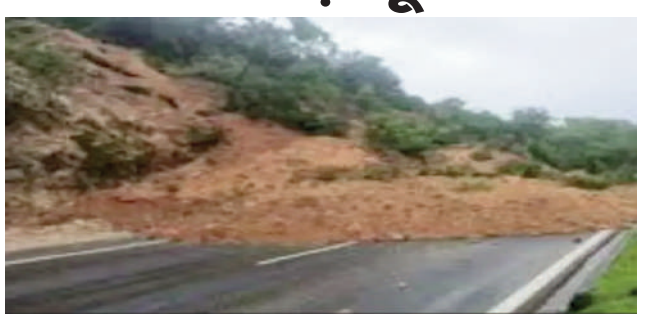

भूबनेश्वर/गजपति : चक्रवात मोन्था के प्रभाव से गजपति जिले में भारी बारिश जारी है। भारी बारिश के कारण जिले के विभिन्न हिस्सों में भूस्खलन की घटनाएँ सामने आ रही हैं। रायगढ़ प्रखंड के अंतर्गत एस. कर्दासिंह पंचायत के बांदा और खिलिंगी क्षेत्रों को जोड़ने वाले मुख्य सड़क जंक्शन पर दो स्थानों पर भारी भूस्खलन हुआ है।घाटी मार्ग के दोनों किनारों का सौ मीटर से ज़्यादा हिस्सा कीचड़ में धंस गया है, जिससे इलाके का संपर्क पूरी तरह टूट गया है। भूस्खलन सुबह करीब सात बजे हुआ और इसी मार्ग पर एक और भूस्खलन होने से सड़क साफ़ करने आए अधिकारी, कर्मचारी और जेसीबी भी काफ़ी देर तक फंसे रहे। बचाव कार्य तेज़ कर दिया गया है।

बताया जा रहा है कि बचाव कार्य में तेज़ी लाने के लिए एक और जेसीबी घटनास्थल पर आ रही है। भूस्खलन की आशंका को देखते हुए करड़ासिंह पंचायत के नियंत्रण कक्ष में जेसीबी और बचाव दल अलर्ट पर हैं। सूचना मिलने के बाद वे तुरंत घटनास्थल पर पहुँचे और सड़क साफ़ करने का काम शुरू कर दिया, लेकिन भारी बर्फबारी के कारण सड़क पर से रुकावटें हटाने में काफ़ी समय लगेगा। पिछले दो दिनों से हो रही भारी बारिश के कारण पहाड़ी की मिट्टी नरम हो गई है और कई और जगहों पर भूस्खलन की आशंका है। इसलिए शेल्टर होम में रह रहे लोगों को घर जाने से मना कर दिया गया है।

सीमा क्षेत्र को मिला तोहफ़ा — बिकराऊर में सरकारी कॉलेज की नींव नवंबर महीने में मुख्यमंत्री भगवंत मान, अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया रखेंगे: कुलदीप सिंह धालीवाल

- बिकराऊर सरकारी कॉलेज खुलने से मान सरकार के कार्यकाल में सरकारी कॉलेजों की संख्या बढ़कर हुई 48 : धालीवाल
- कॉलेज खुलने से सीमावर्ती क्षेत्र के बच्चे कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में रोजगार योग्य बनेंगे : धालीवाल

अमृतसर/अजनाला, (साहिल बेरी)

पंजाब के विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने घोषणा की कि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान और पंजाब मामलों के प्रभारी एवं दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की पहल से सीमावर्ती विधानसभा क्षेत्र अजनाला के लिए एक ऐतिहासिक उपहार की घोषणा की गई है।

दीवाली, बंदी छोड़ दिवस और गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव के पावन अवसर पर सीमावर्ती गाँव बिकराऊर में एक नया सरकारी कॉलेज स्थापित किया जाएगा।

यह कॉलेज 15 एकड़ भूमि पर 15 करोड़ रुपए की लागत से बनाया जाएगा, जो पंजाब में उच्च शिक्षा क्रांति की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम होगा। इस कॉलेज से लगभग 50–55 गाँवों के युवाओं—लड़के और लड़कियाँ—को लाभ मिलेगा, जो अब तक उच्च शिक्षा से वंचित थे। कॉलेज में कंप्यूटर साइंस और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसे आधुनिक कोर्स शुरू किए जाएंगे, जिससे यह युवा आत्मनिर्भर बनकर डिजिटल युग के अनुरूप रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे और डिजिटल इंडिया अभियान से जुड़ेंगे।

श्री धालीवाल ने यह घोषणा पार्टी के अजनाला हलका कार्यालय में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में की, जिसमें सीमावर्ती क्षेत्रों के कई सरपंच बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान और मनीष सिसोदिया आगामी नवंबर माह के अंत में कॉलेज निर्माण परियोजना का शिलान्यास (नींव पत्थर) रखेंगे। कॉलेज में 2026-27 शैक्षणिक सत्र के लिए मई-जून 2026 से दाखिले शुरू हो जाएंगे, जब बारहवीं कक्षा के परिणाम घोषित होंगे।

बिकराऊर में सरकारी कॉलेज खुलने से पंजाब में सरकारी कॉलेजों की संख्या 48 हो जाएगी, और यह सीमावर्ती पट्टी में मान सरकार द्वारा स्थापित पहला सरकारी कॉलेज होगा।

धालीवाल ने कहा कि दीवारों पर लिखा नारा "फैले विद्या चानण होए" (ज्ञान का प्रकाश फैले) वर्षों से तो देखा जाता रहा है, लेकिन पूर्व कांग्रेस और अकाली-भाजपा सरकारों के शासनकाल में यह नारा केवल नारा बनकर रह गया। इन सरकारों ने सीमावर्ती लोगों को जानबूझकर शिक्षा से वंचित रखा, जिससे वे पिछड़ेपन में ही रह गए।

उन्होंने याद दिलाया कि चुनावों से पहले एक जनसभा में उनकी ओर से रखी गई इस कॉलेज की माँग को मनीष सिसोदिया ने स्वीकार किया था और वादा किया था कि पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने पर कॉलेज खोला जाएगा। आज वह वादा श्री धालीवाल के प्रयासों से पूरा हुआ है।

इस अवसर पर श्री धालीवाल ने बिकराऊर गाँव के सरपंच लखा सिंह को 15 एकड़ पंचायती भूमि कॉलेज के लिए सरकार को सौंपने पर सम्मानित किया और ग्राम पंचायत का आभार व्यक्त किया।

इस मौके पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तिः खुशपाल सिंह धालीवाल, एडवोकेट अमनदीप कौर धालीवाल (हलका शिक्षा संयोजक), नगर परिषद अध्यक्ष भट्टी जसपाल सिंह ढिल्लों, शहरी अध्यक्ष एवं चेयरमैन अमित औल, ओएसडी चरणजीत सिंह सिद्धू, कार्यालय सचिव गुरजंत सिंह सोही, चेयरमैन बलदेव सिंह बब्बू चेतनपुरा, तथा अनेक सरपंच और पंच मौजूद थे।

राज्य के 33 ब्लॉक और 11 शहरी क्षेत्र चक्रवात से प्रभावित हुए हैं : मंत्री सुरेश पुजारी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: चक्रवाती तूफ़ान मोन्था ने राज्य के 33 ब्लॉक और 11 शहरी इलाकों को प्रभावित किया है। ज़िला कलेक्टर कल से नुकसान की रिपोर्ट एकत्र करेंगे। अधिकारी फसलों को हुए नुकसान के आँकड़े एकत्र करेंगे। ज़िला प्रशासन 72 घंटों के भीतर सटीक आकलन कर रिपोर्ट देगा। राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने इस संबंध में जानकारी दी है।अगर घर नष्ट होता है, तो सर्वेक्षण किया जाएगा और तुरंत मुआवज़ा दिया जाएगा। आकलन के दौरान अधिकारी बैंक खाता और खाता संख्या पूछेंगे। इसके बाद, मंत्री ने कहा कि मुआवज़ा तुरंत ऑनलाइन भुगतान किया जाएगा।

सुरेश पुजारी ने कहा कि राज्य सरकार ने संभावित स्थिति को देखते हुए अग्रिम तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। सभी विभागों ने अग्रिम तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। भूस्खलन से कोई भी प्रभावित न हो, इसके लिए व्यवस्था की गई है। 19,000 से ज़्यादा लोगों को आश्रय स्थलों में पहुँचाया गया है। 2,000 से ज़्यादा गर्भवती महिलाओं को भी स्वास्थ्य केंद्रों में पहुँचाया गया है। मंत्री सुरेश पुजारी ने बताया कि सड़क पर लगे अवरोध को बहुत कम समय में हटा दिया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023